कबूतरों की उड़ान



रस्किन बांड

कबूतरों की उड़ान

मूल लेखक

रस्किन बांड

हिंदी अनुवाद

सौमित्र मोहन

साहित्य अकादेमी

Kabootaron Ki Udaan: Hindi translation by Saumitra Mohan of Ruskin Bond's novel *A Flight of Pigeons* in English. Sahitya Akademi, New Delhi (2012) ₹ 30

प्रथम संस्करण: 1996

पुनर्मुद्रण: 2007, 2008, 2009, 2010, 2011 एवं 2012

साहित्य अकादेमी

मुख्य कार्यालय : रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014

सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001

4 डी. एल. खान मार्ग, कोलकाता 700 025

चेन्नई कार्यालय

मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

ISBN: 81-7201-806-1

मूल्य: तीस रुपये

Website: http://www.sahitya-akademi.gov.in
E-mail: sahityaakademisale@yahoo.com

मुद्रक: सीता फ़ाईन आर्ट (प्रा.) लिमिटेड़, दिल्ली।

अनुक्रम

''किसी भी रहम दिल आदमी की यह ख़ूबी होती है कि उसमें भले ही लाख कमियाँ हों, पर वह ख़ुदा का दोस्त होता है।''

बाग़-ओ-बहार : अमीर खुसरो

1

शुरुआत

तपती और चिलचिलाती गर्मी की अभी शुरूआत ही हुई थी कि 10 मई को मेरठ में विद्रोह भड़क उठा। सिपाहियों ने अंग्रेज़ अफ़सरों को गोली से मार डाला था; शहर में दंगे तथा लूटपाट मची थी; जेल तोड़ दी गयी थी और हथियारबन्द क़ैदी शहर तथा छावनी में रहने वाले अंग्रेज़ परिवारों पर टूट पड़े थे; उन्होंने घरों में आग लगा दी थी तथा उनमें रहनेवाले लोगों को मार डाला था। गदर में शामिल कई रेज़ीमेंट्स अपने लक्ष्य दिल्ली की ओर बढ़ चली थीं, जहाँ शांतिप्रिय और काव्यप्रेमी बादशाह बहादुरशाह ज़फर अचानक इस विद्रोह के सरगना मान लिए गये थे।

ब्रितानी सेना शिमला में आराम फ़रमा रही थी। ख़बर मिलते ही सेना ने दिल्ली की तरफ़ कूच किया। तब तक कई शहरों में दंगे भड़क चुके थे। 30 मई को, दिल्ली से क़रीब 250 मील दूर, पूर्व दिशा में स्थित शाहजहाँपुर के मजिस्ट्रेट आफ़िस में हलचल मची थी।

रैडमेन नामक एक एंग्लो-इंडियन परिवार छावनी में रहता था। उनके बँगले में रात किसी ने आग लगा दी थी। रैडमेन परिवार के सदस्य तो बच निकले लेकिन उनका ज़्यादातर माल-असबाब या तो लूट लिया गया या फिर आग में राख हो गया था। उस रात एक जानी-पहचानी सूरत को उस जगह मँडराते देखा गया था; जावेद ख़ान नामक एक रोहिला पठान को आगज़नी के संदेह में गिरफ़्तार कर लिया गया था और फिर उसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया था।

शाहजहाँपुर के बाज़ारों में जावेद ख़ान एक खूब जाना-पहचाना नाम था। कोई भी ख़तरनाक काम करने के लिए वह हमेशा तैयार रहता था बशर्ते इसके लिए उसे कोई अच्छी रक़म देने को तैयार हो। इससे पहले भी वह कई तरह के जुर्मों के लिए गिरफ़्तार किया जा चुका था। उसे अंग्रेज़ों के क़ानून का अच्छा ज्ञान था, इसलिए उसने अपने ख़िलाफ़ कचहरी में गवाह पेश करने के लिए कहा।

आग से जलते हुए बँगले के पास वही दौड़ रहा था, इस बात की गवाही देने एक भी आदमी आगे नहीं आया। जब तक और सबूत जुटा नहीं लिए जाते, तब तक के लिए यह मुक़दमा मुल्तवी कर दिया गया था। जावेद जब कचहरी से बाहर आया तो यह बताना मुश्किल हो रहा था कि पुलिस वाले उसकी हिफ़ाज़त के लिए साथ-साथ चल रहे थे या वह उनकी हिफ़ाज़त के लिए साथ चल रहा था। कमरे से बाहर आते समय उसने मजिस्ट्रेट मिस्टर रिकैट्स के सामने बड़ी हेठी से अपनी गर्दन झुका दी और कहा : ''मेरे गवाह कल पेश हो जायेंगे, आपके गवाह आयें या न आयें।''

रैडमेन के बँगले की आग के बावजूद शाहजहाँपुर के दूसरे अंग्रेज़ परिवारों में आतंक नहीं फैला था। मेरठ वहाँ से काफ़ी दूर था और स्थानीय समाचारपत्र *मोफस्सइलाइट* में दंगों के बारे में कोई ख़ास ख़बरें छपती नहीं थीं। सेना के अफ़सर पहले की ही तरह ग़श्त लगा रहे थे और उन्हें कहीं भी कुछ गड़बड़ी दिखायी नहीं दी थी। आम नागरिक भी रोज़मर्रा की तरह दफ़्तरों में आ-जा रहे थे। हमेशा की तरह शाम को वे खाने-पीने और नाचने के लिए जमा होते थे।

30 मई को डाक्टर बाउलिंग की मेज़बान बनने की बारी थी। उनके ड्राइंग रूम में युवा लेफ़्टिनेंट स्काट गिटार बजा रहे थे, जबकि श्रीमती बाउलिंग एक प्रेम-गीत गा रही थीं। सेना के चार अफ़सर ताश के खेल 'ह्विस्ट' में मशगूल थे, जबकि श्रीमती रिकैट्स, मिस्टर जेनकिन्स, कलक्टर साहिब और कैप्टन जेम्स एक्सशाह ह्विस्की की बोतल खोले मौसम के बारे में बतिया रहे थे।

सिर्फ़ लाबाडोर परिवार को ही आने वाली मुसीबत का अंदाज़ था। वह पार्टी में शामिल नहीं हुआ था।

मिस्टर लाबाडोर 42 वर्ष के थे और उसकी पत्नी 38 वर्ष की। इनकी बेटी रूथ अत्यन्त रूपवती थी—उसके बाल काले और चमकीले थे और उसकी काली आँखें खूब बड़ी-बड़ी थीं। पंद्रह दिन पहले ही वह फ़तेहगढ़ में मिसेज शील्ड के स्कूल से वापिस लौटी थी क्योंकि उसकी माँ का सोचना था कि घर में वह कहीं अधिक सुरक्षित थी।

श्रीमती लाबाडोर के पिता फ्रांस के एक साहसिक व्यक्ति थे और उन्होंने मराठा सेना में नौकरी भी की थी। उनकी माता रामपुर के एक प्रसिद्ध परिवार से थीं। उसका अपना नाम मरियम था और उसका और उसके भाइयों का पालन-पोषण क्रिश्चियन रीति से हुआ था। अठारह साल की उम्र में ही उसका विवाह लाबाडोर से हो गया था, जो एक बहुत ही सौम्य, विनीत व्यक्ति था और

मजिस्ट्रेट के कार्यालय में क्लर्क था। वह जर्सी (चैनल आइलैंड) के एक व्यापारी का पोता था और उसका मूल जर्सी नाम लाबाडू था।

हालाँकि छावनी में रहने वाले ज़्यादातर अंग्रेज़ अधिकारियों की पत्नियाँ नौकरों से गपशप करने में अपनी तौहीन समझती थीं लेकिन मरियम लाबाडोर को इसमें बड़ा रस आता था। वह वैसे भी बहुत कम दूसरों के यहाँ जाती थी। ये नौकर खूब चटखारे लेकर दूसरों के क़िस्से बयान करते थे और मरियम का दिन मज़े से बीत जाता था। मरियम के सामने जो ताज़ा क़िस्सा बयान किया गया था, इसे सुन लेने के बाद उसे यक़ीन हो गया था कि शहर में कुछ ही घंटों बाद दंगे भड़क उठेंगे। मेरठ की ख़बरें बाज़ारों और सिपाही लाइन्स में पहुँच चुकी थीं और खन्नौत नदी के किनारे रहने वाले एक फ़क़ीर ने कुछ ही महीनों में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के ख़त्म हो जाने की भविष्यवाणी कर डाली थी। जिस दिन बाउलिंग परिवार के यहाँ पार्टी थी, मरियम ने अपने पति और बेटी को घर से बाहर नहीं निकलने दिया था और यह भी सुझाया था कि अगले दिन इतवार को भी वे चर्च न जायें। नियमित रूप से चर्च जाने वाली मरियम की तरफ़ से किया गया यह एक अजीब अनुरोध था।

रूथ अपनी मर्जी की मालिक थी और अगले दिन उसने चर्च जाने का पक्का फ़ैसला कर लिया था। उसके पिता ने भी साथ चलने का वादा कर दिया था।

खुले और चमकीले आकाश में जब सूरज उगा तो नदी के किनारे चलती ठंडी बयार का आनंद केवल वही लोग उठा सके, जो उस दिन पौ फटने के साथ ही उठ गये थे। सात बजे चर्च के घंटे बज उठे और छावनी वाले मजबूत चर्च की ओर जाते हुए लोग दिखायी देने लगे। मिस्टर लाबाडोर और उसकी बेटी पैदल ही जा रहे थे और वे इतवार को पहने जाने वाली सुंदर पोशाकों में सजे-धजे थे। दूसरे लोग या तो गाड़ियों में थे या फिर डोलियों में आ रहे थे। डोली उठानेवाले कहार पसीने से लथपथ थे।

सेंट मेरी शाहजहाँपुर का एक छोटा-सा चर्च है और एक आम के बाग़ के नज़दीक छावनी की दक्षिणी सीमा पर स्थित है। चर्च में तीन तरफ़ से प्रवेश किया जा सकता है : दक्षिणी दिशा से जिसके आगे बुल्लर नामक एक लंबा-चौड़ा बरामदा है; पश्चिमी दिशा से जो एक मीनार के नीचे है, और तीसरा प्रवेश चर्च के वस्त्रागार की ओर खुलता है जिसमें में एक तंग सीढ़ी से भीतर जाया जा सकता है। पूर्व दिशा में खुला मैदान है, जो नदी की ओर बढ़ जाता है और

जहाँ खरबूज़ों की खेती की जाती है। पश्चिमी दिशा में शहर से घिरा एक मैदान है और उत्तरी दिशा में परेड ग्राउंड है जो सिपाहियों की बैरकों तक फैला हुआ है। परेड ग्राउंड की तरफ़ ही जगह-जगह बँगले बने हैं जिनमें अंग्रेज़ रेजीमेंट के अफ़सर रहते हैं। ये अफ़सर बेख़बर होकर रात को सोए थे और उन्हें मारपीट और खूनख़राबे जैसी किसी बात की कोई ख़ैर-ख़बर नहीं थी।

मैं अब आगे की कहानी रूथ की ज़बानी ही पेश करूँगा।

2

चर्च में

पिता और मैं अभी घर से बाहर निकले ही थे कि हमने अनेक सिपाहियों को सड़क पार करते देखा। ये सभी नदी में नहाने के लिए उसी दिशा की ओर जा रहे थे। उन्होंने हम लोगों को घूरकर देखा तो सहमकर मैं अपने पिता से सट गयी और उनके कान में फुसफुसाकर कहा, ''पापा, ये लोग अजीब तरह से हमें घूर रहे हैं !'' लेकिन मेरे पिता को इसमें कुछ भी अजीब नहीं लगा : खन्नौत नदी पर जाने के लिए सिपाही इसी रास्ते से रोज़ जाया करते थे और मेरा ख़याल है कि पिता जब दफ़्तर जाते थे तो रास्ते में उन्हें ये सिपाही अक्सर दिखायी देते थे।

दक्षिणी पोर्च से हम दोनों चर्च में दाख़िल हुए और मंच के दाहिने तरफ़ की बेंचों पर बैठ गये। काफ़ी लोग अब तक आ चुके थे और मैंने इस तरफ़ ध्यान नहीं दिया कि वे कौन-कौन थे। हम लोगों ने झुककर अपना 'कन्फ़ैशन' अभी आधा ही पूरा किया था कि बाहर से हमें हो-हल्ला और शोर मचने की आवाज़ें सुनायी दीं। कुछ देर बाद ये आवाज़ें हमें नज़दीक आती लगीं। चर्च में हर कोई उठ खड़ा हुआ। फादर भी मंच से हटकर दरवाज़े के पास आकर खड़े हो गये। मैं खुद भी उठकर उनके पास खड़ी हो गयी थी।

पोर्च में हमें छह या सात आदमी खड़े दिखायी दिये। उनके चेहरे नाक तक ढके हुए थे। उन्होंने कसे हुए लंगोट पहन रखे थे मानो वे कुश्ती लड़ने की तैयारी करके आए हों। उनके हाथों में नंगी तलवारें थीं। जैसे ही उन्होंने हमें देखा, वे झपट कर आगे बढ़े और उनमें से एक ने हम पर तलवार से वार किया। हम दोनों इस वार से बाल-बाल बचे और तलवार दरवाज़े की लकड़ी में धँस गयी। मेरे पिता का बायाँ हाथ दरवाज़े पर ही टिका था और मैं उसी के नीचे से दौड़ते हुए चर्च के प्रांगण में पहुँच गयी थी।

तभी कुछ और लोगों ने मेरे पिता पर दूसरा और तीसरा वार किया और

तलवार उनकी दाहिनी गाल पर घाव कर गयी। मेरे पिता ने उन हमलावरों में से एक की तलवार पकड़ने की भरपूर कोशिश की थी लेकिन उन्होंने धार वाली तरफ़ से तलवार को इतनी ज़ोर से पकड़ लिया था कि उनके दाहिने हाथ की दो उँगलियाँ ही कट गयीं। उन्हें बस इतने ही घाव लगे थे। वह गिरे तो नहीं लेकिन खून की धार बह निकली। मैं यह सब पोर्च में खड़ी देख रही थी और इस हादसे से परेशान और हैरान थी। मुझे याद है कि मैंने अपने पिता से पूछा था कि आपका इतना खून क्यों बह रहा है।

"मेरी जेब से रूमाल निकाल मेरे चेहरे पर पट्टी बाँध दो," जवाब में उन्होंने कहा।

जब मैंने दो रूमालों को जोड़कर उनकी पट्टी की और इसके सिरे उनके सिर के ऊपर बाँध दिये तो उन्होंने कहा कि वह घर जाना चाहते हैं। मैं हाथ पकड़कर उन्हें पोर्च के बाहर ले जाने लगी। अभी हम कुछ ही क़दम चले थे कि उन्हें बेहोशी-सी महसूस होने लगी। तब उन्होंने कहा, "रूथ, मैं चल नहीं पा रहा। हम वापिस चर्च के अंदर चलते हैं।"

हथियारबन्द लोगों ने चर्च में एक ही हमला किया था और फिर वे वस्त्रागार के दरवाज़े से चले गये थे। मेरे पिता को ज़ख़्मी करने के बाद वे गलियारे के बीचोंबीच पहुँच कर कभी दायें तो कभी बायें वार करते रहे थे। इन लोगों ने लेफ़्टिनेंट स्काट पर वार किया तो उसकी माँ बीच में आ गयी और यह वार उसने अपनी पसलियों पर झेला; कसी हुई पोशाक पहनने के कारण उसका ज़ख़्म गहरा नहीं था और वह बच गयी थी। मिस्टर रिकैट्स, कलक्टर जेनकिन्स और मंत्री मैककुल्लम ने वस्त्रागार के रास्ते से भाग कर अपनी जानें बचायीं।

वहाँ इकट्ठा बाक़ी लोग 'बेलफ़्रे' के उस हिस्से में चले गये, जहाँ चर्च के घंटे रखे जाते हैं और अपने पिता के बहुत इसरार करने पर ही मैं भी उन्हीं लोगों में शामिल हो गयी थी। घोड़े पर सवार कैप्टन जेम्स को हमने तभी चर्च की ओर आते देखा। वे चर्च के हंगामे से बेख़बर थे। जब हम लोगों ने चिल्लाकर उन्हें सावधान किया तो उन्होंने नज़र उठाकर हमारी तरफ़ देखा। ठीक उसी समय परेड ग्राउंड में चारों तरफ़ फैले सिपाहियों में से एक ने उन पर गोली दाग़ दी और वे घोड़े से गिर कर नीचे आन पड़े। मैस से दो और अफ़सर दौड़ते हुए वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने सिपाहियों से कहा : "ओह ! मेरे लाडलो, तुम लोग क्या कर रहे हो ?" उन्होंने सिपाहियों को शांत करने की पूरी कोशिश की लेकिन कोई भी उनकी बात सुनने को तैयार नहीं था। वे सिपाहियों के बड़े अज़ीज़ अफ़सर

थे, इसलिए जब वे अपने हाथों में पिस्तौलें लिए हमारे पास बुर्ज़ तक चले आये तो सिपाहियों ने उन्हें रोका नहीं था।

इसके फ़ौरन बाद हमने खूब तेज़ भागती हुई एक गाड़ी को चर्च की तरफ़ आते देखा। यह डा. बाउलिंग थे और उनके साथ गाड़ी में उनकी बीवी, बच्चा और आया भी थी। इस गाड़ी को चर्च में पहुँचने के लिए परेड ग्राउंड में से गुज़रना था और अभी वे लोग आधे ही रास्ते तक पहुँचे थे कि कोच-बाक्स में बैठे डाक्टर को गोली लगी। वे अपनी सीट पर अकड़कर बैठ गये और लगाम हाथ से छूटने नहीं दी। गाड़ी लगभग चर्च के पास थी कि तभी एक सिपाही दौड़ता हुआ आया और उसने श्रीमती बाउलिंग पर हमला किया। वे बाल-बाल बच निकलीं। जब गाड़ी चर्च के पास पहुँच गयी तो कुछ अफ़सर दौड़ते हुए आये तथा डा. बाउलिंग को कोच-बाक्स से उतारने में मदद करने लगे। वे कुछ देर तक तो उनकी बाँहों में ही छटपटाते रहे और जब उन्हें ज़मीन पर उतारा गया तो वे मर चुके थे।

मैं इन अफसरों के साथ ही बुर्ज़ से नीचे उतरी थी और दौड़ कर अपने पिता के पास चली गयी थी। खून से लथपथ पिता दीवार का सहारा लिए बैठे थे। उन्होंने अपने दर्द के बारे में कुछ नहीं कहा। उनके होंठ खुले थे और वह बड़ी मुश्किल से अपनी आँखें खोल पा रहे थे। उन्होंने मुझे घर जाने के लिए कहा और मेरी माँ को यह ख़बर भिजवायी कि मैं उसे खाट या डोली भेजने के लिए कहूँ ताकि वह घर पहुँच सकें। इतनी जल्दी सब कुछ घटा था कि मैं हैरान थी। हालाँकि मिसेज बाउलिंग और दूसरी औरतें रो रही थीं लेकिन मेरी आँखों में आँसू की एक बूँद तक न थी। मेरे पिता के चेहरे पर दो बड़े घाव थे और उन्हें इस हालत में छोड़कर जाने में मुझे बड़ी झिझक हो रही थी लेकिन घर पहुँचने के बाद डोली भेजकर ही मैं उनकी सही तरह से मदद कर सकती थी।

चर्च की पथरीली दीवार के सहारे उन्हें छोड़कर मैं वस्त्रागार की तरफ़ दौड़ पड़ी और अचानक मिस्टर रिकैट्स के ऊपर जा गिरी, जो वस्त्रागार के दरवाज़े से क़रीब बारह फुट दूर ज़मीन पर चित्त पड़े थे। उन पर किसी कुशल तथा ताक़तवर शमशीरबाज़ ने हमला किया था और उसके वार ने उनके शरीर को बायें कंधे के नीचे धड़ तक काट दिया था। इससे उनका सिर और दायाँ हाथ बाकी शरीर से कट कर अलग हो गया था। मैं बुरी तरह डरकर उस जगह से हट गयी और बुल्लर मैदान के रास्ते घर की तरफ़ दौड़ने लगी।

रास्ते में मुझे कोई नहीं मिला था। न तो किसी ने मुझे रोका, न ही किसी

ने मुझे चुनौती दी और न ही मेरी इज़्ज़त लूटने की कोशिश की। छावनी ख़ाली-ख़ाली और उजाड़ मालूम पड़ती थी लेकिन जैसे ही मैं बुल्लर मैदान के आख़िरी छोर पर पहुँची, मुझे अपना घर आग की लपटों में धू-धू करता दिखायी दिया। मैं गेट के पास आ कर रुक गयी और मैंने अपनी माँ के लिए ढूँढ़ती आँखों से देखा लेकिन वह मुझे कहीं दिखायी नहीं दी। मेरी नानी भी कहीं दिखायी नहीं दे रही थी और न ही कोई नौकर-चाकर भी। तभी मैंने लाला रामजीमल को सड़क के रास्ते अपनी ओर आते देखा।

"चिंता मत करो, मेरे बच्चे," उसने कहा। "माँ, नानी और बाक़ी सभी लोग सुरक्षित हैं। आओ, मैं तुम्हें उनके पास ले चलता हूँ।"

लाला रामजीमल की नीयत पर शक़ करने का सवाल ही नहीं उठता था। मैं जब बच्ची थी तो उसने मुझे अपनी गोदी में खिलाया था और मैं उसकी आँखों के सामने ही बड़ी हुई थी। अपने पुराने घर से क़रीब तीस ग़ज की दूरी पर हम एक झोपड़ी की तरफ़ बढ़े। यह सड़क की तरफ़ का एक कच्चा घर था और इसका दरवाज़ा बंद था। लाला ने दरवाज़े पर दस्तक दी लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। तब उन्होंने एक दरार में अपना मुँह सटाकर फुसफुसाया, "मिस्सी-बाबा मेरे साथ हैं, दरवाज़ा खोलो।"

दरवाज़ा खुलते ही मैं दौड़ती हुई अपनी माँ की बाँहों में जा सिमटी।

"थैंक गॉड !" वह रोते हुए बोली। "कम-से-कम एक को तो तुमने बख़्श दिया है।"

"पापा चर्च के पास ज़ख़्मी पड़े हैं," मैंने कहा। "किसी को भेजकर उन्हें यहाँ लाने की कोशिश करो।"

माँ ने लाला की तरफ़ देखा और वह उनकी आँखों में छिपी मिन्नत को टाल नहीं सका।

"मैं जाता हूँ," उसने कहा। "मेरे लौटने से पहले यहाँ से कोई बाहर नहीं जाये।"

"तुम नहीं जानते कि पापा कहाँ पड़े हैं," मैंने कहा। "मुझे मदद के लिए अपने साथ ले चलो।"

"नहीं, अपनी माँ को छोड़कर तुम अब कहीं नहीं जाओगी," लाला ने कहा। "यदि किसी ने तुम्हें मेरे साथ देख लिया तो हम दोनों को मार दिया जायेगा।"

कई घंटों बाद लाला दोपहर को वापिस लौटा।

"साहब मर चुके हैं," उसने बड़े सहज ढंग से सूचना दी। "मैंने उन्हें अपने

सामने मरते हुए देखा। खून इतना बह चुका था कि उनका बचना मुश्किल था। वह बोल नहीं पा रहे थे और उनकी आँखें धुँधला गयी थीं। उन्होंने मेरी तरफ़ ऐसी नज़रों से देखा था कि मुझे पूरा यक़ीन है, उन्होंने मुझे पहचान लिया था...''



3

लाला रामजी मल

लाला ने हमसे दोपहर में विदा ली। उसने अंधेरा होने पर दोबारा आने का वादा किया और कहा कि वह तब हमें अपने घर ले जायेगा। ऐसा करने में बहुत ख़तरा था, फिर भी, उसने हमें सहारा देने का यक़ीन दिलाया। जब वह किसी बात को करने की ठान लेता था, तब अपने फ़ैसले से उसे कोई डिगा नहीं सकता था। वह सरकारी नौकर नहीं था, इसलिए अंग्रेज़ों के लिए किसी वफ़ादारी की बात भी नहीं थी। उसने विद्रोहियों की तरफ़दारी भी नहीं की थी क्योंकि उसका रास्ता उनसे मिलता नहीं था। वह अपने कारोबार से पूरी तरह संतुष्ट था। (उसकी अनेक डोलियाँ और गाड़ियाँ थीं जिन्हें वह उन यूरोपवासियों को किराये पर देता था जिन्होंने इन्हें ख़रीदा नहीं था।) वह अपने कारोबार में काफ़ी होशियार और स्वभाव में बड़ा विनीत था, इसलिए जो लोग भी उसके संपर्क में आये थे, वे उसकी इज़्ज़त करते थे। हमारी सहायता करने के पीछे उसके व्यक्तिगत कारण थे। वह हमारी सहायता यह सोचकर बिल्कुल नहीं कर रहा था कि मेरे पिता सरकार में थे; मेरे पिता तो शाहजहाँपुर के एक छोटे-से अफ़सर ही थे बल्कि वह हमारी सहायता इसलिए कर रहा था कि पिछले कई सालों से हमारी उससे जान-पहचान थी और ख़ासतौर पर वह मेरी माँ का प्रशंसक था क्योंकि वह हमेशा उसके साथ दोस्ताना और बराबरी का व्यवहार करती थी।

मुझे अचानक अहसास हुआ कि मैं अब बिना बाप के हूँ और मेरी माँ विधवा हो चुकी है, लेकिन यह समय शोक मनाने का नहीं था। हमारी अपनी ज़िन्दगी भी ख़तरे में थी। हम लोग छिपने की जगह से अपने जलते घर की लकड़ियों के चटकने की आवाज़ें सुन रहे थे। शहर से छावनी तक जानेवाली सड़क पर हंगामा मचा हुआ था और हर तरफ़ से लोगों के चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनायी दे रही थीं। हमें अपने दरवाज़े के ठीक सामने सड़क पर चलते लोगों के क़दमों की आहट सुनायी पड़ी; एक भी चीख़ या छींक से हमारा सारा

भेद खुल सकता था और तब हम बाज़ार के उन हिंसक दंगाइयों के चंगुल में होते जिनकी तलवारें धूप की चौंध में चमचमाती हुई हिलती दीख रही थीं।

इस छोटे-से कमरे में हम कुल आठ लोग थे—माँ, नानी, मैं; मेरी ममेरी बहन एनेट; मेरी माँ का सौतेला भाई पीलू जो मेरा हमउम्र भी था और उसकी माँ; हमारी नौकरानियाँ चंपा और लाडो। इनके अलावा हमारे दो काले और सफ़ेद स्पेनिएल कुत्ते भी थे, जो घर छोड़ते समय हमारी माँ के पीछे-पीछे चले आए थे।

जिस कच्चे घर में हम लोगों ने पनाह ली थी, वह राजमिस्त्री त्रिलोकी का था जिसने हमारा घर बनाने में मदद की थी। हम लोग उसे खूब अच्छी तरह जानते थे। गदर के शुरू होने के कई हफ़्ते पहले, जब माँ अपने नौकरों और दूसरों से भी शाहजहाँपुर में होने वाले संभावित दंगों के बारे में बातें करती रहती थी, त्रिलोकी ने कहा था कि ज़रूरत पड़ने पर आप मेरा घर इस्तेमाल कर सकती हैं। माँ ने तब सावधानीवश ही उसकी यह बात मान ली थी और उसके घर की चाबी ले ली थी।

माँ ने बाद में मुझे बताया कि उस सुबह, जब वह बरामदे में बैठी हुई थी, माली का एक लड़का हाँफते हुए उसके पास आकर चिल्ला पड़ा था : "गदर शुरू हो गया है। साहब और मिस्सी-बाबा मार डाले गये हैं।"

यह सुनते ही कि हम दोनों की हत्या कर दी गयी है, उसके मन में पहली बात यह आयी थी कि नज़दीक के किसी कुएँ में वह भी कूद जाये। नानी ने उसे ज़बरदस्ती रोकते हुए ऐसा करने नहीं दिया और यह कहा, "अगर तुम ऐसा करती हो तो हम बचे हुए लोगों का क्या होगा ?" तब उसने सड़क पार की और बाक़ी लोग भी उसके पीछे-पीछे चले आये थे। उसने त्रिलोकी के घर के अंदर घुसकर भीतर से कुंडी लगा ली थी।

हम पूरे दिन उस झोपड़ी में छिपे रहे। साथ ही यह धड़का भी लगा रहा कि कोई भी हमें ढूँढ़ लेगा और हमें मार डालेगा। हमने सारा दिन कुछ भी नहीं खाया था। और यदि हमारे पास खाना होता भी, तब भी हममें से किसी ने खाया नहीं होता। पिता की मृत्यु हो जाने से चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिख रहा था और हम आपस में बात तक नहीं कर पा रहे थे। दरवाज़े की संध में से गर्म हवा आ रही थी। इधर हमारे गले सूखे हुए थे। झोपड़ी के ठीक पीछे एक पेड़ से लगी खिड़की के रास्ते दोपहर बाद कहीं एक ठंडे पानी की चट्टी हमारे पास पहुँच गयी। यह चिंता नामक एक आदमी की भलमनसाहत थी, जिसने हमारा बँगला

बनने के दौरान वहाँ एक मज़दूर के तौर पर काम किया था।

क़रीब दस बजे जब लाला लौटकर आया तो उसके साथ हमारा पुराना बेयरा धानी भी था। उसने हमें अपने घर चलने के लिए कहा। माँ बाहर निकलने से घबरा रही थी लेकिन लाला ने दिलासा दिया था कि अब रास्ते साफ़ हैं और इज़्ज़त लुटने का कोई डर नहीं है। आख़िरकार वह जाने के लिए तैयार हो गयी।

हम लोग दो दलों में बँट गये। लाला एक हाथ में खुली तलवार और दूसरे हाथ में छाता लिए हमें रास्ता दिखा रहा था। माँ, एनेट और मैं एक-दूसरे का हाथ पकड़े उसके पीछे-पीछे चलने लगीं। माँ ने हम लोगों को चद्दर ओढ़ा दी थी, जो घर छोड़ते समय वह अपने साथ ले आयी थी। हम सदर रास्ते से न जाकर भंगी बस्ती से जा रहे थे और पंद्रह मिनट पैदल चलने के बाद ही लाला के घर पहुँच गये थे। वहाँ पहुँच जाने के बाद लाला ने हमें बैठने के लिए पलंग दिया और खुद ज़मीन पर पालथी मार कर बैठ गया।

जब हम लोग त्रिलोकी के घर से बाहर निकले थे, तब माँ ने चाबियों का भारी गुच्छा दूर फेंक दिया था। जब मैंने पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो उसने हमारे बँगले से उठते धुएँ की तरफ़ इशारा कर कहा, "अब हमारे लिए इन चाबियों का क्या फ़ायदा ?"

बेयरा धानी भी एक दूसरे दल के साथ वहाँ पहुँच गया जिसमें नानी, पीलू और उसकी माँ, चंपा और लाडो तथा कुत्ते थे। इस तरह हम कुल आठ लोग लाला के छोटे-से घर में जमा हो गये थे और मुझे याद है कि उसका अपना परिवार भी इतना ही बड़ा था।

हमें भोजन परोसा गया लेकिन वह लोग खा नहीं सके। रात होने पर हम लेट गये—माँ, नानी और मैं बिस्तर पर थे और बाक़ी सब ज़मीन पर। रात के अंधेरे में मैं अपनी माँ की छातियों से सटकर बिसूरने लगी थी। मेरी माँ भी रो रही थी लेकिन चुपके से। मुझे याद पड़ता है कि मेरे सोने तक वह लगातार रोती रही थी।

4

लाला के घर में

लाला के परिवार में कुल लोग थे—खुद वह, उसकी घरवाली, माँ, मौसी और बहन। यह औरतों वाला घर था और हम लोगों के अचानक आ जाने से हालत बदली नहीं थी। वैसे वह घड़ी थी लाला के सब्र और हौसले के इम्तहान की क्योंकि उसे बारह परेशानहाल औरतों को सँभालना था।

उसके परिवार के सदस्यों को हमारे बारे में सभी कुछ मालूम था क्योंकि लाला की माँ और मौसी हमारे कुएँ से पानी लेने के बाद, हमारे घर के पास ही बने एक छोटे-से मंदिर में, बेल-पत्र चढ़ाया करती थीं। शुरू में हमारे लिए उनके दिल में कुछ अजीब-सी हिचक थी और हम भी अपने हालात से पस्त हो एक कोने में दुबक एक-दूसरी का मुँह ताकती और रोती रहती थीं। लाला की घरवाली हमारे पास आकर परतलों में खाना परोस देती। चौबीस घंटों में हमने मुश्किल से एक बार दोपहर ढले खाया था लेकिन हम एक बार के खाने से ही संतुष्ट थीं!

वह एक साधारण कच्चा घर था जिसमें सीधी छत वाले चार कमरे, आगे के हिस्से में नीची छत वाला एक बरामदा और पिछवाड़े आँगन था। बिना तड़क-भड़क वाला यह एक छोटा-सा घर आम परिवार के रहने लायक़ था।

लाला की घरवाली जवान, छोटे क़द की और गोरी थी। हमें उसका नाम नहीं पता था क्योंकि पति या पत्नी में एक-दूसरे को नाम से पुकारने का रिवाज़ नहीं था; हाँ, उसकी सास ज़रूर उसे 'दुल्हन' कहकर पुकारती थी।

रामजीमल खुद लंबा, दुबला-पतला आदमी था और उसकी लंबी-लंबी मूँछें थीं। सभी कायस्थों की तरह वह भी मिठबोला था लेकिन अपने इरादों का वह बहुत ही पक्का था और दूसरे कायस्थों में यह ख़ासियत आम बात नहीं थी।

हमारे आने के दूसरे दिन मैंने उसकी माँ को यह कहते हुए सुन लिया था : ''लालाजी, आपने इन अंग्रेज़नों को अपने घर में लाकर बहुत बड़ी ग़लती

की है। लोग क्या कहेंगे ? बाग़ियों को जैसे इसका पता चलेगा, वे यहाँ आकर हम लोगों को मार डालेंगे।"

"मैंने वही किया है, जो ठीक था," लाला ने शांति से जवाब दिया "मैंने अंग्रेज़ों को पनाह नहीं दी है। मैंने दोस्तों को पनाह दी है। लोगों को जो चाहे कहने या करने दो।"

वह शायद ही घर से बाहर कभी निकलता। अक्सर घर के अगले दरवाज़े के पास वह बैठकर हुक्का पीता दिखायी देता या किसी दोस्त के आ जाने पर उसके साथ शतरंज खेलने लगता। कुछ दिनों बाद लोगों को शक होने लगा कि इस घर में कोई है ज़रूर जिसके बारे में लाला कुछ बताता नहीं है। हाँ, इस बात का कोई अंदाज़ नहीं लगा सका कि आख़िर मेहमान हैं कौन ! वह इस पर भी कड़ी निगरानी रखता कि घर के लोग दूसरों से ज़्यादा बातचीत न करें। उसने यह सावधानी भी बरती कि घर के अंदर कोई दाख़िल न हो, इसलिए आगे के दरवाज़े की वह हमेशा कुंडी चढ़ाए रखता।

यह अचरज की ही बात है कि लोगों की निगाह से बचकर हमलोग वहाँ मन मुताबिक रहते रहे हालाँकि उनका ध्यान खींचने के लिए कुत्ते ही काफ़ी थे। ये कुत्ते हमें छोड़ने को तैयार न थे। वैसे उन्हें देने के लिए हमारे पास अपने भोजन की जूठन के अलावा कुछ न था। लाला की मौसी ने माँ को बताया था कि तीसरा कुत्ता, जो हमारे साथ आया नहीं था, हमारे जले हुए बँगले के लगातार चक्कर काटता रहा था और गदर छिड़ने के अगले दिन अपने मालिक के इंतज़ार में वहीं बैठा-बैठा मर गया था।

एक दिन जब हमलोग ताज़ातरीन मिली ख़बरों के बारे में बातचीत करते हुए फ़र्श पर बैठे थे कि लाला भीतर आया। कल क्या होगा, इस बात की चिंता हमें खाये जा रही थी, इसीलिए हम अपने साथ बीती घटनाओं पर चुप्पी साध कर बातचीत करने को लाचार थे।

लाला अपने हाथ में तलवार पकड़े फ़र्श पर बैठ गया। उसका यह हथियार अब उसका पक्का साथी बन गया था हालाँकि इसे इस्तेमाल करने का अभी तक कोई मौक़ा नहीं आया था। यह उसका अपना हथियार नहीं था बल्कि कोर्टहाउस की लूटपाट के बाद उसे वहाँ फ़र्श पर पड़ा मिल गया था।

"लाला, क्या हम लोग तुम्हारे घर में पूरी तरह हिफ़ाज़त से हैं ?" माँ ने पूछा। "इन दिनों बाहर के क्या हालचाल हैं ?"

"आप लोग यहाँ पूरी तरह सुरक्षित हैं," लाला ने जवाब देते हुए अपनी



तलवार की तरफ़ इशारा किया। "इस घर में मेरी लाश पर क़दम रख कर ही कोई अंदर आ सकता है हालाँकि यह भी सच है कि मुझ पर काफ़िरों को पनाह देने का शक़ किया जा रहा है। एक से ज़्यादा लोग मुझसे सवाल कर चुके हैं कि मैं अपने घर पर इतनी निगरानी क्यों रखता हूँ। मेरा यही जवाब होता है कि गदर के बाद मेरे पास कोई रोज़गार नहीं रहा और अपने घर के दरवाज़े पर बैठकर औरतों की हिफ़ाज़त करने के अलावा मेरे पास कोई और काम है भी क्या ? फिर वे मुझसे सवाल करते हैं कि दूसरों की तरह मैं नवाब के पास क्यों नहीं गया ?"

"कौन-सा नवाब, लाला ?" माँ ने पूछा।

"शहर में सिपाहियों के घुस आने के बाद उनके नेता सूबेदार मेजर ने कादिर अली ख़ान को नवाब बना दिया था और सारे शहर में इसका ऐलान भी करवा दिया था। पेंशनयाफ़्ता निज़ाम अली को कोतवाल बना दिया था और बाक़ी के सभी ज़िम्मेदार ओहदे जावेद ख़ान और निज़ाम अली ख़ान को सौंप दिये थे। लेकिन निज़ाम अली ख़ान ने कोई भी ओहदा लेने से इनकार कर दिया था।"

"और जावेद ख़ान ?"

"उसने अभी तक कोई ओहदा सँभाला नहीं है और अज्जु ख़ान के साथ मिलकर साहिबों के घरों की लूटपाट में मशगूल है। जावेद ख़ान ने खजांची को लूटने के लिए लोगों को भड़काया था। यह क़िस्सा कुछ यूँ है...

"...जैसा कि आप जानती हैं, जावेद ख़ान शहर का सबसे बड़ा बदमाश है। जब सिपाही नवाब को बहाल कर अपने घरों को लौट चुके थे, जावेद ख़ान उनके कमांडर के पास पहुँचा। यह सुनने पर कि रेजीमेंट शाहजहाँपुर छोड़ कर बरेली ब्रिगेड में शामिल होने की तैयारियाँ कर रही है तो उसने सूबेदार-मेजर घनश्याम सिंह को वहाँ जाने से पहले रोज़ा रम फैक्टरी पर हमला बोलने का इसरार किया। सूबेदार जोरावर सिंह के मातहत एक टुकड़ी जावेद ख़ान के साथ चल पड़ी। यह टुकड़ी झुन्ना लाल खजांची के घर के पास से जानेवाली सड़क से जा रही थी। उसने यहाँ रुककर झुन्ना लाल से रक़म माँगी। उसी सुबह जलालाबाद के तहसीलदार से खजांची के पास छह हज़ार रुपये आये थे और सूबेदार ने यह रक़म छीन ली। झुन्ना लाल ने इससे ज़्यादा रुपये देने से इनकार कर दिया तो उसके हाथ-पाँव बाँधकर उसे टाँगों के बल एक पेड़ से लटका दिया। तभी जावेद ख़ान ने हिसाब की सारी बहियाँ उठाकर कुएँ में डाल दीं और कहा, 'क्योंकि तुम हमारी ज़रूरत की रक़म नहीं देना चाहते, इसलिए तुम्हारी बहियाँ कुएँ में डाले दे रहे हैं। हम तुम्हारे पास औरों से पैसा वसूलने का कोई जरिया

छोड़ कर नहीं जाना चाहते।'

"...इस टुकड़ी के आगे निकल जाने के बाद झुन्ना लाल के नौकरों ने उसे पेड़ से उतारा। मारे डर के और सिर की तरफ़ दौड़ते खून से वह अधमरा हो गया था। जब वह ठीक हो गया तो उसने नौकरों से हरेक बही कुएँ से निकालने के लिए कहा।"

"फिर रोज़ा फैक्टरी का क्या हुआ ?" मैंने पूछा।

"जावेद ख़ान के लोगों ने इसमें आग लगा दी। कम-से-कम सत्तर हज़ार गैलन रम तथा बहुत बड़ी मिकदार में शक्कर के डले बर्बाद हो गये। बचा-खुचा लोग ले उड़े। जावेद ख़ान के हिस्से में शक्कर के डलों की एक पूरी गाड़ी आयी !"*

अगले दिन जब लाला अंदर आया और हमारे पास बैठ गया—वह हर रोज़ क़रीब एक घंटा हमारे साथ बिताता था—तो मैंने उससे एक सवाल किया। यह ऐसा सवाल था जो मेरे मन में हमेशा घुमड़ता रहता था लेकिन जिसका जवाब सुनने की मुझमें हिम्मत न थी कि आख़िर मेरे पिता की मुर्दा पड़ी देह का क्या हुआ।

"मुझे पहले ही तुम्हें यह बता देना चाहिए था, मिस्सी-बाबा," उसने कहा, "लेकिन मैं तुम्हें उदास नहीं देखना चाहता था। जिस दिन तुम लोगों को अपने घर लाया था, उसके अगले ही दिन मैं चर्च गया था। वहाँ मुझे तुम्हारे पिता, कलक्टर-साहिब और डाक्टर की लाशें उसी तरह पड़ी दिखायी दीं जैसे कि एक दिन पहले मैंने देखा था। बिना देखभाल और चिलचिलाती गर्मी के बावजूद ये सड़ी नहीं थीं और न ही गिद्धों या सियारों ने इन्हें खाया था। इन लाशों के सिर्फ़ जूते ग़ायब थे।

"जैसे ही मैं वहाँ से जाने के लिए मुड़ा तो मुझे दो लोग (ये दोनों मुसलमान थे) कैप्टन जेम्स, जिन्हें चर्च से कुछ दूर गोली मारी गयी थी, की लाश अंदर लाते दिखायी दिये। उन्होंने तुम्हारे पिता और डाक्टर बाउलिंग के पास ही यह लाश भी रख दी थी। उन्होंने बताया कि ईसाइयों की लाशों को दफ़नाने का उन्होंने फ़ैसला किया है। मैंने उन्हें आगाह भी किया कि ऐसा कर ये बहुत बड़ा ख़तरा मोल ले रहे हैं क्योंकि फिरंगियों के मामले में दरियादिली बरतने के नाते नवाब के आदमी उन्हें तंग कर सकते हैं। उन्होंने जवाब दिया कि इस ख़तरे

* आख़िरकार वह रोज़ा रम फैक्टरी चल निकली और आज (दिसम्बर, 1990 में) भी चालू है।

का उन्हें अंदाज़ है लेकिन उन्हें कोई चीज़ बार-बार इस नेक काम को करने के लिए कह रही है और इसका जो भी नतीजा निकलेगा, वे उसे भुगतने के लिए तैयार हैं।

"उनका फ़ैसला देखकर मैं शर्मिंदा महसूस करने लगा। तब मैंने अपना लांग कोट उतार कर उनकी मदद करने की सोची। चर्च के बाहर खोदे गये गड्ढे के पास इन लाशों को पहुँचाने में मैंने भी मदद की। यहाँ मैंने पादरी-साहिब, मिस्टर मैककुल्लम और असिस्टेंट कलक्टर मिस्टर स्मिथ की लाशें भी देखीं। छहों लाशों को यहाँ साथ-साथ दफ़ना दिया गया और क़ब्र को 'मेसनरी स्लैब' से ढक दिया। पत्थर के ऊपर हमने बराबर दूरी पर लकीरें खींच दी थीं ताकि छह अलग-अलग क़ब्रों का हिसाब रखा जा सके। एक घंटे के अंदर हमने यह काम ख़त्म कर लिया था और जब मैं वहाँ से चला तो मेरे दिल में इतनी तसल्ली थी कि मैं इसका बयान नहीं कर सकता..."

रामजीमल के इस हिला देनेवाले बयान को सुनने और फिर जी हल्का होने के बाद मैंने उससे पूछा कि पादरी मैककुल्लम की मौत कैसे हुई ? मुझे अच्छी तरह याद था कि दंगाइयों के चर्च में दाख़िल होने पर मैंने उन्हें डायस से नीचे उतरते और मिस्टर रिकैट्स की माँ के साथ वस्त्रागार की तरफ़ भागते देखा था।

"मुझे कुछ ख़ास पता नहीं है," लाला ने कहा। "मुझे तो बस इतना ही मालूम है कि जब सिपाहियों ने मिस्टर रिकैट्स पर हमला किया था तो मैककुल्लम भाग कर खरबूज़ों के खेत में पहुँच गये थे और फिर झाड़ियों के पीछे छिप गये थे। पर सिपाहियों की एक दूसरी टोली को वे दिखायी दे गये और उन्होंने तलवारों से उन्हें ख़त्म कर दिया था।"

"बेचारा मैककुल्लम !" माँ ने ठंडी साँस भरकर कहा। "वह तो बिल्कुल गऊ था। अच्छा लाला, आर्थर स्मिथ का क्या हुआ ?" माँ उन सभी लोगों के बारे में पूरी जानकारी ले लेना चाहती थी जो हमारे परिचित थे।

"असिस्टेंट साहब की मौत शहर में हुई थी," लाला ने कहा। "जब दंगे भड़के तो वह बुख़ार में तपते हुए अपने बँगले में पड़े थे। उनका सोचना था कि छावनी के बजाय शहर में जाना कहीं ज़्यादा बेहतर रहेगा। उनका यह भी ख़याल था कि गदर में सिर्फ़ सिपाही शामिल हैं। वह कचहरी चले गये थे लेकिन वह बिल्डिंग तो तहस-नहस हो चुकी थी। कुछ ही देर में उनके चारों ओर भीड़ जमा हो गयी और उन्हें खदेड़ने लगी। किसी ने अपनी तलवार की मूठ से उन्हें कोंच दिया। मि. स्मिथ गुस्से से उबल पड़े और बुख़ार के बावजूद अपनी पिस्तौल

निकालकर उस आदमी पर तान दी।

"लेकिन स्मिथ साहब की बदकिस्मती ! उनकी पिस्तौल की टोपी अटक गयी और गोली चली ही नहीं। उन्होंने दोबारा पिस्तौल तानी लेकिन इस बार गोली उस आदमी की बैल्ट के कब्जे से टकराकर टन्न से नीचे गिर पड़ी। मि. स्मिथ ने निराश होकर अपनी पिस्तौल दूर उछाल दी। अब उस आदमी ने तलवार का भरपूर वार किया और वे घुटने के बल झुक गये। भीड़ ने भी उन पर धावा बोल दिया था। किस्मत ने स्मिथ साहब का साथ नहीं दिया। कंपनी बहादुर की इज्ज़त धूल में मिल गयी क्योंकि पिस्तौल की टोपी फँसने या फिर बेल्ट द्वारा गोली के रुकने की बात क्या आज तक किसी ने सुनी है ?"

5

नाम की तब्दीली

लाला रामजीमल से मिली ख़बरों के बाद ऐसा लगने लगा था कि जून के मध्य तक शाहजहाँपुर के सभी यूरोपीय लोग मार डाले गये हैं—अगर कुछ शहर से बच निकले भी थे तो वे खन्नौत के पार मुहम्मदी में मार डाले गये थे जैसेकि मिसेज़ बाउलिंग और उनका लड़का, जो भागकर वहाँ चले गये थे। बचने वालों में से सिर्फ़ हमलोग थे (जिसकी बाद में ताईद हुई) और रैडमेन परिवार ही था। हमलोग भी इसलिए बच गये थे क्योंकि बाहर के लोगों ने यह मान लिया था कि हमें नेस्तनाबूद कर दिया गया है। यह बात उस दिन और ज़्यादा उजागर हो गयी, जब एक औरत हमारे दरवाज़े पर मछली बेचने आयी।

लाला की बीवी ने पूछा, "अरी, तुम बहुत दिनों बाद इधर आयी हो और लगता है कि तुमने आज कुछ बेचा भी नहीं ?"

औरत ने कहा, "ललाइन ! अब मेरा सामान ख़रीदनेवाला है ही कौन ? फिरंगी तो चले गये। कोई ज़माना था कि मैं हर दिन लाबाडोर के यहाँ मछली बेचने पहुँच जाती थी और वहाँ से चार या पाँच आने कमा कर ही लौटती थी। मेमसाहब मुझसे मछली तो ख़रीदती ही थीं लेकिन कभी-कभी मछली पकाने के लिए भी कह देती थीं। इससे मुझे दो आने फ़ालतू मिल जाते थे।"

"क्यों, उनका क्या हुआ ?" ललाइन ने पूछा।

"क्यों भला, साहिब और उनकी लड़की तो चर्च में मार डाले गये थे और मेमसाहब ने नदी में कूदकर अपनी जान दे दी थी।"

"क्या तुम्हें पक्का यक़ीन है ?" ललाइन ने पूछा।

"बिल्कुल !" औरत ने कहा। "मेरा मरद अगले दिन जब मछली पकड़ने गया था तो उसने खन्नौत में मेमसाहब की लाश पानी के ऊपर तैरते हुए देखी थी।"

हमलोगों को लाला रामजीलाल के घर में रहते कोई दो हफ़्ते बीत चुके थे। हमारे कपड़े मैले-चीकट हो चुके थे और अब फटने भी लगे थे। हमें अपने साथ दूसरे कपड़े लाने का मौक़ा ही नहीं मिला था। नये कपड़े हम तभी पहन सकते थे अगर हम हिन्दुस्तानी पहनावा अपना लेते। आख़िर माँ ने ललाइन के कुछ पेटीकोट और हल्के शाल उधार माँगे जिसे हमारे नाप के मुताबिक उसने सिल दिया। नये कपड़े जब मैले हो जाते तो इन्हें हमें आँगन में ही सुखाना होता था और जब तक ये लगभग आधे सूख नहीं जाते थे, तब तक हम चादर ओढ़कर वहीं खड़े रहते थे।

माँ ने हिंदुस्तानी नामों को अपनाने की समझदारी भी बरती थी। मेरा नाम अब खुर्शीद ('सूर्य' के लिए फ़ारसी शब्द) था। मेरी ममेरी बहन एनेट क़द की छोटी थी, इसलिए वह 'नन्नी' कहलायी। पीलू का नाम गुलाम हुसैन रखा गया और उसकी माँ गुलाम हुसैन की माँ कहलायी। नानी का नाम तो बड़ी-बी होना ही था। मुस्लिम नामों को अपनाने की वज़ह बहुत साफ़ थी क्योंकि हमलोग उर्दू बड़े इतमीनान से बोल लेते थे और नानी तो रामपुर के मुस्लिम परिवार से ही थी। बहुत जल्दी हम लोगों ने खुद को लाला के घर के रीति-रिवाज़ों में ढाल लिया था और हमारे पुराने जाननेवालों के लिए एकाएक यह पता लगा पाना बहुत ही मुश्किल होता कि हम ही लाबाडोर हैं।



लाला के घर का माहौल हँसी-मज़ाक़ से भी ख़ाली नहीं था। लाला के घर में उसके एक रिश्तेदार इमरत लाल की बीवी रत्ना भी वहीं रह रही थी। इमरत लाल छोटे क़द का आदमी था, जबकि रत्ना लंबी थी और बदसूरत मानी जाती थी। इमरत लाल को रत्ना से कोई औलाद नहीं हुई थी। कुछ समय बाद छोटी जाति की एक औरत से उसकी आशनाई हो गयी, जो इस परिवार में पानी भरने का काम करती थी। वह भी क़द की छोटी और हट्टी-कट्टी थी। इस औरत से उसे दो बेटे हुए थे और उसकी औलाद पाने की चाह पूरी हो चुकी थी। लेकिन इन दो बीवियों के आपसी झगड़ों ने उसका सुख-चैन छीन लिया था। उसे ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था और अपने आसमानी सितारों का रूझान देखकर वह एक दिन घर से भाग कर कहीं और किस्मत आज़माने चला गया। तब उसकी बीवियों ने आपसी मन-मुटाव भुलाकर सुकून के साथ रहने का फ़ैसला किया। पहली बीवी दर्जिन का काम कर अपना गुज़ारा करने लगी और दूसरी चक्की पीसकर। कभी-कभार उनमें चख-चख भी हो जाती थी। दूसरी बीवी पहली को जब बाँझ होने का ताना देती तो दर्जिन पलट कर जवाब देती, "जब तुम पानी भरती थी तो तुम्हारे हाथों तथा पाँवों में गाँठें थीं। चक्की पीस-पीसकर तुम्हारी उँगलियों में भी गाँठें पड़ गयी हैं। अब तुम्हें और कहाँ-कहाँ गाँठें पड़ रही हैं ?"

इस बीच इमरत लाल पूरी तरह जोगी और ज्योतिषी बन गया और हरिद्वार में अपने दिन आराम से गुज़ारने लगा। उसका अता-पता मिल जाने पर दूसरी बीवी ने एक चिट्ठी उसके नाम लिखवा ली और वही चिट्ठी वह मुझसे पढ़वाने के लिए लायी थी क्योंकि मैं उर्दू जानती थी। चिट्ठी कुछ इस तरह थी :

"हे प्राणप्रिय, आप सरसों के तेल की तरह ग़ायब हो गये क्योंकि देह में समा जाने के बाद तेल की गंध ही बच रहती है; आपकी गोल-मटोल देह मेरी आँखों के सामने घूमती रहती है और मैं उल्लू की तरह सूनी आँखों से चारों तरफ़ घूरती रहती हूँ। क्या आप अब भी मेरी तरफ़ ध्यान नहीं देंगे क्योंकि मेरे इस ख़त से साबित हो जायेगा कि मैं अब भी आपकी याद में दीवानी हूँ। आप मुझे अपनी 'लाडो' क्यों कहा करते थे जबकि आपको मुझसे कोई प्यार था ही नहीं ? आप मुझे इस औरत के ताने सुनने के लिए क्यों छोड़ गये हैं जिसे आप बेमतलब 'रत्ना' कहा करते थे ? धोखेबाज़ कौन है—आप या मैं ? आपने मेरी भावनाओं के साथ खिलवाड़ क्यों किया ? या तो आप चुल्लू भर पानी में डूब मरिये या फिर फ़ौरन लौट आइये और मेरी सौत को अपने गले का हार बना लीजिए या फिर उसके पुतले को नौ बार अपनी बाँहों में ताबीज की तरह पहन लीजिए ताकि मेरा प्यार आपके लिए ख़त्म हो जाये।"

लेकिन उसे इस ख़त का कोई जवाब नहीं मिला। शायद इमरत लाल ने इसे पढ़ने के बाद अपनी जन्मकुंडली को दोबारा देखा हो और ऊपर पहाड़ियों में चले जाने का फ़ैसला किया हो। उसने यही सोचा होगा कि मेरा परिवार दरिया-दिल लाला रामजीमल के यहाँ पूरी तरह आराम से रह लेगा।

गर्मी काफ़ी तेज़ हो गई थी और इस वज़ह से अब सभी खुले आँगन में सोने लगे थे—लाला और उसके घर की सभी औरतें भी। हमलोग भी अब लाला के परिवार का ही एक अंग थे। हर कोई आराम से सोता लेकिन माँ दिन को तो आराम करती, पर रात को जागकर हम लोगों की निगरानी करती। रात-रात भर उसे बैठे हुए देखना बहुत तकलीफ़देह बात थी। वह पलकें न झपकाने का फ़ैसला कर इस काम को अंज़ाम दे रही थी। ख़तरों को पहले से ही ताड़ जाने की उसकी आदत पहले-सी ही बरक़रार थी। लाला हाथ जोड़कर उससे विनती करता : "मरियम, सो जाओ ! मैं अपनी ज़िम्मेदारी से चूक जाऊँ तो माथुर नहीं।" लेकिन उसका इसरार होता कि उसे एक चाकू ला दिया जाये, जो वह अपने सिरहाने रखेगी। लाला ने आख़िर उसे एक जंग लगा पुराना चाकू दे दिया था और माँ ने बड़ी मेहनत से साफ़ कर लेने के बाद उसकी धार तेज़ कर ली थी।

एक दिन ऐसा भी आया जब माँ ने चाकू इस्तेमाल करने की धमकी दी थी।

रात के दस बजे थे और माँ के सिवा सभी सोये हुए थे। वह अपनी चारपाई के पायताने बैठी हुई थी। मैं चारपाई पर लेटी अभी ऊँघ रही थी कि तभी माँ के नथुने में चमेली के फूलों की खुशबू आयी। यह बात हैरान कर देनेवाली थी क्योंकि घर के आस-पास चमेली की कोई लता न थी! तभी ऊँची दीवार की मिट्टी टूटकर नीचे गिरी और ऊपर देखने पर वहाँ हमें एक आदमी उस पर लेटा हुआ नज़र आया। थोड़ी दूर एक और आदमी भी हमें नीम की छाया में छिपा हुआ नज़र आया। यह पेड़ आँगन के एक कोने में उगा हुआ था। माँ ने अपने तकिये के नीचे से फ़ौरन चाकू निकाला और धमकी दी कि जो कोई हमारी तरफ़ बढ़ा, मैं उसका कलेजा निकाल लूँगी। उसके खूँखार तेवर को देखकर, जो किसी शेरनी का अपने बच्चों का बचाते समय होता है, दोनों चोर चुपचाप अँधेरे में ग़ायब हो गये थे।

इस हादसे के बाद हमें महसूस हुआ कि हम अब भी ख़तरे से बाहर नहीं हैं और हमारे यहाँ होने का औरों को पता लग गया है। कुछ दिनों बाद एक और हादसा हुआ, जिसके बाद हम लोग बेचैन हो गये।

हमारी दो नौकरानियों में से लाडो को, जो हमारे साथ चली आयी थी, लाला के घर के एक कोने में रहने की इज़ाज़त मिली हुई थी। उसकी बेटी तलवारों पर धार लगानेवाले के यहाँ ब्याही हुई थी। वह दंगों के बाद से ही लाडो को ढूँढ़ने की लगातार कोशिशें करता रहा था। यह अफ़वाह सुनने के बाद कि लाला के घर में कुछ फिरंगियों ने पनाह ली हुई है, उसने 23 जून को घर के सदर दरवाज़े के पास आकर लाला से बातें कीं।

"मुझे पता चला है कि मेरी सास यहाँ छिपी हुई है," उसने कहा। "मैंने सभी जगह पूछा था और लोगों का कहना है कि उन्होंने उसे आप के घर तक आते देखा था। लालाजी, आप मुझे अपनी सास को ले जाने दीजिए, नहीं तो मैं क़हर ढा दूँगा।"

लाला लाडो के बारे में साफ़ मुकर गया लेकिन वह आदमी अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और उसने घर की तलाशी लेने की ख्वाहिश जाहिर की।

"तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगे," रामजीमल ने कहा। "बदतमीज़, यहाँ से दफ़ा हो जाओ। तुमने ज़नाना में जाने की बात सोच कैसे ली ?"

वह आदमी गुस्से में पाँव पटकता हुआ वहाँ से चला गया लेकिन जाते-जाते नवाब को सारी बात बताने और सिपाहियों के साथ आने की धमकी भी दे गया। जब लाडो को इस घटना का पता चला तो वह कमरे में आकर माँ के पैरों में गिर पड़ी और फ़ौरन वहाँ से चले जाने की इज़ाज़त माँगने लगी ताकि उसका दामाद कोई नुक़सान न पहुँचा दे। उसने मुझे और मेरी ममेरी बहन को खूब असीसा और आँसू भरी आँखों से घर से विदा ली। बेचारी लाडो ! कितने साल उसने हमारी खिदमत की थी और हम सब-के-सब उसे चाहने लगे थे। उसने दुख के दिनों में भी हमारा साथ देकर हमारे दिल जीत लिए थे।

शाम को जब लाला घर लौटा तो उसने हमें बताया कि लाडो पर क्या बीती ! शहर में अपने दामाद के साथ उसका आमना-सामना हो गया था।

"तुम कहाँ थीं, माँ ?" उसने पूछा। "मैं तुम्हें सभी जगह ढूँढ़ता फिरा। अब अचानक तुम कहाँ से आयी हो ?"

"मैं अभी फतेहगढ़ से वापस आयी हूँ।" उसने बताया।

"क्यों, फतेहगढ़ जाने की तुम्हें क्या ज़रूरत थी ? और उन अंग्रेज़नों का क्या हुआ जिनके यहाँ तुम नौकरी करती थी ?"

"मैं क्या बताऊँ कि उनका क्या हुआ ?" लाडो ने जवाब दिया। "मेरा ख़याल है कि वे सभी मार डाले गये थे। किसी ने लाबाडोर मेम को खन्नौत में डूबते हुए देखा था।"

नवाब को जब पता चला कि हमारी पुरानी नौकरानी अचानक आ गयी है तो उसने उसे बुला भेजा और खोद-खोदकर उससे सवाल-जवाब किये। लाडो का यही कहना था कि उसे इस बात का पता नहीं है कि हमारा क्या हश्र हुआ था।

नवाब ने उसे बहुत क़समें खिलायीं। "मरी, तू मेरे साथ जुबान लड़ा रही है !" उसने कहा। "तुम्हें पता है कि वे कहाँ हैं, पर तुम बताना नहीं चाहती हो। मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि अगर तुम उनके बारे में खुलासे से नहीं बताओगी तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगा। सुन रही हो तुम ?"

"मेरे सरदार !" लाडो के सिर से पाँव तक कँपकँपी छूट रही थी तो भी उसने जवाब दिया, "जिसके बारे में मैं खुद नहीं जानती उसके बारे में कैसे बताऊँ ? यह सच है कि उस जलते मकान से मैं उन लोगों के साथ ही भागी थी लेकिन फिर वे कहाँ चले गये, मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानती।"

"चुड़ैल !" नवाब ने जल-भुनकर कहा, "यह मुझसे पाप करवाये बिना नहीं मानेगी। यह सरासर झूठ बोल रही है। तो ठीक है, इसे भी अपने मालिकों जैसी सज़ा दी जाये।"

दो आदमी दौड़कर उसके पास पहुँचे और लाडो को बालों से पकड़कर तलवार उसके गले पर रख दी। बेचारी औरत उनके हाथों में छटपटाती और तड़पती हुई, अपने को बेक़सूर बताती हुई, उनसे दया की भीख माँगती रही।

"सरदार, मैं आपके सर की क़सम खाती हूँ कि मुझे कुछ भी पता नहीं है।"

"तो तुम मेरे सर की क़सम भी खाती हो ?" नवाब ने गुस्से से कहा। "ठीक है, जब तुम्हें तलवार से भी डर नहीं लगा तो मैं मान लेता हूँ कि तुम्हें कुछ नहीं पता। इसे छोड़ दो।"

बेचारी लाडो डर से अधमरी हो चुकी थी। आख़िरकार उसे छोड़ दिया गया और फिर उसे वहाँ से चले जाने दिया।

6

एक और नवाब

24 जून को खूब ज़ोर-ज़ोर से नगाड़े पीटे जा रहे थे। हमें दूर से आती तुरही और नगाड़ों की आवाज़ सुनायी दे रही थी। दंगे भड़कने के बाद से ही हमने ये परिचित आवाज़ें सुनी नहीं थीं और अब हम अंदाज़ नहीं लगा पा रहे थे कि वहाँ हो क्या रहा है I सड़क पर खूब शोर-शराबा था और घोड़ों की टापें सुनायी पड़ रही थीं। हम बेचैन होकर लाला के घर लौटने का इंतज़ार करने लगे ताकि यह पता चले कि माजरा क्या है ?

"आज नये नवाब का एलान हुआ है !" उसने दरवाज़े से ही कहा।

"इसका मतलब ?" माँ ने पूछा। "हम लोगों पर इसका क्या असर पड़ेगा ?"

"अभी से कुछ कह पाना मुमकिन नहीं। गुलाम कादर ख़ान पहले नवाब जैसा ही आदमी है और दोनों एक ही ख़ानदान से भी हैं। दोनों ही कंपनी सरकार के ख़िलाफ़ हैं। हाँ, इतना फ़र्क़ ज़रूर है कि कादिर अली लुच्चा और बहुत-से मामलों में बेअसर था, जबकि गुलाम कादर ख़ान ताक़तवर और मज़हबी आदमी माना जाता है। उसने भी देश को फिरंगियों से आज़ाद करवाने का अपना फ़ैसला दोहराया है...

"जब गदर शुरू हुआ था, तब वह अवध में था और वहाँ वह गाँववालों को विदेशी जुआ तोड़ देने के लिए उकसाता रहा था। वह कादिर अली का ही साथ देता रहता अगर उनमें आपसी रंजिश न हो जाती। गुलाम कादर औरतों और बच्चों को मारने के हक़ में नहीं था। लेकिन कादर अली की ही चली, इसलिए गुलाम कादर कुछ समय के लिए उससे अलग हो गया था ताकि आगे आने वाले हादसों का अंदाज़ ले सके। अब सैकड़ों जमींदार उसकी तरफ़ आ गये हैं जिनमें निज़ाम अली ख़ान, विट्ठल सिंह, अब्दुल रऊफ़ और वह शैतान जावेद ख़ान भी शामिल है। कल वह शाहजहाँपुर में दाख़िल हुआ था और बिना किसी टकराव के उसने सरकार सँभाल ली थी। आज सुबह कोई नामी बाग़ी नये नवाब के

दरबार में आये थे। रात को नवाब के लिए एक जश्न मनाया जा रहा है।"

"क्या वह हमें तंग करेगा, लाला ?" नानी ने घबराकर पूछा। "हमारे जैसे बेक़सूर लोगों को मारकर उसे क्या मिल जायेगा ?"

"मैं पक्के तौर पर कुछ नहीं कह सकता, बड़ी बी," लाला ने जवाब दिया। "वह खुद को मशहूर करने के लिए पिछले नवाब की तरह कुछ काफ़िरों को मौत के घाट उतार सकता है। लेकिन शहर में अफ़वाह फैली हुई है कि उसके यहाँ कोई बड़ी ग़मी हो गयी है..."

"ऐसी क्या ग़मी हो सकती है ?" माँ ने पूछा। "क्या उसकी बीवी मर गयी है। लेकिन वह जब चाहे उसे दूसरी बीवी मिल सकती है, ख़ासतौर पर अब क्योंकि वह नवाब है। फिर उसकी ग़मी का हम पर क्या असर पड़ सकता है ?"

"इससे उसके काम करने के तरीक़े पर असर पड़ सकता है," लाला ने जवाब दिया। "अफ़वाह तो यह है कि उसकी जवान और खूबसूरत बेटी जीनत को उसका आशिक़ ले भागा है। वह कहाँ है, इस बात का किसी को पता नहीं है।"

"और उसका आशिक़ ?" दूसरों के इश्क़िया मामलों में आदतन उतावली दिखाते हुए माँ से पूछा।

"लोगों का कहना है कि कादिर अली का लड़का फ़रहत भी तभी से ग़ायब है। लोगों को शक़ है कि वही लड़की को भगा ले गया है।"

"अरे, फ़रहत को तो मैं जानती हूँ," माँ ने कहा। "वह खूबसूरत नौजवान अपने चितकबरे टट्टू पर शान से बैठा हमारे घर के आगे से अक्सर गुज़रा करता था। लेकिन इस बात का हमसे क्या लेना-देना ?"

"मैं उसी बात पर आ रहा था, मरियम," लाला ने कहा। "नवाब जैसे ही दरबार में अपने तख़्त पर बैठा कि कुछ भेदियों ने उसके पास आकर लाडो का पूरा क़िस्सा बयान किया था और यह सलाह भी दी थी कि मेरे घर की तलाशी ली जाये। उनका कहना था कि तुम्हारा कुनबा मेरे यहाँ छिपा हुआ है। ख़ैर, नवाब यह जानना चाहता था कि लाबाडोर साहिब का क्या हुआ क्योंकि उसका कहना था कि साहिब बहुत ही शरीफ़ और भले आदमी थे। जब उसे बताया गया कि दूसरों के साथ वह भी चर्च में मार डाले गये थे, तो नवाब ने कहा था, तो ठीक है। अब हमें उस परिवार की औरतों के पीछे पड़ने की ज़रूरत नहीं। मैं बेक़सूर लोगों की क़त्ल में शामिल नहीं होना चाहता'..."

"उसके इस फ़ैसले पर हम किस हद तक भरोसा कर सकते हैं ?" माँ ने पूछा।

"मुझे निज़ाम अली ख़ान ने बताया था कि नवाब ने अपनी बेटी से एक वायदा किया था कि वह फिरंगी औरतों और बच्चों पर अपना हाथ नहीं उठायेगा। मैं जानता हूँ कि यह बात काफ़ी अजीब लग सकती है लेकिन निज़ाम अली की ख़बर अक्सर सही होती है।"

"हाँ, यह बात ठीक है," माँ ने कहा। "मेरे शौहर उसे अच्छी तरह जानते थे। हमने उसका घर बहुत सालों तक किराये पर लिया था और इसका किराया भी हम ठीक वक़्त पर दे दिया करते थे।"

"ख़ैर, नवाब उसे चाहता है," लाला ने कहा। "नवाब ने उसे तोपों की ढलाई का आर्डर दिया है। अगर नवाब निज़ाम अली जैसे लोगों पर भरोसा करता है तो लोगों से जुड़े मामले कादिर अली ख़ान के मुक़ाबले कहीं बेहतर ढंग से निपटाये जायेंगे।"

हम अपनी रोज़ाना ज़रूरतों के लिए हमेशा लाला रामजीमल पर निर्भर रहते थे। हालाँकि माँ अपनी ज़ेवरों की पेटी के साथ कुछ रुपये भी लाने में कामयाब रही थी लेकिन वह बहुत हिसाब से ख़र्च करती थी।

एक दिन लाला ने हाथ जोड़कर कहा, "मरियम, मुझे कहते हुए शर्म आ रही है लेकिन मेरे पास रुपया-पैसा नहीं रहा है। कारोबार पूरी तरह से ठप्प पड़ा है और मेरे पास जो भी जमा पूँजी थी, वह मैं ख़र्च कर चुका हूँ।"

"परेशान होने की ज़रूरत नहीं, लाला," माँ ने कहा। अपनी पेटी से सोने का एक पतरा देते हुए उसने कहा, "यह सोना बाज़ार में ले जाकर बेच दो और जो मिले, ले आओ।"

लाला का दिल भर आया और साथ ही उम्मीद से कहीं ज़्यादा बड़ी सहायता पाकर वह खुश भी हो गया।

"मैं अभी बाज़ार जाता हूँ और देखता हूँ कि इसके बदले में कितना मिल जाता है," उसने कहा। "मेरा एक सुझाव है मरियम ! हमलोग बरेली चले जायें। मेरा वहाँ भाई रहता है और तुम्हारे कुछ रिश्तेदार भी वहीं हैं। इससे कम-से-कम यहाँ का किराया तो बचेगा। अगर तुम्हें मंजूर हो तो मैं दो गाड़ियाँ किराये पर ले आता हूँ। हम सभी आराम से चले जायेंगे।"

हम लोगों ने लाला का सुझाव फ़ौरन मान लिया और वह भी खुशी-खुशी बाज़ार की तरफ़ चला गया। उसे इस बात का रत्ती भर एहसास नहीं था कि हमें बचाने की उसकी इस तैयारी पर जल्दी ही पानी फिर जायेगा।

7

बन्दी

हमें लाला के यहाँ रहते हुए लगभग एक महीना बीत चुका था और उसके घर में रहने का यह आख़िरी दिन था। हम अपनी आदत के मुताबिक एक कमरे में जमा थे। तभी हमारा ध्यान बाहर से आती मर्दों की आवाज़ों की तरफ़ गया।

"दरवाज़ा खोलो !" किसी ने चिल्लाकर कहा और फिर दरवाज़े को ज़ोर-ज़ोर से पीटा जाने लगा।

हमने कोई जवाब न देकर एक-दूसरे की तरफ़ परेशानी भरी नज़रों से देखा। ललाइन, जो हमारे पास ही बैठी थी, उठकर कमरे से बाहर चली गयी और फिर उसने हमारे कमरे के दरवाज़े पर बाहर से कुंडी चढ़ा दी।

"दरवाज़ा खोलो, नहीं तो हम इसे तोड़ डालेंगे।" बाहर से आती आवाज़ ने हुक्म दिया। दरवाज़ा अब और भी ज़ोर से पीटा जा रहा था।

आख़िरकार रत्ना ने आगे बढ़ कर घर का दरवाज़ा खोल दिया और तलवारों और पिस्तौलों से लैस बीस-तीस आदमी अंदर घुस आये। जो आदमी सबसे ज़्यादा चिल्ला रहा था और उस टोली का सरगना लगता था, उसने हुक्म दिया कि घर की सभी औरतें छत पर चली जायें क्योंकि वह भगोड़े फिरंगियों को खोजने के वास्ते सभी कमरों की तलाशी लेगा। लाला के घर की औरतों के पास हुक्म मानने के अलावा कोई चारा न था और वे सभी छत पर चली गयीं। ये आदमी अब हमारे कमरे की तरफ़ बढ़े और हमें कुंडी उतारने की आवाज़ सुनाई दी। इन लोगों के सरगना ने ज़ोर से धकेल कर दरवाज़ा खोल दिया और हाथ में नंगी तलवार लिए अंदर दाख़िल हुआ।

"कहाँ है लाबाडोर की लड़की ?" उसने माँ की बाँह पकड़ कर और उसकी आँखों में घूरते हुए पूछा। "हाँ, यह नहीं है," उसने कहा और माँ का हाथ छोड़ दिया और फिर मेरी तरफ़ मुड़ा।

"यही लड़की है।" उसने कहा और मुझे हाथ से पकड़ रोशनी में, बाहर

आँगन में, घसीट कर ले जाने लगा। उसने ऊपर उठे दाहिने हाथ में तलवार पकड़ी हुई थी।

"ख़बरदार !" माँ ने गुस्से से कहा और भागकर मेरे आगे आ खड़ी हुई। "अगर तुम्हें मेरी बेटी की जान ही लेनी है तो पहले मेरी जान लो। तुम्हें अली की तलवार की क़सम है।"

उसकी फैली हुई आँखों में खून उतर आया था और वह पूरी तरह खूँख़ार दिखायी दे रही थी। मुझे लगा कि उठे हाथ में तलवार लिए आदमी की बजाय मैं ही ज़्यादा डर गयी हूँ। मैं जल्दी से लपककर माँ के साथ चिपट गयी और उस आदमी की गिरफ़्त से अपनी बाँह छुड़ाने की कोशिश करने लगी। वह मेरी माँ के इस तेवर से इतना मुतास्सिर हुआ कि उसने तलवार की नोक नीचे झुका ली और भारी आवाज़ में कहा कि अगर हमें अपनी जान प्यारी है तो हम दोनों उसके पीछे-पीछे आयें। नानी बदहवासी में अपने हाथ मल रही थी और बाक़ी लोग एक कोने में एक-दूसरे से चिपके बैठे रहे। हाँ, बाक़ी की औरतों ने हमारे बीच के इकलौते लड़के पीलू को अपनी शालों में ज़रूर छिपा लिया था। तलवार वाला आदमी माँ और मुझको आगे-आगे ले चला और उसके पीछे उसके सभी साथी चल पड़े।

जून का महीना ख़त्म होने को था और मानसून की बारिशें अभी शुरू नहीं हुई थीं। दोपहर हो चुकी थी और सूरज बड़ी बेरहमी से आग बरसा रहा था। ज़मीन सख़्त, सूखी और धूल भरी थी। हम लोग नंगे पाँव और नंगे सिर बंदी बनाने वाले के पीछे-पीछे चुपचाप चल रहे थे जैसे मेमनों को ज़िबह करने के लिए ले जाया जा रहा हो। दूसरे लोगों ने हमें चारों तरफ़ से घेरा हुआ था और उनकी तलवारें धूप में चमक रही थीं। हमें इस बात का कुछ भी अंदाज़ नहीं था कि हमें कहाँ ले जाया जा रहा है या फिर हम पर क्या बीतने वाली है।

क़रीब आधा मील चलने के बाद, गर्म सड़क पर चलते रहने से, हमारे पाँवों में छाले पड़ चुके थे। हमें बंदी बनाने वाले एक छोटी मस्जिद के पास इमली के एक पेड़ के नीचे आकर रुक गये। उन्होंने हमें आराम करने के लिए कहा। हमने कहा कि हमें प्यास लगी है तो पीतल के एक लोटे में हमें थोड़ा पानी दिया गया। उत्सुक से दीख रहे लोगों की भीड़ हमारे चारों तरफ़ जमा हो गयी थी।

"ये फिरंगी लाला के यहाँ छिपे हुए थे ! अब कितने मासूम लग रहे हैं। पर इनमें से एक जवान है। इसकी आँखें कितनी सुंदर हैं। ग़ौर किया—इसकी

आँखें अपनी माँ पर हैं !"

भीड़ में एक पीर भी था। उसने हमें बंदी बनाने वाले के कंधे को छुआ और कहा, "जावेद, तुम इन बेचारों की खस्ता हालत का इस तरह मज़ा ले रहे हो ! तुम वायदा करो कि इनके साथ न तो कोई बुरा सुलूक करोगे और न ही इन्हें मारोगे।"

"ओह, तो यह जावेद ख़ान है," माँ ने फुसफुसाकर कहा।

जावेद ख़ान ने, जिसका चेहरा अब भी ढँका हुआ था, तलवार को अपने मुँह के आगे लाकर कहा, "मैं अपनी तलवार की क़सम खाकर कहता हूँ कि न तो मैं इनके साथ कोई बुरा सुलूक करूँगा और न ही इन्हें जान से मारूँगा !"

"इस बात को हमेशा याद रखना, जावेद," पीर ने कहा। "तुमने ऐसी क़सम खायी है जो पठान कभी नहीं तोड़ेगा। इन दोनों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचना चाहिए, नहीं तो तुम ज़िंदा नहीं बचोगे !"

"इसके लिए आप कोई फ़िक्र नहीं करें !" जावेद ख़ान ने जवाब दिया और हमें उठने का इशारा किया।

हम पहले की ही तरह उसके पीछे-पीछे चलने लगे और हमें घूरती भीड़ वहीं रह गयी। हम पठानों के एक तंग मोहल्ले जलालनगर की तरफ़ बढ़ रहे थे। कई गलियों में से गुज़रने के बाद हम एक ऐसी खुली जगह पर पहुँचे जिसके एक कोने में घोड़ा बँधा था। जावेद ख़ान ने घोड़े की पीठ थपथपायी और अपने घर का दरवाज़ा खोलकर हमें अंदर जाने के लिए कहा। वह हमारे पीछे आ रहा था। आँगन में हमें एक औरत झूले पर बैठी दिखायी दी। वह हमें देखकर हैरान हुई थी।

"ये फिरंगिने हैं," जावेद ख़ान ने कहा। फिर वह दरवाज़ा बंद करता हुआ आँगन के दूसरी तरफ़ बेफ़िक्री से चला गया।

कुछ देर बाद एक बुजुर्ग औरत माँ के पास आयी।

"डरो नहीं," उसने कहा। "बैठ जाओ और थोड़ा आराम करो।"

8

जावेद ख़ान

नहा-धोकर नये कपड़ों में जावेद ख़ान ज़नानख़ाने में वापिस लौटा और अपनी बीवी की तरफ़ मुख़ातिब हुआ।

"मेरी ये फिरंगने कैसी लगीं ? मैंने कहा था न कि जब तक मैं इन्हें ढूँढ़ नहीं लेता तब तक आराम से नहीं बैठूँगा। कोई और होता तो कब का थक-हार कर बैठ गया होता !" इस तरह खुश होकर वह कलेवा करने के लिए बैठ गया। उसे पीढ़ी पर कलेवा परोसा गया था।

उसकी चाची, वह बुजुर्ग़ औरत जिसने सबसे पहले हमारी अगवानी की थी और जिसे सब कोठीवाली कहते थे, माँ से नरम लहज़े में बोली।

"मुझे सुनाओ," उसने कहा, "मुझे अपनी कहानी सुनाओ। तुम आख़िर कौन हो ?"

"जो हम हैं, वह तुम खुद ही देख रही हो," माँ ने जवाब दिया। "आज हम दूसरों के भरोसे हैं, तुम्हारे रिश्तेदार की दया पर हैं और वह जब चाहे, हमें मौत के घाट उतार सकता है।"

"तुम अभागों की जान कौन ले रहा है ?" जावेद ख़ान ने टोकते हुए कहा।

"नहीं, नहीं, मैं जब तक यहाँ हूँ, तुम लोग पूरी तरह हिफ़ाज़त से हो," कोठीवाली ने कहा। "तुम बिना किसी डर के बातें करो। तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारे साथ इस लड़की का नाम क्या है ?"

"यह मेरी इकलौती बेटी है। नाम है खुर्शीद। मेरा नाम मरियम है और मेरे ख़ानदान को रामपुर में हर कोई जानता है। मेरे वालिद वहाँ के नवाब के वज़ीर थे।"

"कौन-सा रामपुर ?" जावेद की बीवी ख़ान बेगम ने पूछा।

"रोहिलों का रामपुर," माँ ने जवाब दिया।

"ओह, वो रामपुर !" ऐसा लगा कि माँ के ख़ानदानी घराने की बात का ख़ान बेगम पर ख़ासा असर पड़ा।

"यह मेरी इकलौती बेटी है," मेरी तरफ़ प्यार भरी नज़रों से देखते हुए माँ ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "यह एक अंग्रेज़ की औलाद है। जिस दिन गदर शुरू हुआ, उसी दिन चर्च में उसका क़त्ल कर दिया गया था। अब मैं विधवा हूँ और मेरी बेटी बिना बाप की है। हमारी ज़िंदगी लाला रामजीमल के रहम के चलते बच गई और हम लोग उसके घर में ही रह रहे थे, जब तक तुम्हारा रिश्तेदार हमें ज़बरदस्ती वहाँ से निकाल नहीं लाया। मेरी माँ और दूसरे रिश्तेदार अब भी वहीं हैं। अल्लाह ही जानता है कि हमारा क्या होगा ! हमारी हिफ़ाज़त करनेवाला कोई भी नहीं रहा है।"

माँ अपने जज़्बातों को सँभाल नहीं सकी और वह रोने लगी। उसे रोता देख मैं भी अपना मुँह उसकी शाल में छिपाकर सुबकने लगी।

कोठीवाली का दिल भर आया। उसने अपना हाथ मेरे सिर पर रखते हुए कहा, "मत रो मेरी बच्ची, मत रो।" उसकी आवाज़ में दिलासा था।

माँ ने अपने आँसू पोंछे और फिर उस बुजुर्ग़ औरत की तरफ़ देखा। "हम पर बहुत मुसीबत आन पड़ी है, पठानी !" उसने कहा। "हमें हमारी जान बख़्शो और देखो हमारे साथ कोई बुरा सुलूक न हो, मैं तुमसे मिन्नत करती हूँ।"

जावेद ख़ान ने हमारे रोने-धोने से परेशान होकर कहा, "नेक औरत, तुम अपने दिमाग़ को ठंडा रखो। तुम्हारी कोई जान नहीं लेगा, मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ। असल में मैंने तुम्हारी बेटी को दूसरों के हाथ तबाह होने से बचा लिया है। मैं इसके साथ शादी करूँगा, जब भी तुम ठीक समझो तब।"

जावेद ख़ान की बीवी के हाथ से तश्तरी नीचे गिर पड़ी। उसने घूर कर अपनी बीवी की तरफ़ देखा। "ऐसी बेहूदी हरकत मत करो, काबिल !"

इससे पहले कि माँ कुछ कहे, कोठीवाली बोल उठी, "जावेद, तुम्हें यह नहीं कहना चाहिए था। ये दोनों एक ऊँचे ख़ानदान की हैं और इस वक़्त मुसीबतज़दा हैं। इन्हें देखो, ये कितनी हैरान और परेशान हैं। मैं कहती हूँ कि इन पर रहम करो और इन्हें घर लाकर इस तरह बेइज़्ज़त मत करो।"

"यह तो इन्हीं पर मुनहसिर है चाची," उसने जवाब दिया। "मेरे हाथों तो इन्हें सिर्फ़ रहम मिलता रहेगा। यह सच है कि अपनी पहले वाली शानो-शौक़त के बिना इनका बुरा हाल है।"

"मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुम्हारी पहचान इनसे कैसे हुई ?" कोठीवाली



ने पूछा। "क्या तुम्हारी बीवी ख़ान बेगम अच्छी बीवी नहीं है ? उसकी ख़ूबसूरत नाक तो देखो !"

"लेकिन मैंने ऐसा क्या कह दिया है ? और चाची," उसने चिल्लाकर कहा, "मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ कि इस लड़की ने तब से ही मुझ पर जादू किया हुआ है, जब वह अपने बाप के घर में थी ! जब पहली बार मैंने इसे देखा था, तभी से मैं इसकी खूबसूरती पर फ़िदा हो गया था। हालाँकि इसे देखकर मुझे यही बात ठीक लगती है कि फूल जितना टहनी पर सुंदर लगता है, वैसा कहीं और नहीं। उसे टहनी से तोड़ लो तो हाथ में आकर मुरझा जाता है। क्या कोई इस बात पर यक़ीन कर सकता है कि सिर्फ़ एक महीने पहले जब मैंने इसे देखा था तो यह एक परी-सी लगती थी ?"

मैं अंदर-ही-अंदर उबल पड़ी लेकिन न तो मैं कुछ कह सकती थी और न ही कुछ कर सकती थी—सिवा इसके कि मैं माँ से और अधिक चिपट जाऊँ और जावेद ख़ान की तरफ़ नफ़रतभरी निगाहों से देखती रहूँ।

ख़ान बेगम भी अपने अपमान के कड़वे घूँट भर रही थी लेकिन वह भी बेसहारा थी क्योंकि जावेद ख़ान का दूसरी बीवी करना नाजायज़ तो नहीं था।

"तुमसे ज़्यादा बेवकूफ़ कौन होगा जावेद, जो तुम एक बच्ची को उसके बाप से अलग कर रहे हो और एक ऐसे फूल को टहनी से तोड़ रहे हो जो अभी खिला भी नहीं !" खान बेगम ने कहा।

"तुमने क्या कहा काबिल ?" वह गुस्से से बोला। "ख़बरदार, अब दोबारा इसे दोहराने की कोशिश न करना। शैतान मेरे सीने में अभी तो सोया हुआ है मगर उसे जागने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा।"

उसने मुझे खा जानेवाली नज़रों से देखा और मैं उसके चेहरे से अपनी आँखें हटा नहीं सकी; मैं एक ऐसे नन्हें परिन्दे की तरह थी, जो किसी साँप की आँखों से बिंध जाता है। लेकिन माँ उसे ऐसे घूर रही थी जैसे उसकी काली छाया रूह की गहराइयों से निकलकर उसे झपट लेगी। लेकिन वह उसकी तीखी नज़रों के आगे शांत हो गया।

"मुझे एक आम क़ातिल की तरह मत देखो," उसकी आवाज़ में माफ़ी थी। "मैंने काफ़िरों की जानें ली हैं। मुझे इल्ज़ाम की बजाय शाबाशी मिलनी चाहिए।"

"अब खुद ही भड़क जाने की ज़रूरत नहीं," कोठीवाली हमारे बचाव में बोली। "मैं तुम्हें यह जताना चाहती थी कि तुम अगर किसी की खूबसूरती से इतने ही मुतमइन हो तो ख़ान बेगम न तो बदसूरत है और न काली ही। मैं

सोचती थी कि फिरंगी औरतों की आँखें नीली और बाल सुनहरे होते हैं लेकिन ज़रा देखो, ये बेचारी कितनी डरी हुई हैं। ये तो हम जैसी ही दिखायी दे रही हैं।''

''ठीक है, ठीक है,'' जावेद ख़ान गुस्से में गुर्राया। ''काबिल की खूबसूरती के कसीदे पढ़ने की ज़रूरत नहीं जैसे कि वह सचमुच ही खूबसूरत हो। अब इस बारे में कोई बात नहीं हो सकती। लेकिन चाची,'' उसने मेरी तरफ़ फिर देखा तो उसकी आँखें अब मुलायम हो गयी थीं, ''तुम्हें तो इस लड़की के बारे में अपनी राय तब देनी चाहिए थी, जब मैंने पहली बार इसे देखा था। यह लड़की हवा में हिलते एक गुलाब के फूल की तरह थी। एक हिरनी की तरह...''

''अब तुम अपनी बकवास बंद करोगे या नहीं ?'' कोठीवाली ने उसे टोकते हुए कहा, ''तुम इसे अब देखो और बताओ कि क्या उसी तरह की दिखायी दे रही है।''

''वल्लाह ! अब तो इसमें बहुत फ़र्क़ आ गया है।'' जावेद ख़ान हैरान होते हुए बोला और फिर से शाइरी के मूड में आ गया। ''यह वैसी नहीं है जैसे कि हुआ करती थी। एक महीने में ही वह बीस की लगने लगी है। मैंने जब लाला के घर में इसे बाँह से पकड़ा था तो लगा था कि फ़ौरन बेहोश हो जायेगी। लेकिन इसकी माँ को देखकर मुझमें कैसा ख़ौफ़ समा गया था, मैं उसका बयान नहीं कर सकता। एक ऐसी शेरनी की तरह, जो तीर से बिंध गयी हो, लपककर समाने आ खडी हुई थी और फिर मेरी तलवार क सामने अपना सीना तान कर खड़ी हो गयी थी। मैं उन नज़रों को नहीं भूल सकता जिन नज़रों से इसने मुझे लड़की को पीछे हटाते हुए देखा था। मैं ख़ौफ़ज़दा हो गया था। बिल्कुल पस्त ! मेरी हिम्मत छूट गयी थी। मेरे हाथ से तलवार गिरने-गिरने को थी। बेशक़ इसकी रग़ों में किसी बहादुर का खून दौड़ रहा है ! यह आम औरत नहीं है।'' फिर माँ की तरफ़ आदर से देखते हुए उसने कहा था, ''तुम पर खुदा की रहम हो !''

9

पठान की मेहमान

"मैं सोचती हूँ कि तुम और मैं अच्छी सहेलियाँ बन सकती हैं," कोठीवाली ने माँ से कहा। "मैं तुम्हारी बेटी को अभी से चाहने लगी हूँ। बेटी, मेरे पास आकर बैठो," उसने कहा और प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरने लगी।

जावेद ख़ान खाना खा लेने के बाद बाहर आँगन में चला गया था और अपनी बीवी और चाची को हमारे साथ खाने के लिए अकेला छोड़ गया था। हालाँकि हम भूखे और प्यासे थे लेकिन हमारा खाने को कुछ ख़ास मन नहीं था क्योंकि मेरी नानी और ममेरी बहन एनेट के भाग्य में क्या बदा था—मुझे अभी तक कुछ पता नहीं था। फिर भी हमने इतना तो खाया ही कि शरीर में ताक़त बनी रहे और जब जावेद ख़ान दोबारा आया तो वह इस बात से खुश था कि हमने उसके यहाँ का खाना खा लिया था।

"मेरा नमक खा लेने के बाद तुम यहाँ के लिए अजनबी नहीं रही।" उसने कहा। "तुम आगे के लिए अब इस घर को अपना घर ही समझो।"

"तुम्हारा ऐसा कहने के लिए शुक्रिया," माँ ने जवाब दिया। लेकिन कुछ और लोग भी हैं जो मुझ पर पूरा भरोसा करते हैं—मेरी माँ और मेरी भतीजी, और इनके बिना मैं जो कुछ भी खाती हूँ, मेरे मुँह में कड़वाहट घुल जाती है।"

"फ़िक्र मत करो, वे भी यहाँ आ जायेंगे," जावेद ख़ान ने कहा। "मैंने तुम्हारी बेटी को दंगों से बहुत पहले देखा था और मैं उस पर फ़िदा हो गया था। एक बदमाश उसे उड़ा ले जाने की फ़िराक़ में था और शायद वह ऐसा कर भी लेता अगर मैंने उसका इरादा भाँप न लिया होता। मैं अच्छी नीयत से ही तुम्हें यहाँ लाया हूँ। तुम्हारी रज़ामंदी के बाद ही मैं खुर्शीद से शादी करूँगा और उसे बीवी का दर्जा दूँगा।"

"पर तुम ऐसा कैसे कर सकते हो ?" माँ ने पूछा। "तुम्हारी पहले से ही एक बीवी है।"

"लेकिन मुझे एक से ज़्यादा बीवियाँ रखने से रोक कौन सकता है ? हमारे क़ानून में इसकी इज़ाज़त है।"

"हाँ, ऐसा होगा," माँ ने जवाब में कहा, "लेकिन तुम मुसलमान होकर एक क्रिस्तान लड़की से शादी कैसे कर सकते हो ?"

"ऐसा न करने की कोई वज़ह भी नहीं है," जावेद ख़ान ने जवाब दिया, "पठान किसी भी नस्ल या ईमान की औरत को अपनी बीवी बना सकता है। और—" कुछ देर रुककर, क्योंकि उसकी बीवी ने चिढ़कर 'ओह' कहा था—"मैं अपनी बीवी को इस मामले में दख़ल देने की भला इज़ाज़त कैसे दे सकता हूँ। क्या मेरे बाप ने छोटी जात की बड़ी-बड़ी और खूबसूरत आँखों वाली औरत से शादी नहीं की थी ? और उस शादी की बदौलत ही इस छोकरे सैफ़उल्लाह का जन्म हुआ था—उस पर गाज गिरे—और कोठीवाली भी, जिसे तुम यहाँ देख रही हो, छोटी जात की हिंदू औरत ही थी जिसने मेरे चाचा को लुभाकर अपने बस में कर लिया था। और अगर मैं किसी क्रिस्तान लड़की को बीवी बनाता हूँ तो इसमें हर्ज़ ही क्या है ?"

मेरी माँ के तरकस में अभी बेशुमार तीर बाक़ी थे, लेकिन यह वक़्त बहस करने का नहीं था; इस समय तो बचाव करने में ही भलाई थी।

"मुझे यक़ीन है कि तुम अपनी माँग के लिए मुझसे फ़ौरन जवाब की उम्मीद नहीं करते होंगे," माँ ने कहा। "मेरे खाविंद की अभी-अभी मौत हुई है और मुझे सलाह देनेवाला इस वक़्त यहाँ कोई नहीं है। इस बारे में हम किसी और दिन बात करें तो ही बेहतर रहेगा।"

"मुझे कोई जल्दी नहीं है," जावेद ख़ान ने कहा। "इतनी अहम बात का एक दिन में फ़ैसला लिया भी नहीं जा सकता। नेक औरत, तुम इसके लिए एक हफ्ते का वक़्त लो ! लेकिन इस बात को भी नहीं भूलना कि मुझे मोहब्बत का बुख़ार अचानक नहीं चढ़ा है। इस लड़की पर मेरी पहले से से ही नज़रें थीं। मेरा नाम जावेद ख़ान नहीं अगर यह मौक़ा मैंने हाथ से जाने दिया। वैसे तुम बेफ़िक्र रहो, मुझे कोई जल्दी नहीं है..."

और फिर वह दोबारा बाहर आँगन में चला गया। अब सुबह हमारे साथ जो कुछ हुआ था और जावेद ख़ान ने शादी की जो पेशकश रखी थी, इससे मुझे दिन भर सोचने का भरपूर मसाला मिल गया था। हमारे लिए बरामदे में एक खाट डाल दी गयी थी। मैं उसी पर पीठ के बल लेटी हुई छत पर दो छिपकलियों को शिकार करते देखती रही। माँ कोठीवाली के पास बातें करने में मशगूल थी। उसकी ख़ालिस उर्दू, तहज़ीब और नफ़ासत और इन्सानी जज़्बातों

गा कोठीवाली का दिल भर आया था। वह माँ को लेकर बेहद खुश थी और हमारे लिए उसके जी में बेपनाह दरियादिली थी। वह कुछ ही दिनों के लिए जावेद के घर आयी थी और अब वापिस जाने को उसका मन् न था।

"तुम मरियम को मेरे साथ जाने दो ताकि वह कुछ दिन हमारे यहाँ रह सके," उसने अपनी भतीजी से कहा।

"और उसकी लड़की का क्या होगा ?" ख़ान बेगम ने जवाब दिया। "क्या वह अकेली यहाँ रहेगी ?"

"बिल्फ़ुल नहीं ! वह भी अपनी माँ के साथ जायेगी। काबिल, तुम्हें इन बातों से परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। जावेद इन दिनों सिरफिरा हो रहा है, पर वह जल्दी ही ठीक हो जायेगा। इन ग़रीबों पर कोई इल्ज़ाम लगाना ठीक नहीं। मरियम, तुम मेरे साथ चलोगी न ?"

"बड़ी खुशी से," माँ ने कहा। "अगर हमें जाने दिया गया तो !"

हम नानी और दूसरों के बारे में फ़िक्र कर ही रहे थे कि सदर दरवाज़े से हमें झगड़ा होने की आवाज़ें सुनायी पड़ीं। हमने अपने दोस्त और मुहाफ़िज़ लाला रामजीमल की आवाज़ पहचान ली थी। वह हमें खोजने में कामयाब हो गया था और अब हमसे मिलने की ज़िद कर रहा था।

"ख़ान साहेब !" हमने उसे जावेद ख़ान से यह कहते हुए सुना। "मेरी ग़ैर-हाज़िरी में घर में घुसना और मेरे मेहमानों को बिना इज़ाज़त ले आना बिल्कुल ग़लत था। अगर मैं वहाँ होता तो मेरी लाश पर क़दम रख कर ही अंदर जा पाते।"

"यही वज़ह है कि मैं तब पहुँचा जब तुम वहाँ नहीं थे," जावेद ख़ान ने जवाब दिया। "तुम्हारी ज़िंदगी लेने की मेरी कोई ख़्वाहिश नहीं थी।"

"मैं माथुर नहीं अगर मैंने उनकी हिफ़ाज़त न की होती। इन्हें वापिस मेरे घर भेजने के लिए मैं ज़बरदस्ती तो नहीं कर सकता, पर कम-से-कम मुझे उनसे मिलने तो दो ताकि मुझे पता चल सके कि उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है या नहीं। मैं उन्हें अलविदा भी कहना चाहता हूँ।"

माँ ने दरवाज़े के पास जाकर लाला से बात की और ख़तरा उठाकर भी हमें मिलने के लिए आने का शुक्रिया अदा किया।

"जो प्रभु इच्छा होती है, वही होकर रहता है," लाला ने भाग्यवादी बनते हुए कहा। "हमारी कोई भी जुगत इसे टाल नहीं सकती थी। लेकिन सब्र रखो, शायद अच्छे दिन आगे देखने बदे हों। मैं तुम्हारे गहनों का बक्सा लौटाने के

लिए आया हूँ।''

माँ ने गहनों का बक्सा उसके हाथों से ले लिया लेकिन इसे खोलकर देखने की ज़रूरत नहीं समझी क्योंकि उसे पता था कि इसमें से कुछ भी ग़ायब नहीं हुआ होगा।

''जो सोना तुमने मुझे दिया था मैंने उसे बेच दिया था,'' लाला ने कहा, ''और उसकी कीमत भी साथ लाया हूँ—तीस रुपये। मैं बड़ी बी और नानी को शाम यहाँ छोड़ जाऊँगा। बाक़ी लोग कुछ और दिन मेरे साथ रह सकते हैं।''

''ओह, लाला !'' माँ ने कहा, ''तुम्हारे इस रहमोकरम का क़र्ज़ हम कैसे उतार सकेंगे ?''

''वक़्त आने पर इसका इनाम मुझे मिल जायेगा,'' लाला ने कहा। ''लेकिन तुम्हारे कुत्तों का क्या होगा ?''

''उन्हें अपने पास रखो या तुम जैसा चाहो वैसा करो। हमें तो अपनी ही देखभाल करने में मुसीबतें आ रही हैं।''

''ठीक है,'' उसने कहा। ''मैं उन्हें भी अपने साथ बरेली ले जाऊँगा और तुम्हारी ख़ातिर उन्हें पालूँगा।''

उसने झुककर माँ को नमस्कार किया और हमसे विदा लेकर चला गया। हमने इसके बाद उसे कभी नहीं देखा।

बाद में हमने सुना कि लाला अपने परिवार को बरेली ले गया था। उसके साथ हमारा पुराना नौकर धानी भी था। हमें यह पता नहीं चल सका कि हमारे कुत्तों का क्या हुआ ? उस शाम जावेद ख़ान खुद लाला के घर जाकर नानी तथा एनेट को ले आया था और हमें देखकर उनकी खुशियों का ठिकाना नहीं रहा था। मेहमाननवाज़ी के मुताबिक़ उनके आते ही खाना परोसा गया था।

आठ लोगों में से अब हम चार ही रह गये थे। पीलू, उसकी माँ और चंपा लाला के घर रह गये थे। हमें काफ़ी बाद में पता चला कि उनके साथ क्या बीती। जावेद ख़ान चौदह साल के फिरंगी लड़के को अपने घर नहीं लाना चाहता था। यह अच्छा ही हुआ कि पीलू वहीं रह गया वरना जावेद ख़ान के घर के पास के मोहल्ले में रहनेवाले किसी गर्दनमार के हाथों उसकी मौत ज़रूर हो जाती।

10

पीलू की तकदीर

अब तक की घटनाओं को एक साथ पिरोने के लिए यह ज़रूरी है कि मैं परिवार के उन तीन लोगों के बारे में भी लिखूँ, जो लाला के घर में रह गये थे।

जब लाला और जावेद ख़ान अपनी पनाह में नानी और एनेट को लेकर घर से बाहर निकले तब कुछ देर बाद ही पठानों के एक और गिरोह ने वहाँ हमला बोल दिया। इस गिरोह का सरगना मंगल ख़ान था। वह ज़बरदस्ती घर के अंदर घुस गया और लाला के घर की सभी औरतें पहले की तरह छत पर चली गयीं ; पीलू, उसकी माँ और चंपा ने खुद को कमरे में बंद कर लिया।

"वह फिरंगी नौजवान कहाँ हैं," मंगल ख़ान ने चिल्ला कर कहा। "उसे बाहर निकालो ताकि दूसरों की तरह उसका भी फ़ैसला किया जा सके।"

यह समझ लेने के बाद कि बचने का अब कोई चारा नहीं है, पीलू की माँ बाहर निकली और मंगल ख़ान के पैरों पर गिरकर मिन्नतें करने लगी कि उसके बेटे की जान बख़्शी जाये।

"तुम्हारा बेटा !" उसने कहा और फिर शक़ की नज़रों से सिर से पाँव तक उसे देखने लगा क्योंकि उसका रंग साँवला था। "अच्छा, देखें तो सही कि यह नौजवान कैसा है ?"

सजा-धजा पीलू बाहर निकला। वह किसी कायस्थ लड़के की कार्टूनी नक़ल लग रहा था। उसने पतलून और कमीज़ पहनी हुई थी। उसके पाँवों में न तो मोजे थे, न जूते और न ही सिर पर टोपी। उसका चेहरा और उसका गोरा रंग उसकी चुग़ली खा रहे थे।

"यह तो मेरे कंधों तक भी नहीं आता," उसके नज़दीक खड़े होते हुए मंगल ख़ान ने कहा। "तुम्हारी उम्र क्या है ?" उसने सख़्ती से पूछा।

पीलू बुरी तरह काँपने लगा और कोई जवाब नहीं दे सका। उसने अपनी माँ की तरफ़ देखा। उसकी माँ ने हाथ जोड़कर जवाब दिया, "तुम्हारा यह गुलाम

चौदह साल से ज़्यादा नहीं है, ख़ान साहिब ! मैं तुमसे भीख माँगती हूँ, खुदा के वास्ते इसकी जान बख़्श दो ! मेरे साथ चाहे जो सुलूक करो लेकिन इस लड़के को छोड़ दो।'' पीलू की माँ की आँखों में आँसुओं की झड़ी लगी थी और वह दोबारा उसके पाँवों पर झुक गयी।

पठान का दिल बार-बार की जानेवाली इस मिन्नत के आगे पिघल गया था।

''ऐ औरत, उठ !'' उसने कहा, ''मैं जानता हूँ कि यह लड़का अभी छोटा है और हमें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। क्या तुम दोनों मेरे साथ चलोगे ? एक बात याद रखना कि दूसरे लोग मेरी तरह नरमदिल नहीं हैं।''

लाला का घर अब छिपने के लायक़ नहीं रह गया था और पीलू की माँ मंगल ख़ान के साथ जाने के लिए राज़ी हो गयी। इस तरह उन दोनों के साथ-साथ चंपा भी पठानों के एक और मोहल्ले की तरफ़ बढ़ चले और मंगल ख़ान के घर में उनका भरपूर स्वागत किया गया।

मंगल ख़ान बड़ा रहमदिल था। इन भगोड़ों को एक बार पनाह देने के बाद वह उनके साथ बड़ी दरियादिली और खुलूस से पेश आया था। वह पीलू को उसके नये नाम गुलाम हुसैन से ही पुकारता था और उसकी माँ गुलाम हुसैन की माँ कहलायी। चंपा बेशक़ चंपा ही रही। वह राजपूत लड़की थी और उसे किसी और तरह से पुकार कर किसी को धोखा देना संभव नहीं था।

पीलू और उसकी माँ ने मंगल ख़ान की पनाह में रहना जारी रखा। उनके साथ क्या-क्या बीती, इसकी जानकारी काफ़ी बाद में मिली—लाला रामजीमल का घर छोड़ आने के कई महीनों बाद !

11

ख़तरे के संकेत

अब इस बात को भुला देने में ही हमारी भलाई थी कि हमारी नसों में यूरोपियन खून दौड़ रहा है और अंग्रेज़ों के दोबारा हुकूमत में वापिस आ जाने से हमें कोई फ़ायदा होगा। हमारे लिए यह भुला देना भी ज़रूरी था कि क्रिश्चियन खुदा ही हमारा खुदा है; साथ ही यह भी कि हम लोगों के इस यक़ीन को न तोड़ें कि हम मुसलमान नहीं हैं। कोठीवाली ने अक़्सर हमें कलमा पढ़ने का तरीक़ा सिखाना चाहा लेकिन माँ का जवाब होता कि हमें तरीक़ा आता है और यह बात पूरी तरह सच भी थी। जब उसे दूसरों के साथ नमाज़ अदा करने के लिए कहा जाता तो उसका बहाना होता : ''हम ऐसा कैसे कर सकते हैं ? हमारे कपड़े मैले हैं और हमारे पास दूसरा जोड़ा कोई है नहीं।''

हमारे पास वही कपड़े थे, जो लाला रामजीमल के घर से हमने लिये थे। जावेद के घर में रहते हुए जब हमें तीन दिन बीत चुके तो जावेद की नज़र भी इस तरफ़ गयी।

अगले दिन उसने कहा, ''मेरे घर में इस तरह का लिबास नहीं चलेगा, मरियम ! तुम्हें पाजामा पहनना होगा।''

''भला मेरे पास ऐसी कौन-सी जायदाद है कि मैं पाजामे बनवा सकूँ ?'' माँ ने पूछा।

उसी दिन जावेद ने बाज़ार से काली छींट ख़रीद कर माँ के हवाले की। उसने हमारे लिए पाजामे और कुरते-दुपट्टे बना दिये। माँ ने कपड़ा काटा। एनेट और मैंने मिलकर सिलाई कर ली। ख़ान बेगम यह देखकर हैरान थी कि माँ इतनी अच्छी तरह कपड़ा काट सकती थी और एनेट और मैं सुई के काम में इतनी होशियार थीं।

नयी पोशाक महनने से पहले माँ ने बता दिया कि हमें गुसल की सहूलियतें दी जायें। मेरा ख़याल है कि हम एक महीने से नहाये नहीं थे क्योंकि लाला

के घर में पानी का कोई जरिया ही नहीं था; उसके घर की औरतें रोज़ सुबह नदी में नहाने जाती थीं लेकिन हमारे लिए बाहर निकलना बेहद ख़तरनाक होता।

जावेद ख़ान के घर के आँगन के ठीक बीचोंबीच एक कुआँ था और हमारे लिए ठंडे पानी से नहा पाना आसान था। माँ ने उस घर की नाइन ज़ेबन को पानी खींचने तथा हमें नहलाने में मदद करने के लिए कहा और साथ ही उसे चार पैसे—एक आदमी के लिए एक पैसा—ईनाम में देने की बात भी कही। ज़ेबन इस अचानक मिलनेवाले फ़ायदे की बात सोचकर बेहद खुश थी। उसनें बराबर में कई खाटें साथ-साथ खड़ी कर दीं और उस पर चादरें डालकर पर्दा-सा बना दिया। कोठेवाली यह सुन चुकी थी कि हम पोशाक बदलेंगे और गुसल भी करेंगे। यह ऐसी ख़बर थी कि वह हड़बड़ाती हुई यहाँ चली आयी थी और गुसल में हमारी मदद करने का पक्का इरादा किये हुए थी।

यह 2 जुलाई थी और सेहत के ख़याल से भी हमारी ज़िन्दगी में यह एक अहम दिन था।

कोठीवाली ने अपने हाथों से हमारे ऊपर पानी उंडेलने की बात कही। इसके लिए माँ ने सख़्त एतराज किया। उसका कहना था कि हमारे यहाँ दूसरों को नंगा देखने का रिवाज़ नहीं है, भले ही औरतें औरतों के बीच नहा रही **हों**, इसलिए वह कोठीवाली को तकलीफ़ नहीं देगी।

कोठीवाली परेशान हो उठी। "लेकिन तुम लोगों का पाक गुसल कैसे पूरा होगा और तुम लोग कैसे पाक होंगे," उसने ज़ोर देकर कहा, "अगर कम-से-कम तीन लोटे कलमा पढ़ा पानी तुम पर नहीं डाला जाता ?"

माँ के पास भी जवाब तैयार था। उसने कहा कि हम तीनों कलमा पढ़ना जानती हैं और आख़िरी तीन लोटे बदन पर डालते वक़्त हम इस बात को याद रखेंगी। इस तरह इस झंझट से छुटकारा पाकर हमने नहाया- धोया और उसके बाद नयी पोशाक पहन ली, जो हमें बिल्कुल ठीक आयी।

इसके बाद हमने अपने बाल सूखने के लिए खोल दिये। वहाँ जितनी भी औरतें हाज़िर थीं, फ़ौरन उन सभी के मुँह से तारीफ़ के बोल फूट निकले। इतने खूबसूरत लंबे बाल ! और मेरे घूँघर को देखकर—मेरे बाल बहुत लंबे नहीं थे लेकिन काफ़ी घुँघराले थे—मेरे 'घूँघर' वाले बालों की खूबसूरती का बखान हुआ। माँ और नानी के बाल सचमुच ही बेहद खूबसूरत थे। नानी के बाल एड़ियों को छूते थे; माँ के बाल भी घुटने से कुछ नीचे ही जाते थे। एनेट के बाल मेरी ही तरह कमर तक लंबे थे लेकिन बहुत घने थे। चोटी कर लेने के बाद ये किसी मोटी औरत की बाँह जैसे दिखायी देते थे। जब हम अपने बालों को सुखाने के

लिए बैठीं हुई थीं, तब औरतें मुँह खोले हमें ताक रही थीं। हमने यह बताया कि मेरी माँ जिस घराने से हैं, वहाँ की औरतें अपने लंबे और घने बालों के लिए खूब जानी जाती रही हैं।

इतने घने बालों में तेल डालने का मसला भी उठा और ख़ान बेगम ने पूछा कि हम कौन-सा तेल डालती हैं। माँ ने कहा कि हम नारियल का तेल इस्तेमाल करती हैं। लेकिन यह कोई नहीं जानता था कि इतना सारा नारियल का तेल कहाँ से मिलेगा ? आख़िर ख़ान बेगन ने ज़ेबन को एक पैसा दिया और बाज़ार से मीठा तेल लाने के लिए कहा। उसने सींग की बनी एक कंघी भी भिजवा दी। नानी ने माँ के सिर में तेल डाला और उसकी कंघी कर दी और माँ ने मेरे, एनेट और नानी के बालों में तेल डालकर कंघी कर दी।

अगली सुबह हम लोग खुद को बहुत ही खुश तथा ताज़ादम महसूस कर रहे थे। हमने अब दूसरा सूट सिलने की तैयारी शुरू कर दी जो हम अगले शुक्रवार को, गुसल करने के बाद पहनने का इरादा रखते थे। इसी दिन ज़्यादातर पठान औरतें गुसल करती हैं।

जावेद ख़ान से मिलने के लिए दस बजे के आसपास उसका बहनोई सरफराज़ ख़ान वहाँ आया। यह आदमी पुलिस में कांस्टेबिल था और गदर छिड़ जाने के बाद रिटायर होकर घर बैठ गया था। उस समय के रिवाज़ के मुताबिक़ वह तलवार, पिस्तौल, चाकू और दुनाली बंदूक़ से लैस था। जब दरवाज़े के पास वह जावेद ख़ान के सामने हुआ, तब वह काफ़ी उतावला दीख रहा था।

"क्या तुम उन फिरंगनों को अपने घर ले आये हो, जावेद ?" उसने पूछा। "क्या तुम उन्हें मुझे न दिखाओगे ?"

"तुम उन्हें ज़रूर देखोगे," जावेद ने जवाब दिया, "और तुम मेरी खूबसूरत पसंद की दाद भी दोगे।"

अपनी पिस्तौल पर हाथ रखे और दाढ़ी वाले ख़ौफ़नाक चेहरे के साथ सरफराज़ बरामदे में दाख़िल हुआ। ख़ान बेगम ने उठकर उसे सलाम कहा और हमने भी वैसा ही किया। वह अपनी बंदूक़ के कुंदे को ज़मीन पर टिकाकर खाट पर बैठ गया और पठानों की ख़ास अदा में बंदूक़ की दुनाली को हाथ से पकड़े रहा।

"तो ये वही फिरंगने हैं जिनकी वज़ह से सारे मोहल्ले में खलबली मची हुई है !" उसने ग़ौर से हमें देखते हुए कहा।

जावेद ख़ान घर के अंदर चला गया था, इसलिए माँ ने ही हमारी तरफ़

से बातचात की।

"हमारी वज़ह से भला क्या खलबली मच सकती है ?" उसने कहा। "हम तो ग़रीब और बेसहारा लोग हैं।"

"इसके बावजूद हर कोई यही कह रहा है कि तुम अपनी बेटी के लिए खाविंद ढूँढ़ने की गरज से इस घर में घुस आयी हो और फिर जावेद ख़ान इस लड़की से शादी भी करने वाला है। तुमने इस ग़रीब औरत पर मुसीबत का पहाड़ क्यों लाद दिया है ?" उसने ख़ान बेगम की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

हालाँकि माँ को यह इल्ज़ाम सुनकर बहुत गुस्सा आ रहा था, पर उसने अपनी भावनाओं को कुचल दिया और शांति से ही उसे जवाब दिया।

"तुम क्या कह रहे हो भाई ? तुम जानते ही हो कि अगर हमें मजबूर न किया जाता तो हम इस घर में कभी दाख़िल नहीं होतीं। जावेद ख़ान हमें उस घर से यहाँ ज़बरदस्ती लाया है, जहाँ हमें हर तरह का सुख-चैन नसीब था और ऐसा उसने सिर्फ़ अपनी खुशी के लिए किया है। उसने जो हमारी खिदमत की, उसके लिए हम शुक्रगुज़ार ज़रूर हैं लेकिन जहाँ तक मेरी बेटी की शादी का ताल्लुक़ है, उसके बारे में मैं ज़्यादा कुछ कहना नहीं चाहती। हाँ, तुम्हारे भाई के हम शुक्रगुज़ार हैं कि वह हमें अपनी चाहत को पूरी करवाने के लिए हमसे कोई ज़बरदस्ती नहीं कर रहा।"

"इसके बावजूद सारे मोहल्ले में यही चर्चा है," सरफराज़ ख़ान ने कहा, "कि जावेद ख़ान का इरादा तुम्हारी बेटी से शादी करने का है और इस चर्चा से ख़ान बेगम को बेहद तकलीफ़ पहुँची है !"

"लोग क्या कहते हैं, इसके लिए भला हम ज़िम्मेदार कैसे हैं ?" माँ ने कहा। "हम ख़ान बेगम को इस मुसीबत से बचाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं।"

जावेद, जिसने बातचीत का ज़्यादातर हिस्सा सुन लिया था, पैर पटकता हुआ वहाँ आ खड़ा हुआ। वह गुस्सा दिखायी दे रहा था।

"भाई, तुम्हारा इस नेक औरत से इस तरह सवाल-जवाब करने का मक़सद क्या है ? तुम इनके साथ ऐसा सुलूक कर रहे हो जैसे वे ज़बरदस्ती यहाँ घुस आये हैं। मेरे सर की क़सम, इन पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं लगाया जा सकता। मैं ही इन्हें अपने घर में लाया हूँ और इसके लिए सिर्फ़ मैं ही जवाबदेह हूँ।"

"तुम अपनी नेक बीवी के लिए इस मुसीबत को यहाँ क्यों उठा लाये हो ?" सरफराज़ ने पूछा। "तुम्हारी इस बेवकूफ़ी भरी हरक़त से हमारे ख़ानदान के नाम

को बट्टा लग गया है।"

"मैं जानता हूँ कि तुम्हें किसने यहाँ भेजा है," अपनी छाती पर बाजुओं को रखते हुए जावेद ने जवाब दिया।

"हाँ, अब्दुल रऊफ़ ने मुझे यहाँ भेजा है ताकि मैं नदी किनारे ले जाकर इन औरतों का सर कलम कर दूँ। इससे तुम्हारी बीवी के सीने में जो आग जल रही है, वह भी ठंडी हो जायेगी।"

"किसी को भी यह बताने का हक़ नहीं है कि मैं अपने घर में क्या करूँ, क्या न करूँ," जावेद ने सख़्ती से कहा। वह तन कर सरफराज़ ख़ान के सिर के पास आन खड़ा हुआ। "अगर अब्दुल रऊफ़ समझदार होता तो वह अपने घर और घराने को पहले देखता, न कि दूसरों के मामले में टाँग अड़ाता। मैं उसकी कोई भी दखलंदाज़ी बर्दाश्त नहीं करूँगा। जहाँ तक काबिल का सवाल है, वह सरासर बेवकूफ़ है जो पड़ोसियों से इतनी ज़्यादा बतकही कर रही है। मुझे उसकी आज़ादी पर रोक लगानी होगी।"

गुस्से में भरे हुए दोनों पठान हाथापाई कर सकते थे या कुछ और ज़्यादा भी बुरा हो सकता था अगर माँ आगे बढ़कर इन दोनों के बीच न आ गयी होती।

"जहाँ तक हमारे सर कलम करने का सवाल है," उसने कहा, "वह ताक़त तुममें है, ख़ान साहिब, और हम शायद तुम्हें रोक भी न पायें। अगर अल्लाह की यही मर्ज़ी है कि हमारी मौत तुम्हारे हाथों हो तो यही सही। हाँ, मेरी तुमसे एक गुज़ारिश ज़रूर है कि अगर हमें मारना ही है तो बिना किसी को छोड़े सभी को मारें। मैं सिर्फ़ एक या दो को ही मारने की इज़ाज़त कभी नहीं दूँगी।"

सरफराज़ का दिल पिघल गया—एक तो माँ की हिम्मत देखकर और दूसरे इसलिए कि उसने अल्लाह का वास्ता देकर बात की थी। वह भी औरों की तरह उसके लिए रहमदिल हो उठा।

"तुम्हारा यक़ीन और हिम्मत काबिले तारीफ़ है," उसने कहा। "ख़ैर, इस ज़िम्मेदारी से मैं खुद को आज़ाद करता हूँ। मैं एक बेकार के काम पर भेजा गया था और एक औरत के पक्के इरादे के आगे अब इसे मुल्तवी करता हूँ।"

"अल्लाह की यही मर्ज़ी थी," जावेद ने कहा। "मुझे उम्मीद है कि तुम दोबारा ऐसी बेवकूफ़ी नहीं करोगे। अपने रिश्तेदारों की बातों में आकर अपना जी ख़राब क्यों करते हो ? यह उन्हीं का किया-धरा है, मैं शुरू से ही जानता था।"

12

निकाह के लिए दोबारा ज़ोर

सरफराज़ ख़ान के आने के दो या तीन दिन बाद, जब हम रात को खाना खा चुके थे, जावेद ख़ान कमरे में दाख़िल हुआ और वहाँ रखे तखत पर आराम से बैठ गया।

"मरियम, तुमने एक ख़ास मामले पर दोबारा बात करने का वचन दिया था और तुम जानती हो कि वह मुद्दा मेरे लिए कितना अहम है," उसने माँ से मुखातिब होते हुए कहा। "इस पर सोचने के लिए तुम्हें काफ़ी वक़्त मिल चुका है, और शायद अब तुम इस बारे में अपना आख़िरी फ़ैसला सुना सकती हो।"

"तुम किस बारे में बात कर रहे हो ?" माँ ने नक़ली मासूमियत से पूछा।

"मेरा मतलब उस मुद्दे से है कि मैं तुम्हारी बेटी से निकाह करूँगा।"

"मुझे इतना वक़्त ही नहीं मिला कि इस मामले पर मैं कोई फ़ैसला ले सकूँ," माँ ने कहा, "या फिर इस पर इतना ग़ौर कर सकूँ जितनी शिद्दत से करना चाहिए। अभी कल ही की तो बात है कि तुम्हारा भाई एक मिनट की भी इत्तिला दिये बिना हमें मारने यहाँ चला आया था। अगर तुम्हारी सरपरस्ती में भी हमें मार डाला जा सकता है तो शादी जैसे मसले पर बात करने का क्या फ़ायदा ? अगर मेरी ज़िंदगी ख़त्म कर दी जाती है तो मेरी बेटी की ज़िंदगी भी ख़त्म हो जानी चाहिए। वह और मैं जुदा नहीं हैं। सरफराज़ जैसा कोई और भी यहाँ पहुँचने के मनसूबे बना रहा होगा !"

"मेरे सर की क़सम, तुम जब ऐसी बातें करती हो तो मुझे गुस्सा चढ़ा देती हो !" जावेद ने चिल्लाकर कहा। "मैं बता दूँ कि अगर उसने तुम दोनों में से किसी एक पर भी हाथ उठाया होता तो उसे अपनी जान देनी पड़ती। जब तक तुम जावेद की छत के नीचे हो, तुम्हारा कोई बाल बाँका भी नहीं कर सकता। मैं आधा दर्जन लोगों के सर उड़ा दूँगा, इससे पहले कि कोई मेरी फिरंगनों के बाल भी छू सके।" उसने फिर इतनी चाहत भरी और खूँख़ार नज़रों से मुझे

देखा कि मैं डर से काँपने लगी और मैंने अपना चेहरा माँ की पीठ के पीछे छिपा लिया।

वह बहुत ज़्यादा गुस्से में था और उसे शांत करने के लिए माँ ने कहा, ''मुझे यक़ीन है कि तुम इतने ताक़तवर ज़रूर हो कि हमारी हिफ़ाज़त कर सको। मगर तुम उसी बात को दोबारा क्यों छेड़ रहे हो ?''

''क्योंकि यह बात हर वक़्त मेरे दिमाग़ में घूमती रहती है। इस बारे में और ज़्यादा देरी का मतलब ?''

''अगर तुम हमारे हालात और घराने के तारीख़ी दौर के बारे में जानते होते,'' माँ ने कहा, ''तो तुम समझ जाते कि मैं इस हालत में नहीं हूँ कि अपनी बेटी को तुम्हें सौंप दूँ।''

''ऐसा क्यों ?'' जावेद ने पूछा।

''मेरे भाई अभी ज़िंदा हैं। मैं उन्हें क्या जवाब दूँगी, जब उन्हें यह पता चलेगा कि मैंने अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दी है जबकि यह लड़की अभी बच्ची ही है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मेरा देवर अभी इस दुनिया में है और मुझे कोई भी फ़ैसला लेने से पहले इन लोगों की सलाह लेनी होगी।''

''हाँ, ऐसा करना ठीक होगा,'' जावेद ने कहा। ''लेकिन अब शायद तुम्हें ऐसे सवाल करनेवाला कोई न होगा क्योंकि अंदेशा इस बात का है कि बाक़ी फिरंगियों की तरह वे भी मार डाले गये होंगे।''

''मैं उम्मीद करती हूँ कि ऐसा नहीं होगा। क्या इसमें समझदारी नहीं कि अभी थोड़ा और इंतज़ार कर लिया जाये और किसी फ़ैसले पर पहुँचने के पहले यह तय कर लिया जाये कि वे सचमुच मर चुके हैं ?''

''मैं बहुत ही उतावला आदमी हूँ मरियम, और ज़िंदगी भी इतनी लंबी नहीं कि अपनी प्यास बुझाने के लिए मैं क़यामत तक इंतज़ार कर सकूँ। मैंने अपने को अब तक क़ाबू में इसलिए रखा है कि तुम्हारी ख़्वाहिशों की इज़्ज़त करता हूँ।''

''सोचो कि अगर अंग्रेज सरकार दोबारा हुकूमत में आ जाती है, तब हम क्या करेंगे ? तब तुम्हारी ज़िंदगी छोटी रह जायेगी और तुम्हारे मर-मरा जाने पर मेरी बेटी तेरह साल की उमर में ही विधवा हो जायेगी। क्या तुम कुछ महीने और इंतज़ार नहीं कर सकते, जब तक कि हम पक्के तौर पर यह नहीं जान लेते कि मुल्क का मालिक कौन होगा ?''

''यह सच है कि अंग्रेज़ अगर शाहजहाँपुर को दोबारा फ़तह कर लेते हैं तो वे गदर के सरगनों के मामले में कोई हमदर्दी नहीं दिखायेंगे। वे मुझे भी किसी

नज़दीक के पेड़ पर फाँसी चढ़ा देंगे। इसमें शक नहीं कि तुम उनके वापिस आने की उम्मीद लगाये बैठी हो वरना तुम ऐसे किसी अंदेशे की बात नहीं करती। लेकिन अब अंग्रेज़ बचे ही कितने हैं ? कुछ हज़ार ही होंगे जो दिल्ली की दीवारों के सामने अपने को बचाने के लिए ज़द्दोज़हद कर रहे हैं और उनका भी जल्द ख़ात्मा हो जायेगा। या खुदा !''

''तब दिल्ली को हमारी किस्मत का फ़ैसला करने दो,'' माँ ने तिनके का सहारा लेते हुए कहा। ''अगर अंग्रेज़ फ़ौज, जिसने दिल्ली पर घेरा डाला हुआ है, का ख़ात्मा हो जाता है तब ऐसे मामलों पर बातचीत करना मुनासिब होगा। फ़िलहाल, हम तुम्हारे भरोसे नहीं हैं और न ही तुम्हारे मातहत हैं। तुम्हें लड़ाई के नतीज़े तक इंतज़ार करना होगा।''

''तुमने बहुत दूर की बात कह दी मरियम, और तुम शायद यह भी भूल रही हो कि मैं चाहूँ तो तुम्हारी या किसी की भी मर्ज़ी के बग़ैर इसके साथ शादी करने की ताक़त रखता हूँ। इनमें,'' और उसने अपनी बीवी की तरफ़ चुनौती देने वाली नज़रों से देखा, ''एक जोड़ी जलन भरी आँखों की मालकिन भी शामिल है जो मुझे इस वक़्त घूर रही है।''

''क्या मैंने कहा है कि तुममें वह ताक़त नहीं है ?'' माँ ने पूछा। ''अगर तुम ज़बरदस्ती करते हो तो तुम्हें रोकने की ताक़त हमारे पास नहीं है। हाँ, इसमें तुम्हारी कोई मर्दानगी नहीं होगी अगर तुम बिना बाप की इस बच्ची को अपनी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए मजबूर करते हो तो इसमें भला क्या अच्छाई हुई ? जबकि तुम अगर दिल्ली से अंग्रेज़ों के खदेड़े जाने तक इंतज़ार करते हो तो मेरी इस बहस का कोई मतलब नहीं रहेगा। तब तक मेरी बेटी शादी की उम्र की भी हो जायेगी।''

''तुम खुशनसीब हो कि मैं एक मर्द हूँ। इसे जावेद के यहाँ से कोई नहीं ले जा सकता और वह जावेद की बीवी बनकर रहेगी। मैं इसे अच्छा दहेज भी दूँगा। अगर तुम मेरी सलाह मानो तो तुम्हें भी शादी करके फिर से घर बसा लेना चाहिए। तुम अभी जवान हो।''

''भला मैं शादी क्यों करूँ ?''

''तुम्हें शादी इसलिए करनी चाहिए ताकि तुम्हारा भी अपना एक घर हो और साथ ही खाने को भी मिलता रहे।''

''मैं शादी क्यों करूँ ?'' माँ ने दोबारा पूछा। ''मेरी बेटियों का क्या होगा ?''

''क्योंकि तुम्हारी बेटी मेरी हो जायेगी,'' जावेद ने चहकते हुए कहा। ''और जहाँ तक तुम्हारी भतीजी का ताल्लुक़ है, उसका भी बेड़ा पार हो ही जायेगा।

वह भी बदसूरत नहीं है, तुम तो जानती ही हो !"

उस शाम इसके बाद कुछ ख़ास बातचीत नहीं हुई। जावेद ख़ान इतमीनान से हुक्का गुड़गुड़ाता रहा। वह इस बात से बिल्कुल बेख़बर था कि उसने अपनी बातों से हर किसी के दिमाग़ में कैसी हलचल मचा दी थी ? किसी ने भी आपस में कोई बात नहीं की।

ख़ान बेगम का मुँह लटका हुआ था और जब भी उसकी निगाहें मुझ पर पड़तीं, वह लंबी साँसें भरने लगती। माँ ने जब मेरी तरफ़ देखा तो उसके मुँह से भी आह निकल पड़ी। मैं और एनेट एक-दूसरे की तरफ़ हैरानी से देखती रहीं।

जब हम अपने कमरे में जाने के लिए उठे तो ख़ान बेगम ने माँ का हाथ पकड़ लिया और भर्रायी हुई आवाज़ में उससे कहा, "मरियम, तुम मेरी माँ हो ! उसे मुझ पर और ज़्यादा दुख ढाहने से रोको। मैं पहले से ही बहुत दुखी हूँ। तुम वादा करो कि अपनी बेटी की शादी उससे नहीं करोगी।"

माँ ने जवाब दिया, "बीवी, तुमने सब कुछ देखा और सुना है। मैं तो ज़िंदों के हाथ मुर्दा हूँ। तुम बेकार में परेशान न होओ। अगर मेरी चली तो उसे मैं कभी इज़ाज़त नहीं दूँगी। लेकिन क्या वह मेरी इज़ाज़त का इंतज़ार करेगा ?"

"अल्लाह तुम पर रहम करे !" ख़ान बेगम ने कहा। "तुम्हारी बेटी को दूसरी बीवी बनने की बजाय कुछ बेहतर नसीब होना चाहिए। मैं दुआ करूँगी कि तुम्हारी मुराद पूरी हो !"

मैं उस रात अच्छी तरह सो नहीं सकी। पूरे चाँद की रोशनी सलाखों वाली ऊँची खिड़की से भीतर आ रही थी और खाट के पायताने पड़ रही थी। मैंने कुछ देर के लिए ही झपकी ली होगी लेकिन पपीहे की लगातार आती आवाज़ के चलते मैं सो नहीं सकी। एक बार मेरी आँखें खुलीं तो जावेद ख़ान को मैंने दरवाज़े के पास खड़े देखा था। चाँदनी में उसका चेहरा चमक रहा था। वह देर तक मुझे घूरता हुआ वहाँ खड़ा रहा था और मैं इतनी डरी हुई थी कि न तो हिल सकी और न ही किसी को पुकार सकी। फिर वह मुड़ा और चुपके-से वहाँ से चला गया। मैंने डर के मारे अपनी बाँहों को फैलाकर माँ के गले में डाल दिया और रात भर इसी तरह पड़ी रही।

13

नुमाइश

ख़ान बेगम अपनी ननद के यहाँ जब पिछली बार गयी थी तो उसने दोबारा जल्दी ही आने का वादा किया था। बृहस्पति को एक नौकर संदेश लेकर उसके पास आया, ''आपकी ननद ने सलाम कहा है और वह यह जानना चाहती हैं कि आप कब दोबारा तशरीफ़ ला रही हैं ?''

''उसे मेरा भी सलाम कहना,'' ख़ान बेगम ने जवाब दिया, ''और यह भी कहना कि मैं अब नहीं आ सकती। कुछ फिरंगिनें हमारे यहाँ रह रही हैं जिन्हें मेरे खाविंद घर ले आये हैं।''

बाद में एक और हरकारे ने आकर संदेश दिया कि ख़ान बेगम अपने साथ अपनी मेहमानों को भी ले आयें क्योंकि सारे रिश्तेदार इन्हें देखने की ख़्वाहिश रखते हैं। इस तरह हमारी मेज़बान ने सलाह दी कि हम उसकी ननद कामरान के यहाँ उसके साथ चलें।

हम चारों एक ही मैणा में बैठ गयी थीं : ख़ान बेगम, माँ, एनेट और मैं। नानी घर में ही रहीं।

मैणा पुराने ज़माने की पालकी को कहते हैं लेकिन इसका आकार छोटा होता है और इसे सिर्फ़ औरतें ही इस्तेमाल करती हैं। इसके छोटे और मोटे पाए होते हैं ताकि मैणा को ज़मीन पर आसानी से रखा जा सके। इसका फ़र्श रस्सियों से बुना होता है और ऊपर लाल परदे होते हैं जो मैणा के दोनों तरफ़ झालरों की तरह नीचे लटके रहते हैं। इसे उठाने वाले कहार दो-दो बाँस इसके दोनों तरफ़ लगा लेते हैं।

पसीने से लथपथ मैणा उठाने वाले चार कहारों की मदद से हम कामरान के यहाँ पहुँच गईं। कामरान के मन में पहले तो हमारे लिए बदगुमानी थी लेकिन सरफराज़ ख़ान से मिली ख़बरों के बाद उसके ख़यालात बदल गये थे। वह अब

हमसे जान-पहचान बढ़ाना चाहती थी और उसने हम पर वहाँ रह जाने के लिए काफ़ी ज़ोर डाला था। कई हफ़्ते हम उसके यहाँ नुमाइशी चीज़ की तरह रहे थे और हर उस आदमी के सामने हमारी नुमाइश की जाती थी, जो हमें खुली आँखों देखना चाहता था।

सरफराज़ खान हमारे सिर काट देने की नीयत से जावेद के घर आया था लेकिन माँ के मिजाज़ और तेवर से वह न केवल हैरान हुआ था, उसके सामने हारा भी था। वापिस लौटते हुए उसने कहा था, "इन बेचारों के ऊपर कौन हाथ उठायेगा ? लड़की तो डरी हुई हिरनी जैसी है और माँ किसी बुलबुल के जैसी !"

कामरान के घर में हमें मिलने आने वालों में सरफराज़ ख़ान की बीवी हशमत भी थी और वह भी माँ की खूबियों से भरी-पूरी मुतास्सिर होकर लौटी थी। उसने ख़ान बेगम से कहा, "अरी बहन ! मेरे खाविंद की राय उनके बारे में बिल्कुल ठीक थी। मरियम के होंठों से तो शहद टपकता है।"

जहाँ तक खुद कामरान की बात थी—वह हमारे नाते-रिश्तेदारों के क़त्ल और हमारी मुसीबतों को जानकर और भी पिघल गयी थी। माँ की बातें सुनते हुए उसकी काली बड़ी-बड़ी आँखें आँसुओं से भर जाती थीं और एक बार तो वह माँ के कंधे पर सिर रखकर ज़ोर-ज़ोर से सुबकने भी लगी थी।

उसकी उमर लगभग पैंतीस साल की थी और उस पर अब कुछ-कुछ मोटापा चढ़ने लगा था लेकिन उसके नैन-नक़्श तीखे और रंग गोरा था। हमें बताया गया था कि जब वह शादी के जोड़े में सजी हुई थी तो उसका बाप उसके पास से निकला। वह उसकी खूबसूरती से इतना मुतास्सिर हुआ था कि उसके मुँह से बेसाख़्ता निकल गया था : "इतनी खूबसूरती हमें किसी ऐसे अपने के लिए बचाकर रख लेनी चाहिए थी जिसे ख़ानदान से बाहर न जाना पड़ता !"

कामरान का शौहर, जो उम्र में उससे कहीं बड़ा था, भोपाल में घुड़सवार सेना का लेफ़्टिनेंट था। पहली मुलाकात में ही उसे अपना शौहर पसंद नहीं आया था। उसने उसके प्रेम निवेदन को ठुकरा दिया था और खुद को छूने तक नहीं दिया था। तब उसकी माँ और दूसरे रिश्तेदारों ने सोचा कि ज़रूर वह किसी जिन्न के चंगुल में है।

उसने भी उनके इस भरोसे को बढ़ावा ही दिया। उसका पति निराश होकर अपनी रेजीमेंट में वापिस लौट गया लेकिन उसका ख़र्च भेजता रहा। आख़िरकार हितैषियों

के बहुत समझाने-बुझाने के बाद उनमें थोड़ी क़रीबी आयी जिसके चलते उनके यहाँ एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम उन्होंने बादरान रखा।

बादरान की सुंदरता अपनी माँ से कुछ अलग ही तरह की थी। हम लोगों ने जब उसे देखा था तो वह सोलह या सत्रह साल की थी; उसका रंग माँ के मुक़ाबले दबता हुआ था और उसकी आँखों में, जो बड़ी-बड़ी थीं, वैसी सजल कोमलता नहीं थी, जो कामरान के चेहरे पर खूबसूरती पैदा कर देती थी। लेकिन उसके बायें गाल पर एक गुलाबी दाग़ ज़रूर था, जो उसके चेहरे में अलग से रंगत घोल देता था। उसमें न तो अपनी माँ जैसा चुलबुलापन था और न ही उसमें माँ जैसी जानने की उतावली थी। वैसे भी हमने उसे ज़्यादा बार देखा नहीं था।

कामरान को जब हमारे सीने-पिरोने के हुनर के बारे में पता चला, तब उसने अपनी भाभी के छोटे बेटे को एक तोहफ़ा देने का फ़ैसला कर लिया। उसने हमसे पूछा कि क्या हम कुरता-टोपी बनाने में उसकी मदद करेंगे ? इसके लिए हमें छोटा-सा पाजामा, कोट और टोपी बनानी होगी। माँ ने इसे काटने और सीने की हामी भर दी।

माँ ने गुलाबी रंग के कपड़े वाले कुरते का गला, मुग़लई काट का रखा था यानी जो एक ही जगह से खुलता था और इसमें बायें कंधे की तरफ़ बटन लगते थे। इसकी घेर, बाँहों तथा गले को सुनहरे गोटे से सजाया गया था। इसका गला चाँदनुमा था जिस पर सुनहरा गोटा लगाया था और कंधों पर फुँदने लगाये थे। पाजामा गहरे हरे साटिन का बनाया गया था और इसमें भी सुनहरा गोटा लगाया गया था। टोपी उसी कपड़े की बनायी गयी थी जिस कपड़े का कोट बना था। इस पर आगे की तरफ़ कई सुनहरी लटकनें जड़ दी गयी थीं। ऐसा लगता था कि माथे पर जैसे कोई चुटीला टिका हो। इन तीनों कपड़ों पर कामरान के क़रीब चालीस रुपये ख़र्च हुए थे। एक बच्चे की पोशाक पर किया जाने वाला यह काफ़ी बड़ा ख़र्च था।

माँ अपने काम से खुश थी। जिस किसी ने यह पोशाक देखी, वह खुशी से झूम उठा था। कामरान ने माँ को मीने वाली काँच की नीली चूड़ियाँ भेंट में दी थीं।

कामरान के घर में हमें हर कोई पसंद करने लगा था। उस परिवार के लोगों में इस बात की होड़ लगी रहती थी कि कौन ज़्यादा से ज़्यादा हमारे साथ

भलमनसाहत-भरा सुलूक करता है। उन लोगों का पहले यह मानना था कि सभी फिरंगी औरतों की तरह हम भी हमेशा दरवाज़ों तथा खिड़कियों से बाहर ताक-झाँक करती रहेंगी ताकि हर मर्द हमें देखे। उनका विश्वास था कि मर्दों के बिना यूरोपियन औरतें रह नहीं सकतीं। अब उनके लिए यह हैरत की बात थी कि हमलोग कड़ी मेहनत में यक़ीन रखती थीं, सुई-धागे के काम में हमें मज़ा आता था और मर्दों के साथ उठने-बैठने की बजाय हम उनसे बचती थीं।

"तुम तो हमारी जैसी ही औरतें हो," कामरान ने एक दिन माँ से कहा था। "मैं तुम लोगों को अपनी नस्ल की आधा दर्जन औरतों से भी ज़्यादा कीमती मानती हूँ। तुमसे भला कौन अघा सकता है !"

ज़नानख़ाने में राजनीति पर कभी बातचीत नहीं होती थी—लड़ाई और मार-काट मर्दों के काम माने जाते थे। पूरे देश में जो दंगे भड़के हुए थे, उसके बारे में शायद ही कभी बात हुई हो। सिर्फ़ एक बार हमें परेशानी झेलनी पड़ी थी और वह भी उम्दा की वज़ह से क्योंकि वह शुरू से ही हमसे डाह करने लगी थी।

मुझे याद नहीं कि कामरान के साथ उसकी क्या रिश्तेदारी थी ? वह एक जवान, जलनभरी, कड़वी जुबान और विदेशियों के मामले में हमलावर रवैया अख़्तियार रखनेवाली औरत थी। इस परिवार में हमारे चले जाने की बात से वह बहुत नाराज़ थी। वह हमेशा हमें गुस्से से घूरती रहती थी और हमारे बारे में बुरा-भला कहने का एक भी मौक़ा नहीं खोती थी।

जब कभी अंग्रेज़ों की हार की ख़बर आती थी तो उम्दा बहुत खुश होती थी और उसे पक्का यक़ीन था कि अंग्रेज़ जल्द ही दिल्ली से भी खदेड़ दिये जायेंगे। कभी-कभार वह अहम मसलों की बजाय लोगों के सामने रखकर अपनी भड़ास निकालती थी।

एक बार माँ, एनेट और मैं एक साथ बैठी थीं और बादरान के लिए पाजामा सी रही थीं। बादरान भी बरामदे के एक कोने में बैठी थी और अपने खुशमिज़ाज जवान खाविंद हाफ़िज़उल्लाह ख़ान के साथ बड़ी चुटीली बातें कर रही थी। हाफ़िज़उल्लाह की निगाहें उम्दा पर टिकी थीं क्योंकि वह उसे अच्छी तरह जानता था।

उम्दा बातचीत का रुख़ बदलकर अचानक फिरंगी नस्ल पर ले आयी और फिर वह यूरोपियन औरतों की मर्दों के लिए भूख पर बातें करने लगी।

उसने कहा, "ये छिनाल औरतें ! ये बिना मर्दों के रह ही नहीं सकतीं।"

"यह सही नहीं है चाची !" हाफ़िज़उल्ला बरामदे के दूसरे किनारे से बोला।

"वैसे उनका सुलूक ठीक ही है। मर्दों के साथ इतना ज़्यादा रहने के चलते उनमें मर्दों के लिए भूख तुम्हारे मुक़ाबले कहीं कम होती है। फिर सारे मर्द भी तुम्हारे खाविंद की तरह अफ़ीमची नहीं होते जिसे कीचड़ में सुअर की तरह लोटने के बजाय और किसी चीज़ के लिए वक़्त ही नहीं है।"

"हाँ, ऐसा होगा," वह गुस्सा होते हुए बोली, "लेकिन इस बात का फिरंगी औरतों से क्या लेना-देना है ? तुम इससे इनकार नहीं कर सकते कि इन औरतों को अजनबी मर्दों के साथ हँसना और मज़ाक़ करना अच्छा लगता है; ये उनके साथ नाचती और गाती हैं और कभी-कभी तो अधनंगी हो जाती हैं और पराये मर्दों की बाँहें इनकी कमर पर पड़ी रहती हैं। इसके बाद वे अँधेरे कोनों में चली जाती हैं, जहाँ वे मर्दों का चुम्मा लेती हैं। अपने खाविंदों के अलावा वे दूसरे मर्दों को खुद को चूमने देती हैं !"

बादरान की चमकीली आँखें फिरंगी औरतों के ये कारनामे सुनकर हैरानी से फैल गयी थीं।

"मैं यह सब नहीं जानता," हाफ़िज़उल्लाह ने कहा। "तुम्हें ये बातें कहाँ से मालूम हुई हैं चाची ?"

"इसे छोड़ो कि ये बातें मुझे कहाँ से पता चलीं," उसने बेसब्र होकर जवाब दिया। "मैंने जो कुछ बताया है, वह बिल्कुल ठीक है और इसलिए मैं कहती हूँ कि ये फिरंगिनें मुसीबत साबित होंगी।"

"अब तुम बहुत बहकने लगी हो चाची," हाफ़िज़उल्लाह ने कहा। "मेरे सर की क़सम, तुम कोई भी बात कहने में बहुत लापरवाह हो जाती हो। तुम हमारे मेहमानों के ख़िलाफ़ क्या इल्जाम लगाती हो ?"

"जब ये पहली बार जावेद के यहाँ गयीं थीं तो पास-पड़ोस के मर्दों में खलबली मच गयी थी।"

"हाँ, हो सकता है," हाफ़िज़उल्लाह ने चुटकी लेते हुए कहा, "तुम्हारा नेक खाविंद भी उनमें ज़रूर शामिल रहा होगा। तो, फिर इससे क्या हुआ ?"

"तुम बड़े शरारती हो हाफ़िज़ !" उसने मज़ाक़ करते हुए कहा और हमारी तरफ मुँह करके आँख मारी। "तुम्हारे इरादे क्या हैं ?"

"तुम आज बेवकूफ़ों जैसा सुलूक कर रही हो, चाची।" हाफ़िज़उल्लाह ने अपना सब्र खोते हुए कहा। "तुम मज़ाक़ में इस तरह सिर हिलाकर क्या कहना चाहती हो ! मैं तुम्हें दोबारा कह रहा हूँ कि मरियम और उसकी बेटी के बारे में कुछ भी कहने से पहले अच्छी तरह सोच लिया करो !"

"यह लड़का तो गोरी नस्ल का हिमायती बन गया लगता है। बहरहाल,

मुझमें इन्हें सहने की ताब नहीं है।''

इस तीखी नोक-झोंक में कुछ देर के लिए ठहराव आ गया। माँ, एनेट और मैं इस बहस-मुबाहिसे में हिस्सा न लेते हुए बिल्कुल ख़ामोश रही थीं। हम अपने बचाव में कुछ बोल भी नहीं सकती थीं क्योंकि हम कामरान के घर की ताबेदारी में थीं और झगड़ा करने का हमारा कोई हक़ नहीं बनता था। और, हम हाफ़िज़उल्लाह से बेहतर बहस कर भी नहीं पातीं।

उम्दा ने तो शरारत करने की ठानी हुई थी और वह बात बदलने को तैयार न थी। ''मेरा बेटा मुहिम पर गया है। मैं उम्मीद करती हूँ और दुआ माँगती हूँ कि वह वापिसी में अपने साथ कोई फिरंगिन न ले आये।''

हाफ़िज़उल्लाह जैसे जवाब के लिए तैयार ही बैठा था। ''बेशक़ तुम्हारा बेटा मुहिम पर बहुत बहादुरी दिखायेगा लेकिन यह जानते हुए कि फ़ौज को कुछ अड़ियल ज़मींदारों को कुचलने के लिए ही भेजा गया है, मुझे तो नहीं लगता कि वह बेचारा किसी फिरंगिन को अपने साथ ला सकेगा।''

इससे पहले कि उम्दा अपने बचाव में कुछ कहे, हाफ़िज़उल्लाह उठ खड़ा हुआ और उसने कहा कि अच्छा तो यह होगा कि वह अब अपने घर को जाये; वह हमें दी जानेवाली गालियों को सुनने को बिल्कुल तैयार नहीं। लेकिन उम्दा भी आख़िरी वार करने से बाज नहीं आयी।

''इबादत में बड़ी ताक़त होती है,'' उसने कहा। ''मैंने ख़ान बेगम को सलाह दी है कि वह अपनी मुट्ठी में राख लेकर इन औरतों की तरफ़ फेंके ताकि ये भी उसी राख की तरह उड़ जायें।'' फिर वह हमारी तरफ़ एक मुट्ठी मिट्टी फेंक कर मुँह ही मुँह कुछ बुदबुदाती रही थी।

हाफ़िज़उल्लाह ख़ान को यह सब सहन नहीं हुआ। वह लपक कर उम्दा की तरफ़ बढ़ा और बरामदे से घसीटते हुए उसे बाहर कर दिया। फिर उसे वहाँ से चले जाने के लिए कहा और धमकी दी कि ऐसा नहीं होने पर वह और भी बुरा सुलूक करेगा। वह गुस्से से तमतमाया वापिस आया और अपनी बीवी के पास बैठ गया।

14

बारिश

''मुझे कोई हैरत नहीं हुई,'' घर आने पर उम्दा और अपने दामाद के बीच हुई झड़प की बात सुनकर कामरान ने कहा ! ''उम्दा की जुबान बहुत लंबी और ज़हर उगलनेवाली है। उसका हमारे मेहमानों से क्या लेना-देना ? उसने शायद तुम्हारी दरियादिली तथा सब्र से कोई सबक़ सीखा हो, मेरे बेटे !'' उसने हाफ़िजउल्लाह की तरफ़ मुँह उठाकर कहा। ''वैसे तुम्हें घसीटकर उसे बाहर नहीं करना चाहिए था। बहरहाल, तुम्हारा यह बड़प्पन ही है कि तुमने इन बेचारियों की तरफ़दारी की। मरियम, उसकी बेवकूफ़ी के लिए उसे माफ़ कर दो। उसने अपने ऊपर इन नौजवानों को हँसने का खुद ही मौक़ा दिया था। मेरे घर में तुम्हारा हमेशा स्वागत है।''

बरसात का मौसम अब पूरे ज़ोरों पर था और घने बादल पच्छिमी आसमान पर छाये हुए थे। हवा के झोंकों से हमें आती हुई बारिश की सोंधी खुशबू महसूस हुई और तभी हमें बरामदे में उगी चमेली की झाड़ियों पर गिरनेवाली बूँदों की टप-टप सुनायी दी।

यह पूरे उत्तरी भारत में औरतों द्वारा मनाये जाने वाले त्यौहार का दिन था जिस मौक़े पर वे खूब रंगीन पोशाकें पहनकर झूले झूलती हैं और इस तरह अपनी खुशियों का इज़हार करती हैं। किसी पेड़ से दुहरे रस्से लटका दिये जाते हैं और इन्हें सिरों से बाँध दिया जाता है। फिर इन पर चमकीले रंगों वाले छोटे पटरे रख दिये जाते हैं। दो औरतें इन पटरों पर एक-दूसरी के सामने खड़ी हो जाती हैं और अपने अँगूठों के बीच इन रस्सों को फँसा लेती हैं। वे हल्के से झूलना शुरू करती हैं और फिर उनकी रफ़्तार तेज़ होती जाती है और पींग ऊँची होती जाती है। उनकी यह तेज़ रफ़्तार हरे-भरे पेड़ों और काले बादलों के बीच एक चमकदार रंग के धब्बे में बदल जाती है। कभी-कभार इन रस्सों के बीच एक छोटी-सी खटोली भी डाल दी जाती थी जिस पर दो या तीन औरतें बैठ

सकती हैं और दो औरतें झूले को डुलाती हैं और साथ में गीत भी गाती रहती हैं।

घर के पिछवाड़े उगे एक बूढ़े बरगद पर एक झूला डाला गया था और सिर से पाँव तक लाल पोशाक में सजी-धजी बादरान तथा हशमत झूल रही थीं। एनेट और मैं उन्हें झुला रही थीं, जबकि नौकरानी गुलबिया गा रही थी। उनके नीचे उतरने पर हमारी बारी आयी। मेरे लिए यह रोंगटे खड़े कर देने वाला अहसास था। हवाओं के बीच में से ऊपर उठते हुए मुझे भागते हुए बादल दिखायी देते थे और दूसरे ही पल नीचे मुझे एनेट के काले घुँघराले बाल दिखायी देने लगते थे। कुछ समय के लिए अपनी दुनिया से कट कर मुझे फिर से महसूस हुआ कि ज़िंदगी कितनी खुशगवार और हैरतभरी है !

माँ की याददाश्त में लोककथाओं का ख़ज़ाना भरा हुआ था और कभी-कभी तो वह आत्माओं और प्रेतात्माओं के क़िस्से बयान कर अपने मेहमानों को हैरान कर देती थी। एक दिन बादरान, गुसल के बाद, अपने लंबे बालों को खोले हुए बरामदे में आ गयी थी।

"मेरी बच्ची, तुम्हें अपने बाल इस तरह खुले नहीं रखने चाहिए," माँ ने कहा। "अच्छा होगा कि इनमें तुम एक गाँठ लगा दो।"

"लेकिन मैंने तो इनमें अभी तेल भी नहीं डाला फिर मैं इन्हें गूँथ कैसे सकती हूँ ?" बादरान ने कहा।

"शाम के वक़्त इन्हें खोलकर बाहर बैठना अक्लमंदी की बात नहीं।"

"अच्छा बताओ तो ऐसा क्यों नहीं करना चाहिए," बादरान ने पूछा। "चलो, मैं तुम्हारी बात मान लेती हूँ और बालों में एक गाँठ भी लगा लेती हूँ।" फिर माँ से ज़ोर देकर कहा कि वह बताये कि शाम के वक़्त बाल खोलकर बैठने में क्या नुक़सान है ?

"हवा में ज़िन्न घूमते रहते हैं और वे लंबे बालों और तुम्हारी तरह की खूबसूरत काली आँखों की ओर बहुत जल्द खिंचे चले आते हैं," माँ ने कहा।

उसकी माँ और ख़ाविंद वहीं बैठे थे, इसलिए बादरान शरमा गयी। इधर कामरान भी अपनी जवानी के उन बेसुध दिनों को याद कर मुस्करा दी, जब उसने हर किसी को यह यक़ीन दिलवा दिया था कि वह किसी ज़िन्न की चाह का सबब है।

"क्या ज़िन्न लोगों के पास भी आते हैं ?" हाफ़िज़उल्लाह ने पूछा।

"कहा तो यही जाता है," माँ ने कहा। "मैंने खुद तो ज़िन्न को कभी

नहीं देखा लेकिन दूसरों पर होने वाले असर को ज़रूर देखा है।''

''ओह, तो जो कुछ तुमने देखा, उसके बारे में हमें ज़रूर बताओ,'' कामरान ने जैसे मिन्नत की।

''एक बार की बात है। एक बहुत ही प्यारी लड़की थी। उसके बेहद काले बाल थे,'' माँ ने कहना शुरू किया। ''वह एकबारगी बहुत ज़्यादा बीमार पड़ गयी। हर तरह का ख़याल रखने और अच्छे-से-अच्छे इलाज़ के बावजूद उसकी हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गयी। वह कोड़ा लटकानेवाली बल्ली की तरह दुबली और कमज़ोर हो गयी। उसकी सारी खूबसूरती ख़त्म हो गयी थी, सिवा उसके बालों के। ये बाल उसके मरते दम तक चमकदार तथा खूबसूरत बने रहे थे। जब भी वह सोती तो अपने ख़्वाबों से परेशान हो जाती। एक नौजवान अक्सर उसके ख्वाबों में आता रहता। एक दिन जब वह नहाने के बाद अपने बालों को सुखा रही थी, तभी वह उसके बालों का आशिक़ हो गया था। वह जल्द ही उसे अपने साथ ले जाने को तैयार था। वह बहुत दुखी थी लेकिन इसके बावजूद उसे दुख देनेवाले ने उसके ऊपर आना बंद नहीं किया था और वह दिखायी भी नहीं देता था। उसका जिस्म पूरी तरह मुरझा गया था लेकिन उसकी आँखों में ग़ज़ब की चमक दिखायी देती थी; उसकी देह पूरी तरह छीज गयी थी और जब वह मरी तो भी उसके खूबसूरत बाल पहले की ही तरह खूबसूरत बने रहे।''

''यह कितनी डरावनी कहानी है !'' बादरान ने कहा और जल्दी-जल्दी अपने बालों में दूसरी गाँठ देने की कोशिश करने लगी।

इसके बाद बातचीत अलग-अलग तरह के भूतों और ज़िन्नों के बारे में होने लगी और कामरान ने हमें मुंजिया—अपनी शादी से पहले ही मर जानेवाले एक जवान ब्राह्मण की रूह—के बारे में बताया, जिसका डेरा एक पीपल के पेड़ पर कहा जाता था। जब कभी मुंजिया गुस्सा हो जाता तो वह पीपल से बाहर आकर बैलगाड़ियों, मैणाओं तथा घोड़ागाड़ियों को उलट देता था। कामरान ने सलाह दी कि अगर किसी को रात के वक़्त किसी अकेले पीपल के नीचे से गुज़रना पड़ जाये, तो उसे अपने मुँह के आगे उँगलियों से चुटकी बजाये बिना उबासी नहीं लेनी चाहिए।

कामरान ने बताया, ''अगर ऐसा करना कोई भूल जाता है तो मुंजिया मुँह के रास्ते अंदर जाकर उसे पूरी तरह ख़त्म कर देता है।''

माँ ने तब भूतों की क़िस्मों के बारे में वे क़िस्से बताने शुरू कर दिये जो वह जानती थी : चुड़ैलें, जो नंगी घूमती रहती हैं और जिनके पाँव पीछे की तरफ़ होते हैं; लंबे दाँत वाले भूत जो आदमी का खून पीते हैं; और वे भूत जो जानवरों

की शक्ल अख़्तियार कर लेते हैं। रामपुर के नज़दीक के कुछ गाँवों में (माँ के मुताबिक कुछ ऐसे लोग भी थे, जो यह बता सकते थे कि मरनेवाले ने अगले जनम में क्या रूप धरा है) ये लोग कूंडे में राख़ भर कर पूरी रात इसे खुले में रख देते थे और इसे भारी ढक्कन से ढँक देते थे। अगली सुबह राख़ में पाँव का कोई निशान होता था। यह निशान आदमी, किसी चिड़िया या हाथी का भी हो सकता था, जो मरनेवाले का अगले जन्म का सूचक होता था।

दस बज जाने के बाद भी हम बरामदे में एक-दूसरे से अलग होने में झिझक रहे थे। माँ और कामरान ने हमें ज़िन्नों के ख़तरे से बचने के लिए कुछ पाक आयतें पढ़ने की हिदायत दी, तब भी हमने कोई राहत महसूस नहीं की। मैं जब बिस्तर पर लेटी तो स्थिर नहीं रह सकी; मैं लगातार करवटें बदलती रही और दीवारों पर घूमती-फिरती छायाओं को ढूँढ़ती रही। कुछ देर बाद हमारे कमरे को खटखटाने की आवाज़ आयी और साथ ही बादरान तथा हशमत की आवाज़ें भी। बिस्तर से उठकर जब हमने दरवाज़ा खोला तो हमने उन्हें बेहद डरा हुआ और पीला देखा। कामरान उन्हें भी डराने में कामयाब रही थी।

''क्या तुम ठीक-ठाक हो खुर्शीद ?'' दोनों ने पूछा। ''क्या तुम हमारे कमरे में नहीं सोना चाहोगी ? शायद वहाँ ज़्यादा महदूद महसूस करो। आओ, हम तुम्हारा बिस्तर वहाँ पहुँचाने में मदद करती हैं।''

''हम यहाँ बिल्कुल ठीक हैं,'' माँ ने राज़ी न होते हुए कहा, लेकिन हमें ज़बरदस्ती अगले कमरे में धकेल दिया गया जैसे कि भूतों का कोई दल हमारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश कर रहा हो। ख़ान बेगम इसमें शामिल नहीं थी (हालाँकि भूतों के क़िस्से सुनाते वक़्त वह वहाँ थी) और उसके बारे में हमने पहली बार तब जाना, जब हमें उसकी ज़ोरदार चीख़ सुनायी दी। हम आवाज़ की तरफ़ भागे और हमने उसे अपने कमरे से बाहर आते हुए देखा।

''मरियम ग़ायब हो गयी है !'' वह चिल्लायी। ''खुर्शीद और एनेट भी ग़ायब हैं !''

और जब उसने हमें खुले तथा उलझे बालों में अपने कमरे से भागकर बाहर आते देखा तो वह दोबारा चीख़ी और बरामदे में बेहोश होकर गिर पड़ी।

15

सफ़ेद कबूतर

"तुम बड़ी दिलेरी से अपने मुसीबतों को झेल रही हो," हाफ़िज़उल्लाह ने एक दिन माँ से कहा। "तुम बेहद खुशमिज़ाज और नेकदिल हो। तुम्हें देखकर ऐसा लगता है कि आनेवाला वक़्त बहुत ही अच्छा होगा। वैसे भी उन बीती घड़ियों का मातम मानने का क्या फ़ायदा जो कभी वापिस नहीं आ सकतीं ?"

"मुझे नहीं लगता कि इनकी हालत में कभी कोई सुधार होगा," ख़ान बेगम ने कहा। "कल की ही बात है वह फ़क़ीर कह रहा था कि फिरंगियों का इस ज़मीन से सफ़ाया हो चुका है।"

"मुझे इस बात पर यक़ीन नहीं," हाफिज़उल्लाह ने अपनी तजबीज़ पेश की।

"न ही मुझे," कामरान ने कहा। "सच्चाई तो यह है कि हमें कोई ख़ास ख़बरें मिल ही नहीं रही।"

"हाँ, मैं एक बात बताना चाहूँगा," हाफ़िज़उल्लाह ने कहा। "कल मेरे चाचा शेख़ी तो ज़रूर बघार रहे थे कि अब कोई फिरंगी नहीं बचा है लेकिन मैंने सरफ़राज़ ख़ान के साथ उन्हें फुसफुसाते हुए सुना था कि सभी फिरंगियों का ख़ात्मा नहीं हुआ है। वे पहाड़ियों पर जमे हुए हैं। मेरे चाचा बता रहे थे कि अब्दुल रऊफ़ ख़ान ईद वाले दिन मियाँ साहिब को अकीदत पेश करने सुबह-सुबह वहाँ गया था, वही फ़क़ीर जिसका तुमने अभी-अभी जिक्र किया है, और उस बूढ़े आदमी ने उसे जो कुछ कहा था वह बात हैरानी में डालनेवाली है।"

"उसने क्या कहा था ?" ख़ान बेग़म ने ज़ोर देकर पूछा।

"अब्दुल रऊफ़ ने बताया कि मियाँ अजीब धुन में था। पिछले तीन महीनों से वह जो सफ़ेद कपड़े पहने था, उसने उन्हें उतार फेंका था और बिना किसी वज़ह के अब उसने काला चोगा पहन लिया था। अब्दुल रऊफ़ और कुछ दूसरे लोग उससे यह कहने गये थे कि वह दिल्ली में फिरंगियों की हार के लिए दुआ

करे। लेकिन पता है कि उसने क्या कहा था ?''

हाफ़िज़उल्लाह नाटकीय अंदाज़ में कुछ देर के लिए चुप हो गया और कामरान और ख़ान बेगम दोनों ने एक साथ यह पूछा था, ''उसने उन्हें क्या कहा था ?''

''उसने उन्हें कहा था कि फिरंगियों का राज फिर से आना लगभग वैसे ही तय है जैसे क़यामत का आना। इन विदेशियों को बाहर खदेड़ देने में अभी सौ साल और लगेंगे। 'देखो, वे आ रहे हैं !' वह चिल्लाया था और फिर उसने उत्तर की तरफ़ इशारा किया जहाँ सफ़ेद कबूतर शहर के ऊपर हवा में उड़ान भर रहे थे। 'वे सफ़ेद कबूतरों की तरह उड़ते हुए आये थे जिन्हें छेड़ा जाये तो परेशान होकर दूर उड़ जाते हैं और चक्कर लगाने लगते हैं लेकिन आराम करने के लिए वापिस लौट आते हैं। पहाड़ियों से आते सफ़ेद कबूतर !' अब्दुल रऊफ़ ने हाथ जोड़े और मियाँ से कहा कि वे और कुछ न कहें। लेकिन मियाँ क्या किसी की बातों में आते हैं ? उनकी बातों को मामूली नहीं समझना चाहिए।''

कामरान के यहाँ हमारे ठहरने के दिन अब पूरे हो रहे थे। हमने पूरी बारिशें उस खुशमिज़ाज कुनबे के यहाँ बिता दी थीं और वक़्त बहुत तेज़ी से बीतता जा रहा था। जो खुलूस और दयानतदारी हमें कामरान और उसके दामाद हाफ़िजउल्लाह से मिली थी, उससे ज़्यादा की हम कभी उम्मीद नहीं करते थे। जावेद ख़ान कई बार हमसे मिलने आया था बल्कि कहना चाहिए कि अपनी बीवी और बहन से मिलने आया था। एक या दो बार उसने कामरान पर ज़ोर भी डाला कि वह हमें अब वापिस जाने दे लेकिन वह हमें जाने देना ही नहीं चाहती थी। वह इस बहाने से हमें अपने यहाँ रोके रही कि हम उसके लिए कुछ सिलाई कर रहे हैं और यह काम पूरा नहीं हुआ है। उसने भी इसके लिए ज़्यादा ज़ोर नहीं डाला था क्योंकि उसे पता था कि एक ही छत के नीचे उसकी बीवी तथा हमारा रहना बहुत खुशगवार नहीं था।

हालाँकि जावेद ख़ान को सैनिक कार्रवाई के लिए नवाब ने बहाल किया था लेकिन हमें उसकी किसी नयी या ज़ोख़िमभरी कार्रवाई में हिस्सेदारी की जानकारी नहीं थी। उसके मार्फ़त रोज़ा रम फैक्टरी को लूटने की कार्रवाई का ही हमें सिर्फ़ पता था और यह काम भी उसने अपने फ़ायदे के लिए किया था। मुहम्मदी की उस मारकाट में भी उसने बढ़-चढ़कर हिस्सा नहीं लिया, जिसमें सिपाहियों की एक कंपनी ने शाहजहाँपुर से भागकर आये यूरोपियन लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। उसने अपना ज़रूरी काम यह बना लिया था कि

वह नवाब की दावतों में शामिल हो तथा दिल्ली की ख़बरों के अलावा हम जैसे बचे-खुचे मुहाजिरों और दूसरे लोगों के बारे में उसे ख़बरें देता रहे। उदाहरण के लिए हमने रैडमेन परिवार के छुपने की जगह के बारे में सुना था। एक भीख माँगनेवाली औरत ने, रैडमेन परिवार की पुरानी धोबिन के घर के आगे से निकलते वक़्त, जब वह भीख माँगने के लिए वहाँ रुकी तो अंदर आँगन में बैठी लंबी और गोरी औरत को देखकर उसे पहचान लिया था।

"ओह, तुम कौन हो ?" उसने चहककर कहा "वैसे मैं जानती हूँ कि तुम कौन हो ! तुम्हारा गोरा पति और लड़का कहाँ है ?"

"भागो यहाँ से चुड़ैल कहीं की !" मिसेज़ रैडमेन ने कहा। "जाओ, अपने लिए भीख माँगो और मेरे मामले में दख़ल मत दो !"

इसी दौरान धोबी घर लौट आया और तमाम हालात को समझते हुए उसने भिखारन से कहा, "तुम कैसे कह रही हो कि वह फिरंगिन है ? वह तो मेरी साली है।"

"तुम्हारी जात में ऐसी गोरी औरत कब से होने लगी ?" बूढ़ी औरत ने मक्कारी से कहा।

"तुमने एक भी सवाल और पूछा तो मैं अपना पाटा तुम्हारे सिर पर दे मारूँगा !" धोबी ने धमकाते हुए कहा। "चल भाग यहाँ से मरी !"

भिखारन धोबी और रैडमेन परिवार को कोसते हुए लँगड़ाती हुई वहाँ से चली गयी और उसने सीधे अब्दुल रऊफ़ के घर का रास्ता पकड़ा। वहाँ उसने जो देखा था, वह पूरा क़िस्सा बयान कर दिया। अब्दुल रऊफ़ ने यह जानकारी नवाब को दी और फिरंगन को खुद पकड़ने की इज़ाज़त माँगी।

"यह ज़ोखिम भरा काम तुम्हारे ही लायक़ है," नवाब ने खुश होते हुए कहा। "इसमें शक़ नहीं कि उसे पकड़ने के लिए तुम्हें एक सैनिक टुकड़ी की ज़रूरत होगी। लेकिन मैं इन मुहाजिरों का शिकार नहीं करना चाहता ख़ान साहिब ! इन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा है।" उसने इनके मामले में वही दयालुता बरती, जैसी हमारे साथ बरती थी।

मुहर्रम आया और चला भी गया। हमें पता तक नहीं चला कि मुहर्रम ख़त्म हो चुका है क्योंकि शाहजहाँपुर में बहुत कम शिया परिवार थे। यहाँ उसी उत्साह से यह त्यौहार नहीं मनाया जाता था। दूसरे शहरों की शिया औरतों की तरह यहाँ की पठान औरतें त्यौहार के दस दिनों में सोग नहीं मनातीं और न ही वे अपने गहनें उतार कर रख देती हैं। हाँ, इतना ज़रूर था कि ग़रीबों में बाँटने



के लिए नज़दीक की मस्जिद में खाना और कपड़े भिजवा दिये जाते थे।

मुहर्रम ख़त्म हुआ तो यह फ़ैसला हुआ कि शुक्रवार को हम जावेद ख़ान के घर वापिस लौटेंगे। यह 4 सितंबर की बात है।

16

जावेद ख़ान की उतावली

बेचारी ख़ान बेगम को हमसे रिश्ता तोड़ने से पहले अभी जलन की आग से गुज़रना बाक़ी थी। जिस दिन हम उसके घर लौटे थे, उसी दिन जावेद ख़ान ने शादी की बात फिर से छेड़ दी थी।

"मरियम, बताओ कि मुझे अभी कितना इंतज़ार और करना होगा ?" रात का खाना खा लेने के बाद उसने पूछा।

"मैं क्या बता सकती हूँ ?" माँ ने लंबी साँस लेते हुए कहा। "तुम अक्सर इस बात की चर्चा छेड़ देते हो। मैं तुम्हें पहले ही कह चुकी हूँ कि अपने भाइयों से सलाह किये बिना मैं अपनी लड़की तुम्हें नहीं दे सकती। तुमने मेरी यह बात भी मान ली थी कि दिल्ली में अंग्रेज़ों की क़िस्मत का फ़ैसला हो जाने दो।"

"फिरंगियों का मटियामेट हो !" उसने गुस्से से कहा। "यह पक्का है कि तुम्हारे भाई अब इस दुनिया में नहीं रहे होंगे !" तब अचानक उसका मूड गुस्से से परेशान करनेवाली उदासी में बदल गया और वह अपने आपसे बोला, "शायद उसने ठीक ही कहा था कि 'सूबेदारजी, क्या आप दिल्ली पहुँच भी पायेंगे ?' घनश्याम सिंह के नसीब में नहीं था कि वह उस शहर की चहारदीवारी के भीतर क़दम रख सके। वह उसी घड़ी हिंडन नदी के पास मार डाला गया था, जब फिरंगी सेना ने इस बरेली ब्रिगेड पर धावा बोल दिया था। वह बादशाह को हमारी 31 मई की कामयाबियों के बारे में बता तक नहीं सका। ख़ैर, मुझे जो करना था वह मैं कर चुका—मिसरी के डले देकर मुहर्रम के वक़्त मैंने शर्बत का मसला तो हल कर ही दिया था। मैं मंगल ख़ान के यहाँ रहने वाले उस लड़के से भी निपट लेता लेकिन वह बेवकूफ़ मंगल हमारे बीच आ गया और कहने लगा कि उस लड़के को मैंने अपना बेटा बना लिया है। मैंने कभी नहीं सुना कि ईमान में यक़ीन रखनेवाले किसी आदमी ने काफ़िर को अपना बेटा बना लिया हो। इन सबको ताऊन निगल जाये !"

जब वह घर से बाहर निकला तो उसका चेहरा डरावना और रंग काला पड़ गया था। कुछ ही मिनटों बाद जावेद के सौतेले भाई सैफ़उल्लाह की चीख़ें सुनकर हम हैरान रह गये। वह गली में उसके सामने पड़ गया था और पठान अब उस पर अपना गुस्सा और भड़ास निकाल रहा था।

जावेद ख़ान ने लड़के को कमर तक नंगा कर दिया था और अपने चाबुक़ से उसे इस बेरहमी से पीटा था कि उसकी पीठ की चमड़ी तक उघड़ गयी थी। सैफ़उल्लाह कई दिनों तक बिस्तर से लगा रहा था और अपने ज़ख़्मों की तकलीफ़ से अक्सर कराहने लगता था। उसे तसल्ली देने के बजाय जावेद ख़ान उसे धमकी देने लगता था कि उसने कराहना बंद नही किया तो कोड़े से वह उसकी फिर से पिटाई कर देगा।

मुझे पूरा यकीन है कि माँ के उदास कर देने वाले जवाब को सुनकर ही जावेद पर गुस्से का यह दौरा पड़ा था और मुझे उसका एहसानमंद होना चाहिए क्योंकि उसका यह गुस्सा अपने भाई पर निकला था। जावेद उस लड़के से बेहद नफ़रत करता था क्योंकि वह उसे अपने बाप के नाजायज़ रिश्ते से होनेवाली औलाद मानता था।

उसी शाम जावेद ने अपने इस जंगली मिज़ाज़ का एक और नमूना पेश कर डाला। उसने अपने साईस से यह पूछा कि उसके घोड़े को चना दिया गया है या नहीं, और यह जानकर कि नौकरानी रूपिया ने अभी तक चना नहीं कूटा है तो उसने नौकरानी को बुलाकर पूछा कि तुमने चना अभी तक क्यों नहीं कूटा ?''

''मैं दूसरे कामों में फँसी हुई थी,'' उसने सफ़ाई दी।

''क्या वाक़ई, मरी ?'' वह ज़ोर से दहाड़ा और अपना चाबुक़ उस पर इस बुरी तरह बरसाया कि वह सचमुच ही काली और नीली पड़ गयी; उसके फटे और नाम भर के कपड़े तार-तार हो गये। वह कई दिनों तक बिस्तर पर पड़ी रही। घर में हर कोई इस अंदेशे से सहमा हुआ था कि नामालूम जावेद इस बार क्या कर बैठे। लेकिन माँ उस औरत तथा लड़के का कराहना सहन नहीं कर सकी। उसने ज़ेबन को हल्दी लाने के लिए कहा, जो उसने आग पर सेंक कर उनके ज़ख़्मों पर लगा दी। वह तीन दिनों तक उनकी सेवा करती रही जब तक कि उनके ज़ख़्म भरने शुरू नहीं हो गये।

एक दिन जावेद माँ के पास फिर आया और हमें डर लगने लगा कि कहीं वह दोबारा पहले जैसा सुलूक न करने लगे। लेकिन वह तो हारा हुआ लगता था और शायद अपने सुलूक के लिए शर्मिंदा भी। उसनेअपने जिस्म में होनेवाले दर्द

की बात कही और माँ से गुज़ारिश की कि वह कोई दवा बताये।

"तुम उन दोनों पाजियों का इलाज़ करती रही हो," उसने कहा। "क्या मुझे भी कोई दवा नहीं दे सकती ?"

"मैं तुम्हें क्या दवा दूँ ?" माँ ने जवाब दिया। "मैं कोई हकीम तो हूँ नहीं। मेरी अपनी सेहत ठीक होती तो शायद तुम्हारे दर्द के बारे में कुछ सोच भी पाती। मुझे तो तुम भले-चंगे लगते हो।"

"मैं भला-चंगा नहीं हूँ।" जावेद ने कहा। " मैं पहले की तरह घोड़े पर नहीं बैठ पाता। यह अपने बुजुर्गों की सलाह कि जुमेरात को शिकार मत करो, उसे न मानने का नतीजा है। पिछली बार जुमेरात को जब मैं शिकार करने गया था तो मुझे एक काला हिरन दिखायी दे गया था और मैंने उस पर गोली चला दी थी। लेकिन मेरा निशाना चूक गया और वह गोली मकबरे पर बैठे एक सफ़ेद कबूतर को लगी। कबूतर एक झाड़ी में जा गिरा था लेकिन मुझे वह नहीं मिला। वह ज़रूर मर चुका था। इसके बाद मुझे कोई शिकार नहीं मिला और शाम को जब मैं घर लौटा तो मैंने खुद को बहुत थका हुआ महसूस किया और मेरे हाथ-पाँव भी चल नहीं रहे थे। मैं किसी मुर्दे की तरह अकड़ गया था। अब्दुल रऊफ़ को ख़बर भिजवायी गयी और जब उसे पता चला कि मेरे साथ क्या बीत रही है तो वह मुझे देखने के लिए चला आया था। वह बहुत नाराज़ था क्योंकि मैंने किसी परिन्दे पर गोली चलायी थी। 'कबूतर', उसने कहा, 'वे लोग हैं जो जुमेरात को अपनी क़ब्रों से निकलकर बाहर की ताज़ा हवा खाने के लिए आते हैं।' ख़ैर, अब्दुल रऊफ़ ने मेरा इलाज़ करवाया। मुझे एक कमरे में बंद कर दिया था और उसके बाद मुझे होश आया था। लेकिन मेरे चेहरे पर सूजन आ गयी है, जहाँ किसी रूह ने मुझे ज़रूर तमाचा जड़ा होगा।"

उसका चेहरा कुछ सूजा हुआ ज़रूर लग रहा था। इससे पहले कि माँ उस पर ग़ौर करती, ज़ावेद का ध्यान गली से आते संगीत की तरफ़ चला गया। उसके चेहरे पर एक रंग आता और फिर चला जाता। अचानक वह हाथ में कोड़ा लेकर घर से बाहर तेज़ी से चला गया।

बाहर से खूब हो-हल्ला होने की आवाज़ें आती रहीं और तब हमें किसी की यह दर्दभरी चीख़ सुनायी दी : "हाय ! मुझे बचाओ। मेरा क़त्ल किया जा रहा है।"

हम सभी एक-दूसरे की तरफ़ हैरानी से देखनी लगीं। तब ख़ान बेगम ने कहा, "यह वही लड़का होगा जो कभी-कभार इस रास्ते से बाँसुरी पर मोहब्बत

की धुनें छेड़ता हुआ गुज़रता है। मेरे खाविंद ने अपने मरे हुए बाप की क़सम खायी थी कि अगर उसने इस लड़के को अपने घर के बाहर कभी गाते या बजाते हुए सुन लिया तो वह उसकी जान ले लेगा।''

''पर उसके गाने से आख़िर नुक़सान क्या होता है ?'' माँ ने पूछा।

''मेरी समझ से तो कुछ भी नहीं। लेकिन पठानों के मोहल्ले में किसी को भी गाने या बजाने की इज़ाज़त नहीं है। संगीत से जुनून पैदा होता है, इसलिए इसकी मनाही की गयी है।''

''इसके बावजूद हमारे रखवालों को यह हक़ नहीं है कि वह किसी को महज़ इसलिए सज़ा दें कि वह बाँसुरी बजा रहा है। क्या जावेद को इस बात का डर नहीं कि अपनी इन कारगुजारियों के लिए उसे नवाब को जवाब देना पड़ सकता है ?''

ख़ान बेगम हँस पड़ीं और बोलीं, ''नवाब ? तुम कैसी बातें कर रही हो मरियम ? नवाब को इन बातों की तरफ़ तवज्जो देने की ज़रूरत क्या है ?''



17

कोठीवाली का आना

13 सितंबर को इतवार था कि सुबह-सुबह परिवार का नाई जावेद ख़ान के लिए कोठीवाली का एक संदेशा लेकर आया, "तुम्हारी चाची तुम्हें सलाम कहती है और उसने कहलवाया है कि वह कल तुम्हारे यहाँ आयेगी।" इसका जावेद ख़ान ने अपना यह जवाब भिजवाया : "यह चाची का अपना घर है। वह ज़रूर आये और यहाँ आकर हमारे घर को रोशन कर दे।" दरअसल इस तरह के संदेशों में अक्सर बहुत ही नरम जुबान का इस्तेमाल किया जाता था।

अगली सुबह कोठीवाली अपनी मैणा में बैठकर आ गयी और साथ में उसके नौकर भी थे। हम उससे मिलकर बहुत खुश हुए क्योंकि उसका सुलूक बहुत अपनापा लिए होता था।

"मरियम, मैं तुम्हें यह कहने आयी थी कि अपना कुछ वक़्त अब मेरे साथ गुज़ारो। मैं मारे जलन के ख़ाक हुई जा रही हूँ क्योंकि तुम इतने ज़्यादा दिन कामरान के घर में रही। जावेद, तुम्हें तो कोई ऐतराज नहीं होगा अगर मैं इन्हें अपने साथ ले जाऊँ ?"

"मेरे लिए एक ही बात है कि वे यहाँ रहती हैं या तुम्हारे साथ चली जाती हैं," जावेद ख़ान ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा।

"ऐसा क्यों ?" कोठीवाली ने शरारत से पूछा। "मैं तो सोच रही थी कि अगर वे तुम्हारी छत के नीचे नहीं रह रही होतीं तो तुम बहुत बेचैन रहते हो ?"

"बेशक, लेकिन इससे फायदा भी क्या?" उसने कहा। "मैं तो लड़की को काबू में करना चाहता था।"

"अच्छा, इस वक़्त तो वह तुम्हारे क़ाबू में है ? क्यों नहीं ?" कोठीवाली ने कहा।

"मेरे सर की क़सम, अब तुम मुझे गुस्सा दिला रही हो !" जावेद ने बुरा मानते हुए कहा। "जहाँ तक मेरे घर में उसका रहना है, वह क़ाबू में ही है लेकिन इससे ज़्यादा क्या कहूँ ? मैं आज ही उससे शादी कर लेता अगर उसकी माँ टाल-मटोल नहीं करती ! कभी कहती है : 'मैंने अपने भाइयों से मशविरा नहीं

किया है'; जैसे कि उसके भाई मशविरा देने के लिए बचे हैं। कभी कहती है, 'दिल्ली की लड़ाई के ख़त्म होने तक इंतज़ार कर लो', जैसे कि लड़ाई ख़त्म होने पर हम जैसे लोगों पर इसका कोई ख़ास असर होगा। यह सोचना सरासर बेवक़ूफ़ी है कि फिरंगियों की जीत होगी। क्या मैंने उन्हें बड़ी तादाद में अपने एक ही सिपाही द्वारा खदेड़े जाते नहीं देखा ?''

''बेशक़, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता,'' कोठीवाली ने कहा।

''वैसे मुझे बड़ी हैरानी है चाची कि तुम इनके मामले में इतनी दरियादिल क्यों हो ?''

''हाँ, उनका सुलूक मेरे लिए हमेशा बेहतर रहा है।'' उसने जवाब दिया। ''जब मेरा खाविंद उनके दुश्मनों द्वारा मार डाला गया था, खुद कलक्टर ने मेरे घर आकर सोग किया था और उसने इस बात का भी पूरा ख़याल रखा था कि हमारे खेत दोबारा न हथिया लिये जायें। बेशक़, यह पुरानी बात है। लेकिन इनके लिए बुरा सोचने की कोई वज़ह मुझे तो दिखायी नहीं देती। वैसे इसका यह मतलब नहीं है कि तुमने जो काम अपने लिए चुना है, मैं उसे छोटा करके देख रही हूँ—मेरा मतलब ख़िलाफ़त से है।''

''ख़िलाफ़त ! तुम इसे ख़िलाफ़त क्यों कहती हो, चाची ?'' जावेद ख़ान बहुत परेशान दिखायी दे रहा था। ''ख़िलाफ़त, किसके ख़िलाफ़ ? फिरंगियों के ख़िलाफ़ ! क्या उन्हें इस मुल्क से बाहर खदेड़ना नहीं चाहिए ? उनसे लड़ना ख़िलाफ़त नहीं, शान की बात है, हाँ बेशक़ !''

''हो सकती है अगर बेक़सूर औरतों और बच्चों का क़त्ल न किया जाये। लेकिन फिरंगी दिल्ली के ख़िलाफ़ कैसे डटे हुए हैं !''

''बहुत हुआ चाची ! अब और कुछ मत कहना, नहीं तो मेरे भीतर का शैतान जाग जायेगा। आनेवाली मुसीबतों के बारे में इमकान लगाने का कोई फ़ायदा नहीं। दिल्ली अब भी अपनी जगह पर है और बहादुरशाह वहाँ राज कर रहे हैं।''

''जो भी हो, मैं तुम्हें यही सलाह दूँगी कि मरियम की बात मानो और जब तक दिल्ली का फ़ैसला नहीं हो जाता, तुम इंतज़ार करो। जावेद, ख़बरदार जो इस लड़की पर बुरी नज़र डाली।''

''बेशक़ कानपुर की लड़की का क़िस्सा सुन लेने के बाद मुझे इस बारे में ख़बरदार रहना ही होगा।''

''ओह ! वह कौन थी ?''

''एक जनरल की बेटी। बीस साल की हो जाने पर भी वह लड़की अब भी खूबसूरत थी। उसे मारकाट से नाना साहिब के एक अंगरक्षक जमादार नरसिंह

ने बचा लिया था। उसे अपनी बीवी बनाने में उसको कोई एतराज नहीं होता। उसकी नीयत, मेरी ही तरह, साफ़ थी लेकिन ज़ेरन्दाज़ ख़ान नाम का एक अफ़सर जमादार के घर से एक रात उस लड़की को ले उड़ा। उसने लड़की के साथ ऐसा बुरा सुलूक किया कि उसके मन में अपनी क़ौम के लिए खुद्दारी का अहसास जाग गया और बदला लेने का जुनून भड़क उठा। कुछ दिनों तक तो वह अपने जज़्बात को दबाये रही लेकिन एक रात जब वह सोया हुआ था तो अपने तकिये के नीचे से उसने अपनी सिरोही[1] निकाली और उसकी छाती में घोंप दी। इसके बाद वह खुद कुएँ में कूद गयी। यह बड़ी दिलेरी का काम था, क्यों चाची ! लेकिन,'' मेरी तरफ़ इशारा करते हुए पर निगाहें दूसरी तरफ़ रखकर उसने कहा, ''मैंने तो इसके चेहरे को अभी ग़ौर से देखा तक नहीं है, यकीन करो !''

''ओह, मक्कार आदमी !'' कोठीवाली ने मज़ाक़ करते हुए कहा।

कुछ देर तक चुप्पी रही। फिर कोठीवाली ने कहा, ''ये मेरे साथ जा सकती हैं न जावेद ! क्यों नहीं ? आज सुबह से ही तुम्हारा मन उखड़ा हुआ है।''

''ओह, हाँ, तुम इन्हें अपने साथ ले जाओ,'' उसने खीज कर कहा। ''अगर ये तुम्हारे साथ रहकर खुशी महसूस करती हैं तो इन्हें अपने साथ ले जाओ।''

हम सब-की-सब कोठीवाली के साथ एक ही मैणा में बैठकर उसके घर पहुँचीं। इसे हवेली कहना शायद ज़्यादा ठीक होगा क्योंकि वह पक्की ईंटों की बनी एक बड़ी इमारत थी जिसका सदर दरवाज़ा बहुत ऊँचा था और लम्बा-चौड़ा आँगन था। सदर ड्योढ़ी के पास ही शीशे से जड़ी छतवाली बैठकें थीं, जिनमें मर्द आराम करते थे। औरतों की कोठियाँ निचली मंज़िल पर ही रहती थीं, जो काफ़ी ठंडी तथा खूब खुली थीं।

उस कुनबे में कोठीवाली, उसकी बेटी और दो बेटे, एक बहू, एक दामाद और ढेरों पोते-पोतियाँ थे। कोठीवाली ज़िले के एक जमींदार की विधवा थी और जब हम उससे मिले थे तो उसकी उम्र लगभग चालीस साल की रही होगी। वह क़द की लंबी थी। आँखें और बाल काले थे, मुँह बड़ा था और छोटे-छोटे दाँत थे, जो मिस्सी तथा पान की वज़ह से काले पड़ गये थे। वह दोनों कलाइयों में चाँदी की एक-एक चूड़ी और दाहिने हाथ की छोटी उँगली में चाँदी के छल्ले के अलावा और कोई गहना नहीं पहनती थी। उसका चेहरा हमेशा मुस्कुराता दीखता और उसका साथ बड़ा दिलचस्प होता था। बिरादरी के सभी लोग उसकी

1. टेढ़ी तलवार

बहुत इज़्ज़त करते थे और मुसीबत पड़ने पर उसकी सलाह लेने उसके पास आया करते थे।

माँ इस घर में बहुत जल्दी लोकप्रिय हो गयी थी। एनेट और मैं भी, लेकिन माँ जितनी नहीं। कोठीवाली हमारा ख़ास ख़याल रखती थी। कभी-कभी वह कहा करती, ''कितनी शांत स्वभाव की लड़कियाँ हैं। ये फ़ालतू की बातों में अपना वक़्त कभी बरबाद नहीं करतीं।''

''इन लड़कियों के कान और नाक क्यों न छिदवा दिये जायें ?'' उसने माँ से एक दिन कहा।

''इसमें भला क्या फ़ायदा, जब कि मेरे पास उन्हें पहनाने के लिए कुछ है ही नहीं,'' माँ ने जवाब दिया।

हमारे कान तो पहले से ही छिदे थे और मैं खुश थी कि मुझे अपनी नाक छिदवाने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ा।

''मुझे खुशी है कि तुमने जावेद की यह बात नहीं मानी कि तुम्हारी बेटी की शादी उसके साथ कर दी जाये,'' कोठीवाली ने कहा। ''अगर वह मेरी बेटी होती तो मैं इसके लिए कभी राज़ी नहीं होती। जावेद बहुत बेताब क़िस्म का आदमी है।''

माँ ने कहा, ''यह बहुत ही बेमेल निकाह होता। मेरा शौहर कभी यह सोच भी नहीं सकता था कि उसकी बेटी को कोई पठान अपनी दूसरी बीवी बनाना चाहता है !''

कोठीवाली का बड़ा बेटा वजीउल्लाह ख़ान उस समय हमारे पास आकर बैठ गया जब हमलोग बातें कर रहे थे। वह एक पच्चीस साल का नौजवान हाफ़िज़ था और अपनी नमाज़ बिला नागा अदा किया करता था। अपने पड़ोस की मस्जिद में अजां भी वही देता था। वह दरम्याने क़द का गोरा-चिट्टा आदमी था और लोगों से उसका सुलूक बेहद पुरसुकून और इज़्ज़तदार हुआ करता था। सदर दरवाज़े के पास की बैठक उसकी मनपसन्द जगह थी और वहाँ वह पढ़ने या शतरंज खेलने में अपना वक़्त बिताता था—एक ऐसा खेल जो अब अपनी लोकप्रियता खोता जा रहा था। वह अपने एक दोस्त कादूदू ख़ान के साथ आया था, जो बहुत ही खूबसूरत जवान था और कोठीवाली को चाची कहकर पुकार रहा था। मेरा ख़याल है कि वह भी उस गिरोह में शामिल था जिसने हमें लाला रामजीमल के मकान से खदेड़ा था। वैसे वह तपेदिक का मरीज़ था और वजीउल्लाह ने कोठीवाली के साथ मिलकर माँ पर बहुत ज़ोर डाला कि वह उसकी बीमारी का कोई इलाज़ बता दे।

''मैं कोई डाक्टर नहीं हूँ,'' माँ ने कहा। ''मैं छोटी-मोटी बीमारियों का ही इलाज़ जानती हूँ। मुझे शक़ है कि मैं इस लड़के की कोई मदद नहीं कर सकती हूँ।''

''नहीं, उसके लिए कुछ करने से मना मत करो,'' वजीउल्लाह ने ज़ोर डाला। ''वह बहुत ही दिलेर आदमी है हालाँकि इसे अपनी बहादुरी के लिए अभी कोई शोहरत नहीं मिली है।''

''इस ग़रीब का मज़ाक़ मत उड़ाओ,'' कोठीवाली ने कहा। ''वह वैसे ही बेहद परेशान नज़र आता है।''

''नहीं, नहीं, मैं माँसी को उसकी बहादुरी का क़िस्सा ज़रूर सुनाना चाहूँगा और बाद में इसकी हालत सुधारने के लिए किसी इलाज़ की बाबत पूछूँगा।''

काद्‌दू ख़ान अब और भी पस्त हो गया और उसने अपना खूबसूरत चेहरा मारे शरम के नीचे झुका लिया।

''तो क़िस्से की शुरूआत यूँ है माँसी कि इस शख़्स ने नवाब कादिर अली को तमाम क्रिश्चियन क़ब्रों को खोद कर ख़ज़ाना निकालने की सलाह दी थी।''

काद्‌दू ख़ान ने मुँह ऊपर किया और कहा, ''मुझे यही यक़ीन दिलवाया गया था और जिस मक्कार ने मुझे यह जानकारी दी थी, उसने भी यही कहा था कि जब कोई फिरंगी मरता है तो उसके साथ रुपयों की दो थैलियाँ भी दफ़न की जाती हैं।''

''तुमने इस बकवास को सच मान लिया और उनकी हड्डियाँ खोदने में जुट गये ? ख़ैर, यह बताओ कि तुम्हारे हाथ कौन-सा ख़ज़ाना लगा।''

''हमने रात को यह खुदाई शुरू की,'' काद्‌दू ख़ान ने कहा। उसने सोचा कि वह अगर खुद ही क़िस्सा बयान करे तो अच्छा रहेगा। ''वह चाँदनी रात थी। हम कुल तीन लोग थे। मैंने क़ब्र में उतरने और जो कुछ भी कीमती दिखायी दे, उसे ऊपर ले आने के लिए हामी भर दी। अपने साथियों से तालमेल बनाये रखने के लिए हमने ऊपर एक खूँटा ठोंका और उसमें एक रस्सा बाँध दिया। इसी रस्से के सहारे मैं नीचे उतरा। लेकिन मेरी उस ख़ौफ़नाक हालत के बारे में सोचकर देखो कि ज़मीन पर आकर टिकने के बजाय मैं बीच में ही लटक गया ! अपनी घबड़ाहट के मारे मेरे मुँह से चीख़ निकल गयी। मेरे साथियों ने मेरी मदद करने के बजाय यह सोचा कि फिरंगी रूहें हमारे पीछे पड़ गयी हैं और मुझे वहीं लटकता छोड़ वे सरपट वहाँ से भाग गये।''

''तुम इसी लायक़ थे,'' वजीउल्लाह ने फिकरा कसा। ''लेकिन यह तो बताओ कि तुम इससे आज़ाद कैसे हुए।''

"मैं रस्से से लटका हुआ था और बड़ी कोशिशों के बाद ऊपर किनारे तक पहुँच पाया। अब मैंने भी अपने बहादुर साथियों के नक्शे क़दम पर चलते हुए वहाँ से भागने का फ़ैसला किया। लेकिन जैसे ही मैं भागा, मुझे कमर में ज़ोर का झटका लगा और मैं नीचे गिर पड़ा। मैंने दोबारा खड़े होकर भागने की कोशिश की तो मैं फिर से गिर पड़ा। मारे डर के मैं अधमरा हो गया। मैंने आख़िरी बार कोशिश की तो खूँटी बाहर आ गयी और मैं अपने पाँव सर पर रखकर भाग लिया। चाची, वह क़ब्र फिरंगी रूहों के क़ाबू में थी !"

"तुम कैसी मोटी अक्ल के आदमी हो !" वजीउल्लाह ने कहा और उसके तमाम बयानों का मज़ा भी उठाता रहा। "हर कोई यही सोचेगा कि तुम्हारी इन भौंहों के नीचे कुछ अक्ल भी होगी। कादूदू, तुम्हारा अपना कमरबंद खूँटी के साथ ही ठुक गया था। जब तुम क़ब्र में उतरे थे तो इसी वज़ह से अधर में लटक गये थे और जब तुमने भागने की कोशिश की थी तो उसी से फँसे होने की वज़ह गिर पड़े थे। जब तुमने खूँटा उखाड़ फेंका, तभी तुम्हारा कमरबंद उससे आज़ाद हुआ था।"

कोठीवाली और हम सभी कादूदू ख़ान की मुसीबत भरी दास्तान पर खूब हँसे।

कोठीवाली ने कहा, "तुम्हें इससे सबक़ लेना चाहिए। दरअसल मरने के बाद सब लोग एक जैसे होते हैं। जब तुम मर जाओगे तो क्या तुम चाहोगे कि ख़ज़ाने के लालच में कोई तुम्हारी मिट्टी के साथ छेड़खानी करे ? ख़ज़ाने की भली कही ! जब राजा मरता है तो वह भी ख़ाली हाथ ही जाता है। जब कोई बच्चा पैदा होता है तो बंद मुट्ठी लेकर इस दुनिया में आता है और वही हाथ मौत के समय खुला होता है। न तो हम इस दुनिया में कुछ लेकर आते हैं और न ही कुछ लेकर जाते हैं।"

इस बीच कादूदू ख़ान की अम्मा और बहन भी वहाँ आ गयी थीं और अपने हाथ जोड़कर उन्होंने माँ से गुज़ारिश की कि इस नौजवान के लिए वह ज़रूर कुछ करे।

दरअसल उन्होंने माँ के जादुई इलाज़ के बारे में बहुत ऊँचा सोच रखा था। कादूदू को माँ ने इतना ही कहा था कि वह हर छह घंटे बाद 'खख्सीर' चाय पिए और मिर्च-मसाले और खटाई वाला खाना न खाये। माँ ने उसे रोज़ सुबह ताज़ा नारियल चबाने और उसका रस पीने के लिए भी कहा था। कादूदू ख़ान ने यह सीधा-सादा इलाज़ किया और हमने सुना था कि बाद में उसकी हालत में काफ़ी सुधार हो गया।

18

दिल्ली की हार

हम बरामदे में कोठीवाली के पास बैठे हुए थे कि मर्दों की बैठक में हमें कुछ हंगामा होने की आवाज़ें सुनायी दीं। जावेद ख़ान उठकर सरफराज़ ख़ान के कान में फुसफुसाया। तब सरफराज़ वहाँ से फ़ौरन उठकर कोठीवाली के पास चला आया और उसके कान में भी उसने कुछ फुसफुसाहट की। जैसे ही वह गया, कोठीवाली ने माँ की तरफ़ मुँह कर कहा, ''अरी, मरियम, दिल्ली पर फिरंगियों का क़ब्ज़ा हो गया है। न जाने इसकी वज़ह से अब क्या-क्या तब्दीलियाँ हों...''

इस ख़बर से हमारे दिलों में खुशी की लहर दौड़ गयी थी और हमारी आँखों में आँसू छलक आये थे। हमारे लिए ब्रिटिश जीत का मतलब था इस क़ैद और मुसीबत से छुटकारा; लेकिन शाहजहाँपुर से दिल्ली बहुत दूर थी और हमने अपने मन के भाव प्रकट नहीं होने दिये।

इसके बदले माँ ने कोठीवाली का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, ''तुम्हें भी इस ख़बर से सुकून मिले, पठानी !''

''जावेद ख़ान अब बहुत छोटा लगने लगेगा, क्यों नहीं ?'' कोठीवाली ने खुशी से कहा। ज़ाहिर था कि इस ख़बर ने उसे बिल्कुल परेशान नहीं किया था; वह लोगों के बारे में सोच रही थी, न कि किन्हीं के मज़हब के बारे में। ''लेकिन उसके परेशान होने की कई वज़हें हैं। फिरंगी इस शहर से खूब बदला लेंगे।''

अगले दिन मर्दों में आपस में काफ़ी देर तक बातचीत हुई। कुछ लोगों ने यहाँ से भाग जाने की बात कही तो औरों ने कहा कि बेहतर यही होगा कि हम इंतज़ार करें और देखें कि आगे क्या कुछ घटता है····

सरफराज़ ख़ान ने कहा, ''बेशक़ दिल्ली को फिरंगियों ने जीत लिया है लेकिन हमारे इस छोटे शहर को दोबारा कब्ज़े में लेने में उन्हें वक़्त लगेगा। हमारे सिपाही, जो दिल्ली से खदेड़ दिये गये हैं, अब किसी और अहम जगह पर मोर्चा

ले लेंगे—शायद लखनऊ में। इसलिए कोई फिरंगी सिपाही शाहजहाँपुर में शायद हमें महीनों बाद ही दिखाई दे। वैसे यहाँ से भागने की मत सोचो। हाँ, यह बात अलग है कि बदले की आग में सुलगती फ़ौज अगर सामने से आती दिखाई दे रही हो तो...''

जावेद ने जोड़ा, ''ठीक है, बिल्कुल ठीक है भाई ! मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया जो मैं डर महसूस करूँ। क्यों, मैंने ऐसा कुछ किया है क्या ? अब्दुल रऊफ़ जैसों की बात और है कि फिरंगियों की फ़ौज में रहकर भी उन्होंने सिपाहियों के साथ मिलकर गदर किया। उसे ज़रूर फाँसी पर चढ़ा दिया जायेगा। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने फिरंगियों का कभी नमक नहीं खाया। लेकिन अगर मुसीबत आन पड़ती है तो मैं सरहद पार कर नेपाल चला जाऊँगा या फिर ग्वालियर की फ़ौज में भर्ती हो जाऊँगा।''

सरफ़राज़ ने कहा, ''ओह, बेशक़ तुम ऐसा ही करोगे। जब डरने की कोई बात नहीं तो शहर छोड़ कर जाने की ज़रूरत ही क्या है ?''

हाफ़िज़उल्लाह बोला, ''मैं अपने उन कुछ आदमियों से मिला हूँ जो दिल्ली से लौटे हैं। इनकी किस्मत अच्छी थी कि वे बच निकले। फ़ौजी पोशाक के नाम पर उनके बदन पर सिर्फ़ चीथड़े थे।''

''क्या उन्होंने दिल्ली की लड़ाई के बारे में भी कुछ बताया ?'' सरफराज़ ने पूछा।

''उन्होंने बताया कि हमारी फ़ौज अंग्रेज़ी टुकड़ियों पर हावी नहीं हो सकी थी। कई बार धावे बोले और आख़िरी धावे के वक़्त, शहर को घेरे जाने के कुछ दिन पहले, हमारी फ़ौज ने बड़ी बहादुरी दिखायी थी। लेकिन हमारी फ़ौज को पीछे धकेल दिया गया था और हमारा एक-एक फ़ौजी कट मरा था। फिरंगियों की फ़ौज के भी बहुत आदमी मरे थे लेकिन जीत ने उनके हौसले बहुत बुलंद कर दिये थे। जब उनकी आगे बढ़ती फ़ौज शहर की चारदीवारी के पास पहुँची और उसने कश्मीरी दरवाज़े को खुलवा दिया तो उनका नेता निकॅल्सन एक ऊँची जगह पर खड़ा होकर अपनी तलवार पर रूमाल बाँधकर उसे हिलाता हुआ देखा गया था। तभी एक गोला उसे आकर लगा और वह नीचे गिर पड़ा। लेकिन उसकी फ़ौज बंदूक़ों की नोक पर शहर के अंदर घुसती चली गयी और दिल्ली अब फिर से फिरंगियों के कब्जे में है।''

''और बादशाह का क्या हुआ ?'' सरफ़राज ने पूछा।

''उसे क़ैदी बना लिया गया था और उसके लड़के, जो उसके साथ ही भागे थे, गोली से उड़ा दिये गये थे।''

"तो गदर का नतीज़ा यह निकला," सरफराज़ ख़ान ने दार्शनिक जैसी मुद्रा में कहा। "दिल्ली शहर फूलों का बाग़ था और अब यह खँडहर बन गया है; परदेशी न तो मेरा दुश्मन है और न ही मेरा दोस्त है..."

"सरफराज़, सनकी और शायर बनने की क़तई ज़रूरत नहीं," जावेद ख़ान ने खीझते हुए कहा। "मेरे घर कुछ लोगों को मारने के लिए कौन आया था ?"

"मैं आया था," सरफराज़ ने बताया और सवाल किया, "लेकिन क्या मैंने किसी का क़त्ल किया था ?"



19

परदे के पीछे

सर्दियों का मौसम था हालाँकि अभी ठंडी हवाएँ चलनी शुरू नहीं हुई थीं। जलते घर से माँ गहनों का जो बक्सा उठा लायी थी, उसमें से चाँदी के दो चम्मच उसने बेच दिये। इससे जो रुपये मिले उससे सर्दी से बचाव के लिए रजाइयाँ तथा कुछ गर्म कपड़े बनाने में ख़र्च किये गये।

जबसे हमने दिल्ली की हार की ख़बर सुनी थी, हमारे नज़रिये और उम्मीदों में फ़र्क़ आ गया था। हम उस दिन का इंतज़ार करने लगे थे, जब शाहजहाँपुर फिर से अंग्रेजों के कब्जे में होगा। इसका मतलब यह होगा कि हमें इस क़ैद से छुटकारा मिलेगा। यह बात अलग है कि कोठीवाली, कामरान और उसके घर में रहना खुशगवार रहा था लेकिन हमें हमेशा वहीं नहीं रहना था। अब हमें अपनी माँ और पिता के परिवारों के बाक़ी बचे सदस्यों से मिलने की उम्मीद होने लगी थी और लगा कि जावेद ख़ान की मुझसे शादी करने की कोशिशों पर भी पानी फिर जायेगा। अंग्रेज़ों के फिर से हुकूमत में आने की वज़ह एकदम ज़ाती थी। पिछले कुछ महीनों में विदेशी हुकूमत के ख़िलाफ़ भड़के जुनून को भी हमें समझने का मौक़ा मिला था और हमने महसूस किया था कि विदेशी हुकूमत का जारी रहना दोनों तरफ़ के लोगों के लिए मुसीबत पैदा करनेवाली बात होगी; फ़िलहाल हमारी भलाई इसी में थी कि विदेशी हुकूमत फिर से क़ायम हो जाये। हमारी ज़िन्दगी इसी बात पर टिकी थी।

पर अभी तक तो ब्रिटिश फ़ौज के वहाँ आने का कोई संकेत नहीं था। हमें यक़ीन था कि जल्द या देर यह वहाँ पहुँचेगी ज़रूर लेकिन हमने इस बारे में कभी कोई बातचीत नहीं की और न यह हमारे हक़ में था कि इन घटनाओं के लिए हम ख़ास दिलचस्पी दिखायें। कोठीवाली की दयानतदारी से हम इतमीनान में थे लेकिन हम जावेद ख़ान को लेकर डरे हुए थे कि कहीं अपनी हार और शर्मिन्दगी में वह हमें कोई नुक़सान न पहुँचा दे।

मोहल्ले की जमादारिन बीमार पड़ गयी तो एक दिन उसने किसी और लड़की को काम पर भेजा। नयी लड़की हमें देखते ही पहचान गयी और उसके और माँ के बीच हुए आँखों के इशारे से उन दोनों में एक ख़ास तरह की समझदारी पैदा हो गयी। मुझे याद है कि वह मुलिया पुकारी जाती थी और यह उस लड़की की बड़ी बहन थी जिसके साथ मैं अपने बचपन में खेला करती थी।

पाख़ाना ही एक ऐसी जगह थी, जहाँ हम हर तरह की राज़दारी बरत सकते थे और जब मुलिया परदे की तरफ़ गयी तो माँ भी पीछे-पीछे हो ली।

"मौसी, तुम्हें अब और फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं," मुलिया ने फुसफुसा कर कहा। "दिल्ली जीत ली गयी है और तुम्हारे लोगबाग जल्दी ही यहाँ फिर से पहुँच रहे होंगे। तुम्हारा भाई भरतपुर में बिल्कुल ठीक है। अगर तुम उसे कोई संदेशा भिजवाना चाहती हो तो एक आदमी तीर्थयात्रा पर मथुरा जा रहा है। वह तुम्हारी चिट्ठी ले जायेगा।"

माँ एक ऐसे शख़्स से मिलकर, जिसे वह पहले से जानती थी और उस पर यक़ीन किया जा सकता था, बेहद खुश थी। माँ ने का फ़ायदा उठाने का फ़ैसला किया।

"लेकिन मैं अपनी चिट्ठी लिखूँगी किससे ?" उसने पूछा।

"फ़िक्र मत करो," मुलिया ने कहा। "मैं कल काग़ज़ और पेंसिल ले आऊँगी। मुझे यहीं मिलना।"

इस मुबारक मुलाक़ात की ख़बर हमने किसी को भी नहीं लगने दी और न ही किसी ने हमारे सुलूक में कोई ख़ास बात देखी। हमने एनेट या नानी को भी इस बारे में कुछ नहीं बताया, इस डर से कि कहीं हमारी उम्मीदों पर पानी न फिर जाये।

अगले दिन मुलिया अपने वायदे के मुताबिक आयी और परदे के पीछे माँ का इंतज़ार करने लगी। उसने माँ को काग़ज़ का एक टुकड़ा तथा छोटी-सी पेंसिल दे दी। उस काग़ज़ पर माँ ने यह इबारत लिख दी : "मैं, रूथ, एनेट और माँ ज़िंदा हैं और ठीक हैं। हम यहाँ छिपे हैं। हमें यहाँ से जल्द ले जाने का कोई मुनासिब उपाय करो।"

यह रुक्का उसने मुलिया को दे दिया, जो उसने अपनी चोली में ठूँस लिया। मुलिया तब वहाँ से खिसक गयी और हमें एक अजीब और बेचैन कर देनेवाली हरारत के हवाले कर गई।



शुरू जनवरी के दिन थे और कोठीवाली के यहाँ रहते हमें तीन महीने बीत चुके थे। हमने कभी किसी चीज की माँग नहीं की थी, फिर भी, हमारे साथ बहुत ही भलमनसाहत भरा सुलूक किया जाता रहा था। हमें तब बहुत निराशा हुई, जब हमसे जावेद ख़ान के यहाँ वापिस लौटने के लिए कहा गया। वह खुद आया था और उसने कोठीवाली से हमें ले जाने की इज़ाज़त माँगी थी। उसे अब भी उम्मीद थी कि माँ शायद मेरी शादी के लिए हामी भर देगी। अंग्रेज़ों द्वारा दिल्ली को जीते महीनों बीत गये थे लेकिन शाहजहाँपुर में अंग्रेज़ सैनिकों के पहुँचने का कोई संकेत नहीं था।

ख़ान बेगम हमारी वापसी से खुश नहीं हुई और वह अब भी मारे जलन के जल-भुन रही थी। लगता है उसके और जावेद के बीच ज़रूर काफ़ी कहा-सुनी हुई थी क्योंकि हमारे आने की अगली सुबह ही हमने जावेद को गुस्से में उससे यह कहते सुना था : "मुझे तुम्हारी रोज़ की इस किच-किच से नफ़रत होने लगी है।"

उसने उसे कुछ जवाब दिया था तो हमें जावेद के कोड़े की सड़ाक की आवाज़ सुनायी दी थी और इसके बाद सब ख़ामोश हो गया था।

वह बिना किसी से बात किये घर से बाहर चला गया और शाम को खाने के वक़्त ही लौटा। उसने ख़ान बेगम से पूछा कि उसने कुछ खाया या नहीं ?

उसने जवाब दिया : "नहीं, मुझे भूख नहीं है।"

"ठीक है। यहाँ बैठो और कुछ खाओ," उसने कहा, "और ये नखरे दिखाना भी बंद करो।" वह जानती थी कि उसे बहुत गुस्सा चढ़ा हुआ है और वह कोड़े की मार से भी बचना चाहती थी। इसलिए उसने वही किया, जो उससे कहा गया था। वह तब तक गुमसुम तथा कटी-कटी रही, जब तक कि कोठीवाली हमें दोबारा वहाँ से ले नहीं गयी।

20

बिचपुरी की लड़ाई

सन् 1858 के मध्य अप्रैल के दिन थे। गर्मी का मौसम शुरू हो गया था और गर्म हवा के साथ धूल के बगूले भी कोठीवाली के बरामदे का चक्कर लगा जाते थे। घर के बाहर खड़ा गुलमोहर लाल-लाल फूलों से लदा था।

मंजरियों से लदे पेड़ आम की अच्छी फ़सल का दिलासा दे रहे थे। जावेद ख़ान का इन दिनों कोठीवाली के यहाँ आना-जाना काफ़ी बढ़ गया था। उसके और कोठीवाली के बीच गुप-चुप बातें होती रहती थीं। अगर अंग्रेज़ शाहजहाँपुर पर फिर से कब्जा कर लेते हैं, तब इन लोगों की अगली तैयारियों में हमारा क्या कुछ होगा, इस बात का हमें बिल्कुल अंदाज़ नहीं था।

एक दिन कोठीवाली के यहाँ एक ऐसा आदमी आया जो हमारे लिए अजनबी था और जिसे हमने पहले कभी देखा नहीं था। उसका नाम फ़ैज़उल्ला था। वह भी कोठीवाली को चाची कह रहा था हालाँकि उसको कोई रिश्तेदारी नहीं थी। वह एक जल्दबाज़ क़िस्म का नौजवान था और फ़तेहगढ़ से जुड़े हादसों का बड़े खुलासे के साथ तमाम वाकया पेश कर रहा था, जहाँ से वह अभी-अभी लौटा था।

"तो तुम बिचपुरी की लड़ाई के वक़्त वहीं थे ?" कोठीवाली ने पूछा।

"हाँ चाची," उसने जवाब दिया, "और लड़ाई भी कितनी ख़तरनाक थी। हम फिरंगियों से आमने-सामने की लड़ाई लड़ रहे थे। मैंने अंग्रेज़ों को काट-काट कर ढेर लगा दिया था और नवाब को तोहफ़े में देने के लिए उनके सिरों की एक माला भी अपने साथ ले आया था।"

"कैसे झूठे हो तुम !" कोठीवाली ने हैरानी से कहा।

"मैं अपने सिर की क़सम खाता हूँ चाची !"

"तुम्हारे जैसा दुबला-पुतला आदमी सिरों की माला भला कैसे उठा पाया होगा ?"

"क्यों नहीं, मैंने इन्हें अपने घोड़े की काठी पर लटका लिया था और जीत

की ख़ुशी के साथ घर लौट आया था।''

''और इस लड़ाई में किस पर सबसे बुरी बीती थी ?''

''वाह चाची, काफ़िरों के सिवा और कौन हो सकता है ? हमने उनके छक्के छुड़ा दिये थे,'' उसने अपनी दाहिनी हथेली को बायीं हथेली पर ज़ोर से मारा।

''क्या वाक़ई !'' कोठीवाली ने कहा।

''उनका एक आदमी नहीं बचा था चाची, और तुम्हें मालूम है कि उन्होंने क्या किया ? उन्होंने अपनी औरतों को हमसे लड़ने के लिए भेज दिया !''

''वाह, यह क़िस्सा तो और भी ज़्यादा दिलचस्प होता लगता है,'' कोठीवाली ने कहा। ''तुम बहुत अक्लमंद लड़के हो फ़ैज़उल्ला—यह तुम्हारी हवाई उड़ान का कमाल है ! अच्छा, यह बताओ कि उनकी औरतें देखने में कैसी थीं ?''

''औरतों के लिहाज़ से वे कुछ ज़्यादा ही तगड़ी थीं। कुछ ने नक़ली मूँछे और दाढ़ी लगायी हुई थी। लेकिन हर किसी ने ऊँचा घाघरा सा डाल रखा था और हरेक के आगे धातु का एक चक्का लटक रहा था।'' (अचानक मुझे महसूस हुआ कि फ़ैज़उल्ला स्कॉटलैंड की हाईलैंडर्स रेज़ीमेंट का बखान कर रहा था।) यक़ीन मानिये, वे बड़ी बदसूरत औरतें थीं। और, उनसे लड़ने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था। मैंने औरतों के ख़िलाफ़ हाथ नहीं उठाया था और भरे मन से छावनी छोड़ चला आया था।''

''तुमने बिल्कुल ठीक किया,'' कोठीवाली ने कहा। ''लेकिन तुम हमें क्या एक भी फिरंगी सिर नहीं दिखाओगे जो तुम अपने साथ लाये थे ?''

''मुझे तो ख़ुशी ही होती चाची, लेकिन मेरा यक़ीन करो कि मैंने सिरों की पूरी माला नवाब साहब को तोहफ़े में दे दी है।''

यह अन्दाज़ लगाकर कि जीतनेवाली फ़ौज के साथ रहने की बजाय फ़ैज़उल्ला घर में ज़्यादा हिफ़ाज़त में दिखायी दे रहा था, हमें यक़ीन हो गया था कि फ़तेहगढ़ में अंग्रेज़ों ने इस फ़ौज को शिकस्त दे दी है और शाहजहाँपुर तक आने में अब उन्हें कोई ख़ास देर नहीं लगेगी। उसी समय सरफ़राज़ ख़ान के अचानक वहाँ पहुँचने पर हमारी हैरानी दुगुनी हो गयी थी। उसने फ़ैज़उल्ला की तरफ़ हिकारत भरी निगाहों से देखते हुए कहा, ''तो यह बहादुर सिपाही तुम्हें फिरंगियों के सिर काटने के बारे में बता रहा था ! क्या इसने तुम्हें बताया कि निज़ाम अली ख़ान का सिर किसने काटा था ?''

इस ख़बर से सभी को साँप सूँघ गया और कोठीवाली अपनी जगह से उचककर बोली, ''निज़ाम अली की मौत हो गयी है ! कहीं तुम्हारा मतलब यह तो नहीं है ?''

शायद निज़ाम अली ख़ान ही नवाब का सबसे अहम, संज़ीदा और इज़्ज़तदार अफ़सर था। एक बार हमें उसके घर में किराये पर रहने का मौक़ा मिला था। वह हमें हमेशा शराफ़त और दोस्ताना अंदाज़ से बात करनेवाला इन्सान लगा था।

"हाँ, मेरा यही मतलब था, सरफ़राज ने कहा। "इस डींग हाँकनेवाले लफंगे की बजाय मुझे यह ख़बर पक्के तौर पर मालूम है। निज़ाम अली के घर में मातम छाया हुआ है। उसके दोनों लड़के भी ज़ख़्मी हुए हैं—एक का सिर जख़्मी है तो दूसरे की टाँग ज़ख़्मी हुई है।"

फ़ैज़उल्ला अपने को इस तरह पकड़े जाते देख ज़मीन पर नज़रें गड़ाये बैठा रहा और उसके हाथ, जो थोड़ी देर पहले बंदूक़ की पट्टी से खेल रहे थे, अब उनमें कोई हरकत बाक़ी नहीं रही थी।

"नवाब ने निज़ाम अली की देखरेख में भारी-भरकम फ़ौज इस हुक्म के साथ भेजी थी कि फिरंगी फ़ौज को गंगा पार न करने दी जाये। लेकिन हमारी फ़ौज सुस्त तथा बेढंगी थी। दुश्मन की फ़ौज अपना पता लगने से पहले ही हमारे शहर की तरफ़ दो दिन की दूरी तय कर चुकी थी। फिरंगी टुकड़ियाँ अपनी छावनी में अभी पहुँची ही थीं कि उन्हें दूर आसमान में धूल लड़ती नज़र आयी। उनके जासूसों ने आकर ख़बर दी कि नवाब की फ़ौज उन्हीं की तरफ़ बढ़ रही है। दुश्मन ने तब अपनी घुड़सवार फ़ौज को फिर से मैदान में जाने तथा लड़ने के लिए कहा। फिरंगी फ़ौज ने नवाबी फ़ौज के सँभलने से पहले ही उस पर हमला बोल दिया और तोपों की गोलाबारी से फ़ौज के एक हिस्से को पीछे धकेल दिया। अचानक हुए इस हमले से हमारी फ़ौज के पाँव उखड़ गये। घबड़ाहट में हमारी फ़ौज बिखर गयी और वहाँ से भागने लगी।"

"और निज़ाम अली पर क्या बीती ?" कोठीवाली ने बेसब्री से पूछा।

"उसने ललकारते हुए अपनी फ़ौज को वहाँ डटे रहने और दुश्मन से लड़ने के लिए कहा। लेकिन उसकी ये कोशिशें बेकार रहीं। वह अपने आदमियों को रोकने में कामयाब नहीं रहा। उसका तोपख़ाना भी गोलाबारी नहीं कर सका क्योंकि भगोड़े सैनिक मैदान में एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ आ-जा रहे थे। अपनी यह बदनामी झेल न पाने के कारण वह अपने घोड़े से नीचे उतर गया और एक नौकर से अपने जिस्म में तलवार भोंक देने की गुज़ारिश की लेकिन नौकर ने ऐसा नहीं किया। तब निज़ाम अली पागलों की तरह वहाँ घूमने लगा और एक तोप के मुँह पर अपना सिर रखकर उसने तोपची को बारूद को आग दिखाने के लिए कहा ताकि उसके टुकड़े-टुकड़े हो जायें। बेचारा निज़ाम अली ! वह अपनी कटार से खुद को मारने ही जा रहा था कि फिरंगी घुड़सवार सेना गड़गड़ाती

हुई तूफ़ान की तरह वहाँ बड़ी तेज़ी से आ पहुँची और सामने पड़नेवाली हर रुकावट को उड़ा ले गयी। डी केंटज़ो हॉर्स पलटन के एक सवार ने तभी उसे पहचान लिया—निज़ाम अली की ख़ास पहचान की अनदेखी कर पाना मुमकिन नहीं था—और वह सवार चक्कर लगाते हुए उसके सामने आ गया और अपने भाले से उसे बींधकर नीचे गिरा दिया। इस तरह उस आदमी की ज़िन्दगी का ख़ात्मा हुआ जिसमें नवाबी शानो शौकत अब्दुल रऊफ़ ख़ान के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा मजबूत और पक्के इरादे वाली थी। निज़ाम अली के चले जाने के बाद मुझे शक़ होता है कि नवाब की सरकार एक हफ़्ता भी चल पायेगी।"

"मुझे उसके ऐसे ख़ात्मे के बारे में सुनकर बहुत दुख हो रहा है," कोठीवाली ने लंबी साँस भरते हुए कहा। "लेकिन उसके लड़कों का क्या हुआ ? तुम कह रहे थे कि उसके दो लड़के ज़ख़्मी हो गये थे।"

"अच्छा होता कि वे भी अपने नेक बाप के साथ वहीं मर-खप जाते। वहाँ मची भगदड़ के बाद वे दोनों भी लड़ाई के मैदान से हमारे दोस्त फ़ैज़उल्ला की तरह इस तेज़ी से भाग खड़े हुए थे जितनी तेज़ी से उनके घोड़े भाग सकते थे। मैं उन्हें अभी-अभी रोते-कलपते और एक बूढ़ी औरत की तरह अपनी किस्मत को कोसते हुए देखकर आ रहा हूँ।"

"तुम बहुत ही ख़तरनाक ख़बर लेकर आये हो," कोठीवाली ने कहा। "अगर मैं ग़लत नहीं हूँ तो फिरंगी फ़ौज जल्द ही यहाँ पहुँच जायेगी। हमलोगों का तब क्या होगा ?"

"फ़ौज इसी तरफ़ बढ़ रही है, यह पक्की बात है," सरफराज़ ने कहा। "इसमें शक़ नहीं कि शहर पर उनका फिर से कब्जा हो जायेगा। हमें अपनी हिफ़ाजत के बारे में सोचना चाहिए क्योंकि यहाँ पहुँचते ही वे शहर को लूटने का हुक्म देंगे। ऐसा ही उन्होंने दिल्ली में किया था। अब तो हर जगह यही कुछ हो रहा है।"

"अल्लाह ख़ैर करे !" कोठीवाली ने रोते हुए कहा। "आज शाम सभी मेरे घर में जमा होंगे और अपनी सलामती के तरीक़ों के बारे में सोच-विचार करेंगे। इसमें बिल्कुल वक़्त ख़राब नहीं करना है क्योंकि कल तक फिरंगी फ़ौज हर हालत में ज़िले में आन पहुँचेगी और एक दिन बाद इस शहर में होगी।"

इस तरह कोठीवाली, जो गदर के कई ख़तरनाक मौक़ों पर हमेशा ख़ामोश रही थी, अब एक नेता की तरह उठ खड़ी हुई थी। वह इन शरारती और हुड़दंगी लोगों को इस तरह हुक्म दे रही थी, जैसे कि वे बच्चे हों। उसने अपनी इस पहल से सबको एकसाथ जोड़ लिया था, जबकि वहाँ ख़ौफ़ फैलने की पूरी गुंजाइश थी।

21

एक और पलायन

उस शाम कोठीवाली ने माँ से कहा, "मरियम, फिरंगी आ रहे हैं। मुझे तसल्ली है कि तुम मेरे पास हो। अगर हमें शहर छोड़कर भागना ही पड़ा तो तुम भी हमारे साथ रहोगी। है न !"

"हाँ," माँ ने जवाब दिया, "क्योंकि उन्हें कैसे पता चलेगा कि हम कौन हैं ? उन लोगों में हमारी पहचान का ऐसा कोई आदमी नहीं है, जो हमारी अगुवानी में खड़ा होकर हमारी हिफ़ाज़त करेगा। हमारे रंग और पहनावे से वे हमें मुसलमान औरतें ही समझेंगे और हमारे साथ वही सुलूक होगा जैसे कि तुम्हारी औरतों के साथ। बेशक़, फ़िलहाल हम तुम लोगों में से ही जाने जाते हैं और हम भी वहीं जायेंगे, जहाँ तुम लोग जाओगे।"

कोठीवाली ने यह फ़ैसला कर लिया था कि वह और उसका परिवार शाहजहाँपुर छोड़कर भाग जायेंगे। तब हर किसी ने हामी भर दी थी कि सभी के लिए इकट्ठा होने की जगह जावेद ख़ान का घर होगा। उसी दिन शाम को हम उसके घर के लिए रवाना हो गये थे। वहाँ कोठीवाली का कुनबा था; कामरान का परिवार था; एक डाक्टर और उसका परिवार था, जिसे हमने पहले कभी नहीं देखा था। जावेद और उसके घरवालों के साथ 28 अप्रैल 1858 की उस शाम को वहाँ क़रीब तीस लोग जमा हो गये थे। जिस दिन हम अपना जलता हुआ मकान छोड़कर चले आये थे, यह बात क़रीब-क़रीब उसके एक साल बाद की है। जल्दी ही अब जावेद ख़ान का घर भी धू-धू कर जलने लगेगा—ऐसा सोचने का कोई तुक तो नहीं था लेकिन मेरा ख़याल है कि लड़ाई का आम लोगों के लिए इससे ज़्यादा कोई मतलब होता भी नहीं।

उस रात सोने का सवाल ही नहीं उठता था क्योंकि एक के बाद एक मैणा आती रही थी और सारी रात फुसफुसाहटों के बीच सलाह-मशविरा होता रहा था। फ़ैसला यह हुआ था कि हम सभी लोग उत्तर की तरफ़ भाग जायेंगे

क्योंकि अंग्रेज़ सेना दक्खिन की तरफ़ से आगे बढ़ रही थी। इस तरह 29 अप्रैल की सुबह, सूरज उगने से पहले ही मैणा भरने शुरू हो गये थे।

हम अपने लिए किसी मैणा में जगह मिलने की उम्मीद लगाये थे। जल्दी ही सारे मैणा भर गये और हमारे लिए किसी में भी जगह नहीं बची।

जावेद ख़ान ने हमारे पास आकर कहा, "मरियम, अच्छा होगा कि तुम डाक्टर की बैलगाड़ी में बैठ जाओ। तुम्हें वहाँ काफ़ी आराम रहेगा।"

हमारे पास कोई दूसरा चारा भी न था; इस तरह हम चारों—नानी, माँ, एनेट और मैं—गाड़ी में बैठ गये। हमारे पास ही डाक्टर की बीवी, सलहजें और उनके बच्चे बैठे थे। यह लश्कर फ़ौरन चल पड़ा। आगे-आगे अपने घोड़ों पर मर्द लोग थे, जबकि मैणा उठानेवाले जल्दी-जल्दी डग भरते जा रहे थे और हमारी बैलगाड़ी रह-रहकर पीछे लुढ़कती हुई आगे बढ़ती जा रही थी।

क़रीब दो घंटे के बाद हम शाहजहाँपुर से आठ मील दूर के एक गाँव इंदरसा पहुँचे। सूरज चढ़ आया था और जब हमने गाड़ी के ऊपर तने कपड़े को हटाया तो हमें बहुत अचंभा हुआ कि हम अकेले थे क्योंकि एक भी मैणा या घुड़सवार वहाँ नहीं थे। ऐसा लगता था कि गाड़ीवान ने कोई घुमावदार रास्ता ले लिया था और हमलोग पीछे छूट गये थे। इस तरह हम अजनबियों के साथ एक अनजान गाँव में आन पहुँचे थे।

डाक्टर ने किसी ख़ाली मकान के बारे में पूछा जहाँ हम आराम कर सकें लेकिन वहाँ कोई मकान ख़ाली न था। गाँव के लोगों को हमारी परेशानियों से कुछ लेना-देना नहीं था—उन्होंने कहा कि हम गाँव में नहीं ठहर सकते। लेकिन डाक्टर ने बड़े हौसले से काम लिया और उन्हें यह समझाने की कोशिश करने लगा कि हमें वहाँ ठहराना उनका फ़र्ज़ बनता है—हम भले ही कोई भी हों। आख़िरकार गाँववालों ने उसे समझाया : "गाँव में सचमुच कोई घर ख़ाली नहीं है लेकिन एक काम तो आप कर ही सकते हैं। गाँव के दक्षिणी छोर पर, छतनार बरगद के सामने, एक नया घर बन रहा है। यह अभी पूरा नहीं बना है लेकिन उसमें रहा जा सकता है। आप लोग उसी घर में चले जायें और आराम से कुछ दिन वहाँ गुज़ारें।" सो हम लोग खुशी-खुशी अपनी गाड़ी से नीचे उतरे और उस कच्चे घर के अंदर घुसे। इस घर में एक तरफ़ कई कमरे थे, आगे आँगन था और चारों तरफ़ दीवारें थीं।

एक तरह से हम डाक्टर तथा उसकी बीवी के मेहमान थे और वे भी हमारे मामले में बड़े दयालु थे। डाक्टर एक बंगाली मुसलमान था और शाहजहाँपुर रेजिमेंट में भर्ती था। लेकिन पहली जून 1857 को जब यह रेजिमेंट बरेली की

तरफ़ बढ़ी तो उसने अपना रिश्ता इससे तोड लिया था। वह शहर में एक मकान किराये पर लेकर रहने लगा था और बहुत जल्द ही यह मशहूर हो गया कि उसके हाथ में बहुत शफ़ा है। इसलिए उसकी प्रैक्टिस चल निकली थी।

डाक्टर की सलहजें इस समय रसोई बनाने में जुटी थीं। एक ने चूल्हे में आग सुलगाई और उस पर दाल रख दी, जबकि दूसरी ने आटा गूँदकर चपातियाँ बनानी शुरू कर दीं।

उस शाम, जब सबने भोजन कर लिया, डाक्टर अंदर आकर बैठ गया और उसने बड़े आदर के साथ माँ को अपने बारे में बताने के लिए कहा। माँ ने अपनी कहानी कह सुनायी जिससे उसके मन में हमदर्दी और दया उमड़ आयी।

''क्या तुम समझते हो,'' माँ ने पूछा, ''कि अंग्रेज़ों का राज फिर से आ जायेगा ?''

''मैं बहुत दूर की बात तो नहीं जानता,'' उसने जवाब दिया, ''लेकिन उनका राज फिर से होगा ज़रूर। मैं फ़िलहाल यह कहना चाहता हूँ कि तुम अब हमारे पास हो, इसलिए आराम से रहो और जिस चीज़ की भी ज़रूरत हो, मुझे ज़रूर बताओ। अभी तो हम सभी एक ही नाव में हैं। इसलिए हमें एक-दूसरे की ज़्यादा से ज़्यादा मदद करनी चाहिए।''

माँ उसकी नेकनीयत से बहुत मुतास्सिर हुई और हमलोग उस रात और अगले दिन भी उस परिवार के साथ ही रहे। सूरज ढलने के काफ़ी बाद जब सब कुछ शांत हो चुका था और बरगद पर चहचहाते पक्षी चुप हो चुके थे, डाक्टर माँ के पास आया और उसने कहा, ''जावेद ख़ान आया है और वह तुमसे बात करना चाहता है।''

''वह क्यों आया है ?'' माँ ने पूछा। ''अब उसका हमसे क्या वास्ता है ?''

''वह तुम्हें मिलने को बहुत उतावला है,'' डाक्टर ने कहा। ''वह अंदर नहीं आ सकता लेकिन तुम चाहो तो दरवाज़े के पास जाकर उससे बात कर सकती हो।''

माँ जावेद ख़ान से मिलने के लिए बाहर गयी तो मैं भी यह जानने को कि पता नहीं क्या बात हो, उसके पीछे हो ली और दीवार की आड़ में खड़ी हो गयी।

''मरियम,'' जावेद ने कहा, ''मैं तुम्हें यह कहने आया हूँ कि फिरंगियों ने शाहजहाँपुर पर फिर से कब्जा कर लिया है। तुम बेशक़ उनके पास लौट जाओगी लेकिन मैंने तुम्हें कभी पनाह दी थी—उसके बारे में नहीं भूलना।''

"मैं उसे नहीं भूलूँगी," माँ ने कहा। "मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि तुमने हमें पनाह दी। मैं कोठीवाली और कामरान की हमदर्दी को भी कभी नहीं भूलूँगी।"

"मेरी तुमसे सिर्फ़ एक गुज़ारिश है," जावेद ने बेचैन होकर अपना बोझ एक पाँव से दूसरे पाँव पर डालते हुए कहा।

"हाँ, वह क्या है ?" माँ ने पूछा।

"मैं जानता हूँ कि अब वह वक़्त बीत चुका जब मैं तुम्हें अपनी बेटी की शादी मुझसे करने के लिए कहूँ," उसने कहा। "अब इस बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता। लेकिन यहाँ से जाने से पहले क्या तुम मुझे उसे एक बार देखने की इज़ाज़त दोगी ?"

"इससे क्या फ़ायदा होगा ?" माँ ने पूछा; लेकिन पता नहीं, भीतर की किस चाह से मैं आगे सरक कर रोशनी में आ गयी और जावेद ख़ान के सामने खड़ी हो गयी।

वह चुप रहकर मुझे क़रीब एक मिनट तक घूरता रहा और यह पहली बार थी जब मैंने भी अपनी आँखें उस पर से नहीं हटायीं थीं। इसके बाद बिना मुस्कुराये या एक भी शब्द बोले बिना वह मुड़ा और अपने घोड़े पर सवार हो रात के अंधेरे में ग़ायब हो गया।



22

पड़ाव

डाक्टर ने अगली सुबह माँ से कहा, ''मैंने सुना है कि अंग्रेज़ी फ़ौज कल शाहजहाँपुर में दाख़िल हो गयी थी और वहाँ नागरिक प्रशासन भी लागू कर दिया गया है। सब कुछ आम दिनों जैसा हो चुका है, इसलिए तुम क्या वहाँ नहीं जाना चाहोगी ?''

''अच्छा सुझाव है,'' माँ ने कहा, ''लेकिन हमारी पहचान के लोग वहाँ कौन-कौन हैं ?''

डाक्टर ने कहा, ''तुम अपनी आवाज़, लहज़े और सुलूक के नाते फ़ौरन पहचान ली जाओगी और हो सकता है कि तुम्हारा कोई अपना रिश्तेदार वहाँ तुम्हारी तलाश में हो।''

डाक्टर तब गाँव के बुजुर्गों के पास गया और उन्हें बताया कि माँ असल में यूरोपीय महिला है और मार-काट के वक़्त उसे वहाँ से भागना पड़ा था। अब वह शाहजहाँपुर वापिस जाना चाहती है। वहाँ सिविल फ़रमानियाँ लागू हो चुकी हैं। क्या आपमें से कोई उसे अपनी गाड़ी में शहर ले जायेगा ?

''तुम हमें कोई अनोखी बात नहीं बता रहे हो जो हम पहले से न जानते हों,'' गाँव के मुखिया ने कहा। ''जैसे ही ये तुम्हारी बैलगाड़ी से नीचे उतरी थीं, हमें पता चल गया था कि वे कौन हैं।''

''तुम लोगों को कैसे पता चला,'' डाक्टर ने पूछा।

''क्या तुम मुझे बौड़म समझते हो,'' बूढ़े ने कहा। ''उनकी चाल-ढाल बता रही थी कि वे कौन हैं। मेरी नज़र उनकी टाँगों की तरफ़ ख़ासतौर पर गयी थी। मैंने मन-ही-मन में सोचा कि नंगे पैर चलनेवाली औरतों की तरह उनके पैर नहीं हैं। गरम रेत पर पाँव रखते समय उन्होंने जिस तरह मुँह बनाया था, वह मेरी बात का सबूत था। तो अब ये शाहजहाँपुर वापिस जाना चाहती हैं, क्या सचमुच ऐसा है ? ख़ैर, मैं, गंगाराम, इन्हें अपनी बैलगाड़ी में ले जाऊँगा और शाहजहाँपुर में जहाँ ये चाहेंगी, वहाँ छोड़ आऊँगा। कल सुबह मैं तैयार रहूँगा।''

हमने अपना जो थोड़ा-बहुत सामान था, उसे ठीक किया और अगले दिन सुबह दस बजे के क़रीब गंगाराम की बैलगाड़ी में शाहजहाँपुर के लिए चल दिये।

रास्ते में कोई दुर्घटना नहीं हुई थी। हम दोपहर के बाद शहर पहुँच गये थे और गंगाराम को हमने अपने पुराने घर की तरफ़ चलने के लिए कहा क्योंकि हम नहीं जानते थे कि इसके अलावा और किस जगह हम जा सकते हैं। जैसे ही हम अपने पुराने खँडहर मकान के आगे रुके, मिस्टर रैडमेन आ पहुँचे और उन्होंने संक्षेप में अपने बचने तथा ख़ुद के परिवार के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि अंग्रेज कमांडर-इन-चीफ़ ने ज़िले को फिर से कब्जे में ले लिया है लेकिन वह बरेली की तरफ़ आगे बढ़ गया है। वह शाहजहाँपुर की हिफ़ाजत के लिए कर्नल हाल की देखरेख में यहाँ फ़ौज की एक टुकड़ी छोड़ गया है। उसने कहा कि शहर अभी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है क्योंकि ज़िले की पूर्वी सीमा अब भी फ़ैज़ाबाद के मौलवी के शिकंजे में है। उसने हमें उन्हीं क्वाटरों में पनाह लेने की सलाह दी, जहाँ वह अपने परिवार के साथ रह रहा था। माँ को उसकी दावत क़बूल करने में हिचक हो रही थी लेकिन हम भी बेघर थे किसी मर्द की देखरेख से मरहूम थे, इसलिए हम रात उसी इमारत में रुके, जहाँ रैडमेन ने पनाह ली हुई थी। यहीं हमें वे तीन आदमी भी मिले जिन्हें मेरे मामा ने हम लोगों को भरतपुर लिवा लाने के लिए भेजा था। उनमें से एक घुड़सवार अर्दली नसीम ख़ान था और बाक़ी दोनों भरतपुर महाराजा के सेवक थे। तभी हमें पता चला कि मुलिया के जरिये हमने जो रुक्का भेजा था, वह मेरे मामा को सचमुच मिल गया था और उसने हमारे बचाव के लिए फ़ौरन पहल की थी। माँ अपने भाई की जानी-पहचानी लिखावट देखकर रो दी थी। साथ ही वह उसका ख़त भी पढ़ती जा रही थी जिसमें हमारे लिए ढेरों प्यार था और हमारी ख़ैर के लिए गहरी बेचैनी और तड़प ज़ाहिर की गयी थी। इस ख़त में हमें भरतपुर आने का न्यौता भी दिया गया था और माँ के लिए यह भी लिखा था कि वह बाक़ी की ज़िन्दगी वहीं गुज़ार सकती है।

यह रविवार, 3 मई 1858 की बात है। अगली सुबह पीलू की माँ को अपनी तरफ़ आते हुए देखा तो हमें बड़ी हैरानी हुई। उसके साथ पीलू नहीं था। वह इतनी परेशान दिखायी दे रही थी कि हमें यक़ीन हो गया कि पीलू मारा गया है, लेकिन जब वह बातचीत करने की हालत में आयी तो हमें पता चला कि पीलू ने अपनी मर्जी से वहीं रह जाने का फ़ैसला कर लिया था ! उसे मंगल

ख़ान से इतना ज़्यादा प्यार हो गया था कि उसने आने से मना कर दिया और उसकी माँ उसके बिना ही वापिस चल दी थी—इस उम्मीद के साथ कि उसकी चाह में वह पीछे-पीछे चला आयेगा। पर उसने ऐसा नहीं किया। उसे पठान के साथ रहना भा गया था और वह उस परिवार के साथ वहीं रह गया। हम उसके इस रवैये को कभी समझ नहीं सके।

जब हम पीलू की माँ को दुखभरी कहानी सुन रहे थे, तभी मिस्टर रैडमेन कर्नल हाल के खेमे से वापिस लौटे और उन्होंने हम सभी को नाश्ते के लिए दावत दी। हमने अभी थोड़ा-सा ही खाया था कि ख़तरे की सूचना दी गयी—फ़ैज़ाबाद के मौलवी की बाग़ी सेना नावों के पुल से खन्नौत नदी पार कर रही थी। मेरे मामा का आदमी नसीम ख़ान अपने घोड़े को नहलाने के लिए नदी की तरफ़ गया हुआ था। वह भी उसी समय सरपट वापिस लौटा था, इस ख़बर के साथ कि कर्नल की मुट्ठी भर सेना को दुश्मन की फ़ौज ने पीछे धकेल दिया है और कर्नल ने अब पुरानी जेल में डेरा डाला है। हमारे चारों ओर बारूदी गोलाबारी की गंध फैली हुई थी। बिगुलों की आवाज़, घोड़ों की हिनहिनाहट, जीनों की खड़खड़ाहट, मैदान में हो रही हलचल, तोपों की गड़गड़ाहट और सभी दिशाओं में भागते लोगों का शोर—इन सभी चीज़ें से ज़ाहिर था कि अंग्रेज़ फ़ौज की छोटी टुकड़ी पर किसी बड़ी फ़ौज ने धावा बोल दिया है।

अगर खुद को बचाना है तो हमें वक़्त गँवाना नहीं चाहिए। गंगाराम की बैलगाड़ी अभी वहीं थी। हालाँकि रैडमेन ने माँ को भरोसा दिलाया था कि ख़तरे की कोई बात नहीं है लेकिन माँ ने देहाती इलाके की तरफ़ जाने का फ़ैसला कर लिया था क्योंकि उसे वहाँ ज़्यादा सुरक्षा दिखायी दे रही थी। हम सभी बैलगाड़ी में सवार हो गये थे—नानी, माँ, मैं, एनेट, पीलू की माँ और रैडमेन की लड़की विकी। अभी हम आँगन के दरवाजे से बाहर निकले ही थे कि हमें चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनायी पड़ीं। धूल के गुबार के साथ विद्रोही सेना के दस या बारह घुड़सवारों ने हमारी बैलगाड़ी को घेर लिया था। उनके हाथों में तलवारें चमक रही थीं। हमने उनमें से एक को यह कहते हुए सुना : "उनमें से कुछ यहाँ हैं। इन सभी को क़त्ल कर देना चाहिए !" हम इसी बदहवासी में थे कि किसी भी घड़ी गाड़ी के परदे को फाड़कर उनकी चमकती तलवारें हमारे सीने में उतर जायेंगी। छोटी-सी विकी ने अपनी गर्दन को दोनों हाथों से पकड़ा हुआ था और वह कह रही थी : "हम सभी को अपने हाथ अपनी-अपनी गर्दनों के गिर्द लपेट लेने चाहिए ताकि हमारी सिर्फ़ उँगलियाँ ही कटें और सर सलामत रहें।"

माँ के अलावा बाकी सभी लोग घबरा गये थे। उसके गोलक आँखों में से बाहर निकलते दिखायी दे रहे थे। महीनों के दुख और भाग-दौड़ ने उसके चेहरे पर उदासी की रेखाएँ खींच दी थीं। उसने अपने चाकू का दस्ता मुट्ठी में थामा और दूसरे हाथ से चादर हटाकर अपना सिर बाहर निकाल लिया। उसके चेहरे के भाव इन बदमाशों तक को डराने के लिए काफ़ी थे, जो हमारे खून के प्यासे बने हुए थे। वे फ़ौरन वहाँ से पीछे हट गये।

"अरे जवानो, तुम हमलोगों से क्या चाहते हो ?" माँ ने कहा। "हम बेसहारा औरतों का अपनी इज्ज़त और ज़िंदगी को बचाने के लिए शहर से भागना क्या कोई गुनाह है ?"

वे इसके बाद की कोई बात सुनने के लिए नहीं रुके। हमें उन्होंने शहर से भागनेवाली मुसलमान औरतें ही समझा। वे लौटकर नसीम ख़ान के पास जा पहुँचे, जो हमारे पीछे-पीछे घोड़े पर आ रहा था। लेकिन उसने भी मौके की नज़ाकत देखते हुए अक्लमन्दी से काम लिया और उन्हें बताया कि वह भी इस्लाम का सिपाही है और बैलगाड़ी में जानेवाली औरतें उसकी रिश्तेदार हैं। चूँकि शहर पर फ़िरंगियों ने कब्जा कर लिया है, इसलिए वे कहीं दूर जा रहे हैं।

घुड़सवारों के चले जाने के बाद गंगाराम बैलगाड़ी से नीचे उतर आया और उसने हाथ जोड़कर माँ से निवेदन किया : "बहुत खूब ! तुम देह से ज़रूर कमज़ोर हो लेकिन तुममें किसी देवी की-सी ताकत है ! मैं ऐसी किसी भी औरत को नहीं जानता, जो इन घुड़सवारों से इतनी अच्छी तरह निपट लेती।"

हमारा ज़ोखिम भरा सफ़र यहीं ख़त्म नहीं हो गया। अभी हमने दोबारा चलना शुरू ही किया था कि हमारी बैलगाड़ी ज़ोरदार आवाज़ के साथ एक तरफ़ को लुढ़क गयी। बैलगाड़ी की धुरी टूट गयी थी। इसे फ़ौरन ठीक कर लेने की कोई गुंजाइश नहीं थी। हमें हर हालत में आगे बढ़ते रहना होगा ताकि हम दुश्मनों की किसी और टुकड़ी के हाथों न पड़ जायें। गोलों के दग़ने और फटने, बंदूकों के चलने और सिपाहियों की चिल्लाहट हमें साफ़-साफ़ सुनायी दे रही थी। हमलोग बैलगाड़ी से नीचे उतर आये तथा गंगाराम को अलविदा कहकर पैदल चलने लगे। हमें इस बात का बिल्कुल अंदाज़ नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं लेकिन लड़ाई की वज़ह से हम हर हालत में दूर से दूर चले जाना चाहते थे। सूरज की झुलसाहट में क़रीब एक घंटे तक चलते रहने के दौरान हमें सदर रास्ते पर सामान से लदी कई गाड़ियाँ दिखायी दीं। ये सभी ब्रिटिश सेना की गाड़ियाँ थीं और हमारी ही तरह बरेली की तरफ़ जा रही थीं। इनमें से एक सिख सिपाही की हम पर नज़र

पड़ी और उसे हम पर तरस आ गया। माँ को तेज़ बुख़ार आ गया था और वह बार-बार हम पर यही ज़ोर डाल रही थी कि उसे वहीं सड़क के किनारे छोड़कर हम आगे किसी सुरक्षित स्थान के लिए बढ़ते रहें। नसीम ख़ान घोड़े से नीचे उतर गया और उसने माँ को उस पर बैठाया। वह माँ को सहारा देते हुए पैदल चल रहा था। इसी मौक़े पर एक और हादसा हो गया।

जब नसीम ख़ान घोड़े से नीचे उतर रहा था तो उसकी पिस्तौल की गोली चल गयी। इससे हम फिर बुरी तरह सहम गये थे।

नसीम ख़ान खुद हैरान था और उसने कई बार मुड़कर देखा। अचानक उसकी समझ में आया कि माजरा क्या है! "ओह, मैं भी कितना बेवक़ूफ़ हूँ!" उसने हैरान होते हुए कहा। "जब मौलवी के सिपाही हमें मिले थे तो मैंने इसका घोड़ा दबा लिया था। लेकिन यह पिस्तौल तो हमेशा की तरह तब चलती है, जब दुश्मन दिखायी न दे रहा हो!"

सिख सिपाही ने ठहाका लगाया और हम भी उसकी हँसी में शामिल हो गये हालाँकि हमारी हँसी में भी घबड़ाहट थी। इन सिख सैनिकों ने हमें एक गाड़ी में बैठने के लिए कहा। एनेट, विकी और मैं खुशी-खुशी गाड़ी में बैठ गयीं क्योंकि हम थककर चकनाचूर हो गयी थीं।

इस तरह हमने तीन या चार मील का सफ़र तय किया होगा कि हम एक गाँव के पास पहुँचे, जहाँ हमें ठहरने के लिए जगह दी गयी। दोपहर हो चुकी थी और धूप से बचने के लिए सामान की गाड़ियों में कोई इंतज़ाम नहीं था, इसलिए गाँववालों की आवभगत का हमने बड़ी खुशी से स्वागत किया।

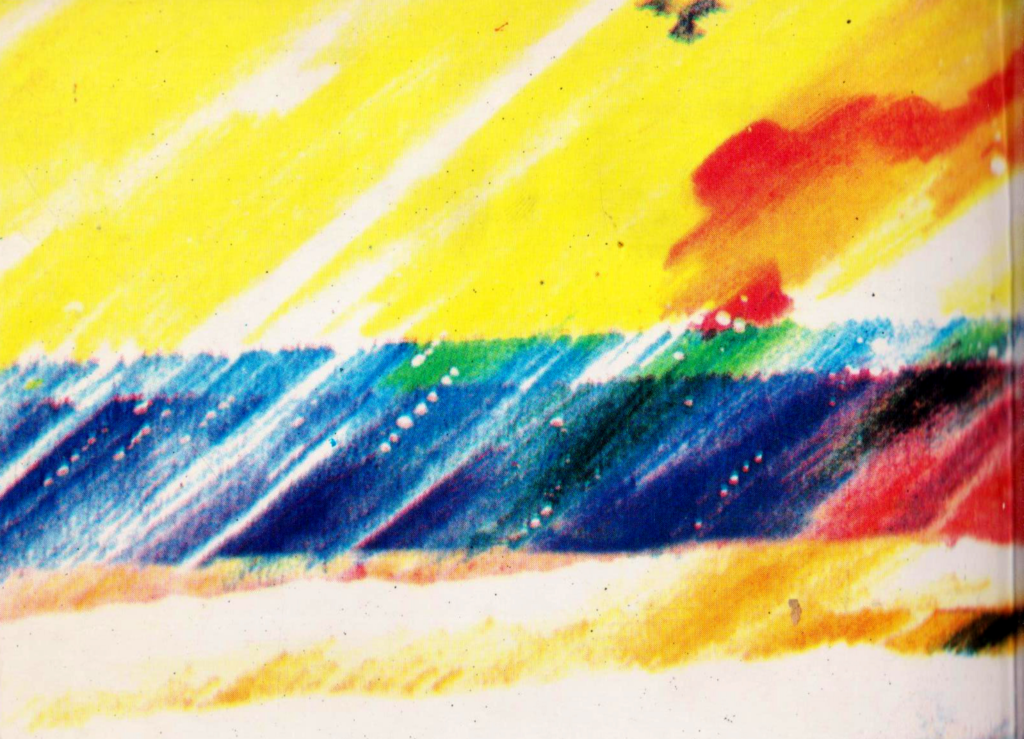
दो दिन बाद हमने एक बैलगाड़ी किराये पर ले ली और हम दक्खिन की की ओर चल पड़े। राजमार्ग से बचते-बचते चार दिन बाद हम फ़तेहगढ़ पहुँच गये। यहाँ हम रैडमेन की पार्टी में शामिल हो गये। माँ कलक्टर से मिली तो उसने राह-ख़र्च के लिए कुछ रुपये दिये। इससे भरतपुर तक का हमारा सफ़र आसान हो गया।

दस दिन बाद मेरे मामा के घर सभी पहुँच गये थे। यहाँ हमें भरपूर आराम, सुकून और सुख मिल रहा था। तभी एक दिन वहाँ अचानक यह ख़बर फैल गयी कि दुश्मन की फ़ौज इस इलाके से गुज़रनेवाली है; इससे हम एक बार फिर बुरी तरह सहम गये थे। लेकिन यह अफ़वाह भर ही थी! पिछले एक साल में हमने जो दुख झेले थे, उसका असर मेरे दिमाग़ पर बहुत गहरा था और मुझे अक्सर आनेवाले बुरे सपने में चर्च में नंगी तलवार भाँजते हुए ख़ौफ़नाक सिपाही नज़र आते थे जो अपने रास्ते में पड़नेवाले हर शख़्स को काट फेंकते थे। बहरहाल,

भरतपुर पहुँच जाने के बाद हमारी तकलीफें दूर हो चुकी थीं और हम सुख-चैन से अपना जीवन बसर कर रहे थे। यह बात अलग है कि पिता के बिना यह ज़िन्दगी पहले जैसी नहीं थी।

हमें बाद में लाला रामजीमल और उसके परिवार के बारे में कभी कोई ख़बर नहीं मिली। हम उसकी हमदर्दी के लिए शुक्रिया अदा करना चाहते थे और यह भी कि उसने हमारी हिफ़ाज़त की ख़ातिर अपना जीवन तक ख़तरे में डाल लिया था। हमें यह तो पता चला था कि अपने परिवार के साथ वह बरेली में बस गया है, पर इसके अलावा हमें उसकी कभी कोई ख़बर नहीं मिली।

हमें यह भी पता चला था कि आम हालात होने पर कोठीवाली, कामरान और उनके परिवार शाहजहाँपुर वापिस लौट आये थे। लेकिन जावेद ख़ान ग़ायब हो जाने के बाद कभी दिखायी नहीं दिया था। शायद वह नेपाल भाग गया था। इस बात की उम्मीद कहीं ज़्यादा थी कि दूसरे बाग़ियों के साथ वह भी पकड़ लिया गया हो और उसे फाँसी लगा दी गयी हो। मन-ही-मन तो मैं भी यही मनाती रहती थी कि वह भागने में कामयाब रहा हो। उन महीनों को याद कर, जब हम उसके क़ैदी थे, मेरे जी में उसके लिए तारीफ़ का भाव ही पैदा होता था। वह जंगली और सिरफिरा था, कभी-कभी वह बहुत ज़ालिम भी हो जाता था लेकिन वह खूबसूरत और बहुत बहादुर भी था। उसमें एक ख़ास तरह की तर्बियत थी जिसे वह बड़ी खूबसूरती से छिपाये रखता था। मैं शायद उसको पसंद करती रही थी क्योंकि उसका मानना था कि मैं खूबसूरत हूँ।





ISBN 81-7201-806-1

9788172018061

मूल्यः 30 रुपये

www.sahitya-akademi.gov.in